प्रकाशकीय

प्रस्तुत उपन्यास कन्नड भाषा के रानी चन्नम्मा नामक उपन्यास का हिन्दी-रूपान्तर है। इसका मूल कथानक ऐतिहासिक है। [illegible] की रानी चेन्नम्मा इतिहास की एक दुर्लभ पात्र थी और उस वीरांगना के [illegible] जीवन का वृत्तांत झासी की रानी लक्ष्मीबाई का स्मरण दिलाता है। इसका त्याग, बलिदान तथा उत्सर्ग बताता है कि स्वतंत्रता का मूल्य प्राणों से भी बढ़कर होता है और वही जीवन धन्य होता है, जो [illegible] काम आता है।

इस उपन्यास की पृष्ठभूमि दक्षिण की है। इसमें वर्णित [illegible] की जानकारी पाठको के लिए लाभदायक होगी।

१. इस पुस्तक मे जिस रानी चेन्नम्मा की कथा है, वह लिंगायत धर्म की अनुयायिनी थी। यह धर्म कर्नाटक मे प्रचलित है। उसके मानने वाले शिवलिंग के उपासक है। वे वीरशैव भी कहलाते है और चादी की एक डिबिया में शिवलिंग बद करके यज्ञोपवीत की तरह धागे मे बाधकर धारण करते है। लिंगायत-धर्म के अनुसार सब लोग शिवलिंग धारण कर सकते हैं और उनमे जात-पात का कोई भेद-भाव नही माना जाता, किन्तु भारत के बौद्ध, जैन, आर्यसमाजी, सिख आदि की भाति वे भी एक अलग जाति बन गये है। शैव धर्म में उनका प्रमुख स्थान है और काठमाडू (नेपाल) के प्रसिद्ध पशुपतिनाथ के मदिर का प्रमुख पुजारी कर्नाटक का लिंगायत ही होता है।

२ दक्षिण भारत में स्त्रियो के नाम के बाद 'अम्मा' जोडने का रिवाज है। वहा स्त्रियो और लडकियो को भी आदरार्थ 'अम्मा' कहकर पुकारते है। उत्तर कर्नाटक में अम्मा का एक रूप 'अव्वा' भी पाया जाता है।

३ दक्षिण मे 'साहब' या 'साव' मुसलमानो के नाम के आगे जोडते है, यहातक कि वहा 'साव' शब्द मुसलमान-वाचक हो गया है। प्रस्तुत कथा में इसी प्रकार सैदनसाहब प्रयुक्त हुआ है।

४ दक्षिण प्रदेश में 'देसाई' अथवा 'देशमुख' देशाधिपति—राजा, शासक—के अर्थ मे और उनकी उपाधि के रूप में प्रयुक्त होता है। इस प्रकार कित्तूराधिपति देसाई कहलाते थे।

५ दक्षिण में व्यक्ति के नाम के आगे उपनाम जोडने की प्रथा है। ये उपनाम प्राय उनके कुल के मूल ग्राम के नाम पर होते हैं।

हमारी उपन्यास-माला का यह तीसरा उपन्यास है। इस माला में हम भारत की सभी प्रमुख भाषाओ के चुने हुए एक-एक उपन्यास का हिन्दी अनुवाद प्रस्तुत करेंगे। बगला, गुजराती, मलयाली आदि भाषाओ के उपन्यासो के अनुवाद हो रहे हैं और वे शीघ्र ही पाठको के हाथो में पहुचेंगे।

हिन्दी में इस प्रकार का विधिवत् प्रयत्न शायद पहली बार हो रहा है। आशा है, भारतीय साहित्य की इन अमूल्य निधियो को पाठको का स्नेह और आदर प्राप्त होगा और वे इनके प्रसार में योग देंगे।

इसका अनुवाद श्री सिद्धगोपालजी ने किया है।

—मंत्री

दो शब्द

कन्नड साहित्य में ऐतिहासिक उपन्यासो का बडा अभाव है। [illegible] खड्गनाथ तथा वी० वेंकटाचार्य ने इस दिशा में कुछ कार्य किया है। इसे आगे वढाने की आवश्यकता है। ज्यो-ज्यो ऐतिहासिक उपन्यासो का निर्माण होगा, उनकी कला के नये-नये पहलू सामने आवेगे।

ऐतिहासिक उपन्यास और इतिहास में क्या सवध है, इस विषय में मतभेद है। कुछ लोगो का मानना है कि उपन्यास की कथा-वस्तु को निश्चित इतिहास के घटना-क्रम का अविकल रूप से अनुसरण करते हुए होना चाहिए। इसके विरुद्ध कुछ लोगो का कहना है कि इतिहास शास्त्र है और उपन्यास कला कृति है। शास्त्र पर कला का कुन्दन करते समय उपन्यासकार को कुछ आजादी से चलने का अधिकार है। हा, उनको उपन्यास के मूल ध्येय के विरुद्ध अपनी कल्पना का विकास नही करना चाहिए। इन दोनो मतो पर विद्वानो को विस्तार से चर्चा करनी चाहिए।

कित्तूर की रानी के विषय में जव मै यह उपन्यास लिखने वैठा तो मेरे सामने अनेक कठिनाइया आई। भारत के इतिहास की प्राचीनता को दृष्टि में रखते हुए रानी चेन्नम्मा का काल वहुत पुराना नही है, फिर भी उनके विपय में वहुत कम ऐतिहासिक सामग्री मिलती है। कित्तूर का पतन होने के वाद अग्रेज राजमहलो को लूटकर वहा का रुपया-पैसा और जवाहरात इग्लैण्ड ले गये और रानी चेन्नम्मा के सवध के कागज-पत्र, सनदें, इतिहास-कथा आदि भी सव वही पहुच गये। इनमें से कुछ कागज ब्रिटिश म्यूजियम में सुरक्षित है। अग्रेजो के ले जाये हुए इन कागज-पत्रो में से कुछ, जिनमें अग्रेजो की अनीति का उल्लेख था, नष्ट कर दिये गए। ब्रिटिश म्यूजियम में विद्यमान साहित्य भी उपयोग के लिए सुलभ नही है। वैलहोंगल नगर के एक व्यापारी श्री मूगि भावेप्पाजी के पास इस

सवध के कुछ कागज-पत्र है । वैलहोगल में स्थापित 'कित्तूर चेन्नम्मा रानी ऐतिहासिक मडल' नामक सस्था ने कुछ कागज-पत्र, उस समय के अस्त्र-शस्त्र और वस्त्र सग्रह करके रक्खे है। इन सवकी छान-वीन करने पर भी मेरी समस्याओ का समाधान नही हो सका । उदाहरणार्थ कित्तूर का किला अग्रेजो के हाथ मे आने के वाद जव रानी चेन्नम्मा गुप्तद्वार से भागने का प्रयत्न कर रही थी तो वह पकडी गई। उसके विपय में कुछ लोगो का कहना है कि उसने मलापछारी नदी में कूदकर प्राण त्याग दिये । कुछ लोगो का यह भी कहना है कि वह वैलहोगल में अग्रेजो की कैद मे रही और रायण्णा के वलिदान के वाद स्वर्गवासिनी हुई । इन मतो में तुलना करने पर मुझे जो अधिक सगत प्रतीत हुआ उसीका मैंने उल्लेख किया है । ऐतिहासिक घटनाओ का सवध जोडने के लिए मैंने कुछ पात्रो की कल्पना भी की है। चेन्नम्मा, गुरुसिद्दप्पा, मल्लसर्ज, शिवलिंग-रुद्रसर्ज, रुद्रव्वा, वीरव्वा, शिवलिंगव्वा, महान्तव्वा, वालासाहव, मल्लप्पाशेट्टी, वेंकटराय, थैकरे, मनरो, चैपलिन, स्टीवेंसन, इलियट, जेम्सन स्पिलर, पामर, मैकलियड, वाकर, ट्रूमैन, शिववसप्पा, रायण्णा, वालण्णा, विच्चुगत्ती, गजवीर, आदि ऐतिहासिक पात्र है। उनके साथ ही-साथ चिदम्वर दीक्षित, सदाशिव शास्त्री, नागरकट्टी, शिवकुमार, कैपटन हैरिस, तुलजम्मा, पद्‌मावती, कलावती, वालप्पा पण्डित इत्यादि पात्रो की मैंने अपनी कल्पना से सृप्टि की है। इतिहास की घटनाओ का विस्तार करके उनके ही आधार पर मैंने शेप वातो को स्पप्ट किया है। अत यह उपन्यास एक ओर इतिहास की घटना को लेकर चला है, तो दूसरी ओर कला की दृप्टि भी गौण नही हो पाई है।

कित्तूर की आजादी की लडाई किसी जाति अथवा सम्प्रदाय विशेप की लडाई नही थी। सम्पूर्ण कित्तूर ने सगठित होकर उसमें भाग लिया था। जाति और धर्म की भावनाओ से परे होकर, केवल राष्ट्रकल्याण को लक्ष्य वनाकर मैंने कित्तूर के स्वातन्त्र्य-सग्राम के रूप, लक्षण, भावना-वेश और त्याग-वृत्ति को चित्रित किया है। भारत के स्वतत्र होने के

वाद भारतीयो की राष्ट्रीयता विकसित होकर प्रौढ़ता को प्राप्त करने से पहले ही अनेक विदेशी राजनैतिक विचार-धाराएं भारत के जन-मन पर अपना प्रभाव डाल रही हैं। इस संक्रान्ति-काल में भारतीयों का मन राष्ट्र तथा उसके कल्याण की ओर आकर्षित करने के लिए कित्तूर की रानी के अमर जीवनादर्श से बढ़कर और क्या वस्तु हो सकती है!

तीन वर्ष हुए मेरा 'कित्तूर की रानी चेन्नम्मा' नामक नाटक, कन्नड़ से हिन्दी में अनुवादित होकर आकाशवाणी से प्रसारित हुआ था। बाद में मूल कन्नड मे भी प्रसारित हुआ। मुझे बड़ी प्रसन्नता है कि [illegible] उस वीरागना का दिव्य चरित विस्तार से लिखने का [illegible] तीन वर्ष वाद अव पूर्ण हुई। यदि यह कृति पाठकों का [illegible] प्राचीन गौरव की ओर थोड़ा भी आकर्षित कर सकी तो मैं [illegible] को सफल समझूंगा।

'अन्नपूर्णा'
विश्वेश्वरपुर,
बंगलौर

—अ० न० कृष्णराव

कित्तूर की रानी

: १ :

एक कन्धे पर झोली और दूसरे पर वीणा [illegible] एक ब्राह्मण चला जा रहा था। धूप मे पैदल चलने मे [illegible]। उसका चेहरा मरझा गया था। सिर मे पैरतक [illegible] भरा था। वह भूत-सा दिखाई देता था। उसकी उग्र [illegible] होती थी। सिर के बाल प्राय उड गये थे। सिर्फ बीच मे [illegible] थे।

ब्राह्मण की पसलिया स्पष्ट दिखाई दे रही थी, फिर भी उसके शरीर में तावे की सी चमक थी। उसकी धोती, चादर और यज्ञोपवीत सब पर धूल की परत जम गई थी।

ब्राह्मण ग्राम से आकर पीपल के वृक्ष के नीचे बने चबूतरे के निकट पहुचा और अपने कन्धो से भार उतारकर सुस्ताने लगा। चबूतरे पर चार-पाच निठल्ले लोग बैठे थे। उनमे से एक ने कुतूहल-वश उनसे पूछा, "आप कहाके रहने वाले है ?"

"श्रीरगपट्टण का।"

"टीपू सुलतान की राजधानी श्रीरगपट्टण के ?"

"जी हा, वहीका।"

"अब कहा जा रहे है ?"

"येल्लव्वा की पहाडी।"

"क्या इतनी दूर पैदल ही जायगे ?"

"हा, पैदल ही आया हू, पैदल ही जाऊगा।"

"कोल्हापुर से।"

प्रश्नकर्ता के मुख पर विस्मय की रेखा उभर आई। वह चवूतरे से उतरकर कही चला गया। उसके साथी से ब्राह्मण ने पूछा, "पास में कोई तालाव है क्या, भाई ? मुझे स्नान करना है।"

"उधर देखिये। वह जो पेडो की कतार दिखाई देती है, उसके पीछे एक पोखरा है। भोजन के लिए क्या करेंगे ?"

"मेरी झोली मे चिउडा और गुड है। पूजा-पाठ करने के लिए कोई साफ-सुथरी जगह चाहिए, भैया।"

"पोखर के ऊपर की ओर पुराना टूटा मठ है। उसके दालान में आप पूजा कर सकते है।"

"जरा तालाव दिखा दोगे ? वडा पुण्य होगा, भैया।"

"आइये।"

यह कहकर वह ब्राह्मण को अपने साथ ले गया और तालाव तथा मठ दिखला दिये। ब्राह्मण पोखरे का स्वच्छ जल देखकर वहुत खुश हुआ और वोला, "तुमने वहुत कष्ट उठाया। तुम्हारा नाम ?"

"मुझ वालण्णा कहते हैं। मैं दूध और केला लाकर दू तो आप ले लेंगे न ?"

"ले तो लूगा, पर तुमको वेकार क्यो हैरान किया जाय ?"

"आप भोजन करना चाहें तो यहा ब्राह्मणो के घर है। मैं उनके। सव ठीक कर दूगा।"

"नही भैया, मुझे भोजन नही चाहिए। तुम वडे दयालु हो। क्षमा करो।

ब्राह्मण ने झोली और वीणा उतारकर कधे के कपडे से उनकी तथा अपने शरीर की धूल झाडी। फिर झोली से लोटा निकालकर तालाव से पानी लाया। जमीन पर पानी छिडककर उस शुद्ध की हुई जगह पर पूजा का सामान रखकर वोला, "मैं नहाकर आता हू। तवतक तुम जरा इन चीजो पर निगाह रखना।"

"क्यो, महाराज ?"

"मेरी इन चीजो को कोई "

"नही, यहा ऐसा कोई डर नही है, महाराज। [illegible] छोडकर चले जाय तो भी कोई नही छुएगा।"

ब्राह्मण को उसके उत्तर से तसल्ली हुई। [illegible] लेकर वह पोखरे की ओर बढ गया। बालण्णा [illegible] रखवाली करता रहा।

दस मिनट बीते होगे कि बालण्णा ने देखा [illegible] चले आ रहे है। उसने नीचे उतरकर, सूरज [illegible] के लिए अपनी आखो के आगे हाथ करके [illegible] दीक्षितजी थे। बालण्णा गम्भीरता से [illegible] बालण्णा के पास जाकर पूछा, "आसपास से आये हुए [illegible]"

बालण्णा ने बडे आदर से कहा, "स्नान के लिए [illegible]।"

दीक्षितजी ने रायण्णा से कहा, "रायण्णा, [illegible]।" इतना कहकर वे धूप में ही खडे हो गये।

गीली धोती कधे पर डाले, हाथ मे लोटा लिये ब्राह्मण [illegible] आया और लम्बी बाहो वाले दीक्षितजी को ध्यान से देखने लगा। दीक्षितजी ने ब्राह्मण के चरणो मे झुककर कहा, "मेरा नाम चिदम्बर दीक्षित है। रायण्णा ने मुझसे कहा कि आप आये है। आप कृपा करके हमारे घर पधारिये और प्रसाद स्वीकार कीजिये।"

आश्चर्य-चकित होकर ब्राह्मण बोला, "आपकी मुझसे जान-पहचान नही है, वैसे भी अब दोपहर हो गया है। इस समय आपके घर की स्त्रियो को भोजन पकाने के लिए कष्ट देना ठीक नही। मै अपने साथ चिउडा और गुड लाया हू। पूजा करके यही प्रसाद पा लूगा।"

यह सुनकर दीक्षित के दिल को चोट लगी। मनोव्यथा के चिह्न उनके मुखपर दिखाई देने लगे। माथे पर पसीना आगया, कुकुम भीग गया। वह हाथ जोडकर बोले, "महाराज, मै पूजा करके अपनी ड्योढी पर

मेहमानो की राह देखता खडा था। आज मेरे दुर्भाग्य से कोई भी मेहमान इस ओर से नही निकला। मै यही सोच रहा था कि आज देवी क्यो मुझसे नाराज है? तभी हमारा रायण्णा दौडा आया और आपके आने का समाचार सुनाया। मैने समझ लिया कि स्वय देवी ही आपका रूप धर कर यहा आई है, और मै इधर चला आया। मुझे निराश मत कीजिये। आप नही पधारेगे तो मै भोजन नही करूगा। जिस दिन अतिथि नही होते, उस दिन मै भोजन छूता भी नही।"

ब्राह्मण कुछ देर सोचकर बोला, "दीक्षितजी, मुझे आश्चर्य हो रहा है कि कलिकाल के आ जाने पर भी आज धर्मनिष्ठावाले लोग मौजूद है! मै अवश्य चलूगा, महाराज। जब देवी के भक्त आकर बुलायें तो इन्कार कैसे किया जा सकता है?"

ब्राह्मण ने झोली उठाई। रायण्णा वीणा उठाने के लिए आगे बढा तो ब्राह्मण बोला, "भैया, ज़रा होशियारी से उठाना। यही मेरा सर्वस्व है, यही मेरा भाग्य है।"

ब्राह्मण दीक्षित के साथ चला। उनके पीछे वीणा उठाये हुए रायण्णा चला और उसके साथ बालण्णा।

दीक्षितजी बोले, "आप कोल्हापुर से आ रहे है?"

"जी हा।"

"पैदल ही यात्रा कर रहे है?"

"जी हा। सवारी में बैठकर कही तीर्थयात्रा होती है? मैने आपको परिचय नही दिया। मेरा नाम सदाशिव शास्त्री है। मै श्रीरगपट्टण का रहनेवाला हू।"

बातचीत में घर आगया। घर देखकर सदाशिव शास्त्री की सास-सी रुक गई। विशाल आगन और उसके तीन ओर कमरो की पक्तिया। जगह-जगह काच के ग्लोब। सारी हवेली पवित्रता, सात्विकता और वैभव से दमक रही थी।

रायण्णा ने वीणा दालान में रखदी और शास्त्रीजी ने भी अपना झोला

वही रख दिया। दीक्षितजी अन्दर गए और [illegible]
स्नान के लिए गरम पानी तैयार है।"

"गरम पानी की जरूरत नहीं। ठंडे पानी से [illegible]

"अन्दर आइये।"

शास्त्रीजी अपने कपडे हाथो में उठाकर बोले, "म[illegible]
में कुछ समय लगता है। आप मेरे लिए न [illegible]
तो मुझे बडा आनन्द होगा। मैं अच्छी तरह से [illegible]
भोजन करूंगा।"

दीक्षितजी ने विनम्रता से कहा, "ऐसा भी कहीं [illegible]
मेरे कारण जल्दी न करें। भगवान की पूजा मे [illegible]
सकता है? आप आनन्द से पूजा कीजिये। आपकी पूजा [illegible]
कित्तूर के अधीश्वर को भी मिले।"

शास्त्रीजी स्नान समाप्त करके आये तो दीक्षितजी [illegible]
पूजा के लिए सब सामान तैयार पाया। शास्त्रीजी वीणा [illegible]
खोली उतारकर उसे लेकर पूजा-घर में गए। [illegible]
महिषासुर-मर्दिनी देवी विराजमान थी। तरह-तरह के [illegible]
उनके बीच देवी मुस्करा रही थी। लाल-लाल फूलो से ऐसा प्रतीत
होता था, मानो देवी के चारो ओर लाल कान्ति फैली हुई हो।
छोटे-छोटे दीपको के प्रकाश मे देवी के रत्नजटित आभूषण चमक रहे
थे। देवी के सामने आरती के दीपक पवितबद्ध प्रकाशमान हो रहे थे।

शास्त्रीजी ने वीणा देवी के सामने रखकर साष्टाग प्रणाम किया। अपने लिए रक्खे हुए आसन पर बैठकर आचमन किया, गायत्री मन्त्र का जाप किया, फिर हाथ में वीणा उठाई।

दीक्षितजी पूजा-घर के एक ओर हाथ जोडे खडे थे। उनसे कुछ दूर पर द्वार के पास दीक्षितजी की पत्नी तुलजाबाई भक्ति-पूर्वक खडी थी।

शास्त्रीजी ने वीणा के सुर ठीक करके, उसे तीन बार आखो से लगाया और बजना आरम्भ किया। मध्याह्न-काल के अनुकूल मध्यमावती

राग मे दानव-सहारणी, धर्म-सवर्द्धिनी देवी का भजन गाया।

भजन सुनकर दीक्षितजी के नेत्रो से आनन्द के आसुओ की धारा वहने लगी। ध्यान में मग्न होकर वह चित्रलिखित से खडे थे।

भजन-कीर्तन समाप्त होने पर शास्त्रीजी ने वीणा के ऊपर से हाथ हटाकर एक बार दीक्षितजी की ओर देखा तो उनको बाह्य ससार के ज्ञान से शून्य, ध्यानावस्थित पाया। तब उन्होने हसानन्दी राग में 'पाहि जगज्जननि' भजन गाया।

भजन पूरा होने मे काफी देर लग गई। तब शास्त्रीजी ने दीक्षितजी की ओर मुह करके पूछा, "मगल आरती गाऊ ?"

यह सुनकर दीक्षितजी होश में आये, बोले—"जैसी आपकी इच्छा।"

शास्त्रीजी ने मगल-आरती समाप्त करके वीणा को आखो से लगाकर नीचे रख दिया। दीक्षितजी और उनकी पत्नी ने शास्त्रीजी को साष्टाग नमस्कार करके कहा, "आप धन्य है। आपने देवी को हमारी आखो के सामने साक्षात् लाकर खडा कर दिया।"

शास्त्रीजी झट से उठकर दीक्षितजी और तुलजाबाई को प्रणाम करके विनीत स्वर में बोले, "आप दम्पति शिव-पार्वती के समान है। मुझे आशीर्वाद दीजिए। मुझमें आपसे नमस्कार कराने की पात्रता कहा।"

तुलजाबाई वहा से हट गई। उन्होने रसोई में चादी की थालियो भोजन परोसा। दीक्षितजी और शास्त्रीजी भोजन करने बैठे। तुलजाबाई ने गुझिया खीर, पूरणपोली आदि व्यजन शास्त्रीजी के सामने अच्छी तरह से परोसकर उनपर खूब घी डाला। दीक्षितजी के भोजन की मात्रा देखकर शास्त्रीजी को आश्चर्य हुआ। उन्होने तो युवको को भी मात कर दिया था। शास्त्रीजी ने पूछा,

"आज कौन-सा पर्व है, दीक्षितजी ?"

"मै ललिता सहस्रनाम का पारायण कर रहा हू। हर शुक्रवार को मीठा भोजन बनाकर देवी को नैवेद्य अर्पण किया करता हू। आज मेरा पारायण सफल हो गया।"

घर में बाल-गोपालो की चहल-पहल न देखकर शास्त्रीजी ने धीरे-से पूछा—"दीक्षितजी, आपके कितने बच्चे है ?"

"एक लडकी है। उसका विवाह धारवाड में हुआ है। मेरे जामाता वहाके सस्कृत विद्यालय में पढाते है।"

अन्त में तुलजाबाई ने दूध और दही परोसा। हाथ धोकर, कुल्ला करके दोनो दालान में आकर बैठे तो तुलजाबाई ने पान लाकर दिए। शास्त्रीजी ने पान नही खाया, एक लौग उठा ली। दीक्षितजी ने कत्था, बादाम, लौंग, इलायची और सुपारी डालकर बीडा बनाया और उसे चबाते हुए बोले, "शास्त्रीजी, आप जैसे ऊचे विद्वान् राजसभा में ही शोभा देते है। आपको कन्धे पर वीणा रखकर गाव-गाव घूमते देखकर मुझे अचम्भा होता है।"

ये शब्द सुनकर शास्त्रीजी को पिछले दिनो की याद आ गई। उनका मुख पीला पड गया। वे गद्‌गद कण्ठ से बोले, "आपने मुझे मेरी राम-कहानी याद दिला दी।"

"रामकहानी !"

"जी हा, वह बहुत बडी है।" इतना कहकर शास्त्रीजी चुप हो गए।

उन्हें चुप होते देखकर दीक्षितजी ने कहा, "आपके मन को दुःख न हो तो वह कहानी सुना दीजिये।"

शास्त्रीजी ने सुनाना प्रारम्भ किया—"हमारा घराना सगीत के लिए प्रसिद्ध है। मैसूर का राज-दरबार सैकडो वर्षो से हमारी कला का आदर करता आ रहा है। बडे सुलतान हैदरअली के समय मे भी मुझे दरबार की विद्वन्मडली में स्थान प्राप्त था। सन् १७८२ मे बडे सुलतान का स्वर्गवास हो जाने पर उनके पुत्र टीपू सुलतान मैसूर की गद्दी पर बैठे। टीपू सुलतान मुझे अपने प्राणो की तरह प्यार करते थे। युद्ध-भूमि में भी मुझे अपने साथ ले जाते थे। भगवान् ही जानता है कि वह पुण्यात्मा आराम किस समय करता था। कभी-कभी रात को मेरे कमरे में आकर

राग में दानव-संहारणी, धर्म-सर्वद्धिनी देवी का भजन गाया।

भजन सुनकर दीक्षितजी के नेत्रो से आनन्द के आसुओ की धारा वहने लगी। ध्यान में मग्न होकर वह चित्रलिखित से खडे थे।

भजन-कीर्तन समाप्त होने पर शास्त्रीजी ने वीणा के ऊपर से हाथ हटाकर एक वार दीक्षितजी की ओर देखा तो उनको वाह्य समार के ज्ञान से शून्य, ध्यानावस्थित पाया। तव उन्होने हसानन्दी राग में 'पाहि जगज्जननि' भजन गाया।

भजन पूरा होने में काफी देर लग गई। तव शास्त्रीजी ने दीक्षितजी की ओर मुह करके पूछा, "मगल आरती गाऊ ?"

यह सुनकर दीक्षितजी होश में आये, वोले—"जैसी आपकी इच्छा।"

शास्त्रीजी ने मगल-आरती समाप्त करके वीणा को आखो से लगाकर नीचे रख दिया। दीक्षितजी और उनकी पत्नी ने शास्त्रीजी को साष्टाग नमस्कार करके कहा, "आप घन्य है। आपने देवी को हमारी आखो के सामने साक्षात् लाकर खडा कर दिया।"

शास्त्रीजी झट से उठकर दीक्षितजी और तुलजावाई को प्रणाम करके विनीत स्वर में वोले, "आप दम्पति शिव-पार्वती के समान है। मुझे आशीर्वाद दीजिए। मुझमें आपसे नमस्कार कराने की पात्रता कहा।"

तुलजावाई वहा से हट गई। उन्होने रसोई में चादी की थालियो में भोजन परोसा। दीक्षितजी और शास्त्रीजी भोजन करने वैठे। तुलजावाई ने गुझिया खीर, पूरणपोळी आदि व्यजन शास्त्रीजी के सामने अच्छी तरह से परोसकर उनपर खूव घी डाला। दीक्षितजी के भोजन की मात्रा देखकर शास्त्रीजी को आश्चर्य हुआ। उन्होने तो युवको को भी मात कर दिया था। शास्त्रीजी ने पूछा,

"आज कौन-सा पर्व है, दीक्षितजी ?"

"मै ललिता सहस्रनाम का पारायण कर रहा हू। हर शुक्रवार को मीठा भोजन वनाकर देवी को नैवेद्य अर्पण किया करता हू। आज मेरा पारायण सफल हो गया।"

घर में बाल-गोपालो की चहल-पहल न देखकर शास्त्रीजी ने धीरे-से पूछा—"दीक्षितजी, आपके कितने बच्चे हैं ?"

"एक लडकी है। उसका विवाह धारवाड में हुआ है। मेरे जामाता वहाके सस्कृत विद्यालय में पढाते है।"

अन्त में तुलजाबाई ने दूध और दही परोसा। हाथ धोकर, कुल्ला करके दोनो दालान में आकर बैठे तो तुलजाबाई ने पान लाकर दिये। शास्त्रीजी ने पान नही खाया, एक लौंग उठा ली। दीक्षितजी ने कपूर, बादाम, लौंग, इलायची और सुपारी डालकर बीडा बनाया और उसे चबाते हुए बोले, "शास्त्रीजी, आप जैसे ऊचे विद्वान् राजसभा में ही शोभा देते है। आपको कन्धे पर वीणा रखकर गाव-गाव घूमते देखकर मुझे अचम्भा होता है।"

ये शब्द सुनकर शास्त्रीजी को पिछले दिनो की याद आ गई। उनका मुख पीला पड गया। वे गद्‌गद कण्ठ से बोले, "आपने मुझे मेरी राम-कहानी याद दिला दी।"

"रामकहानी!"

"जी हा, वह बहुत बडी है।" इतना कहकर शास्त्रीजी चुप हो गए।

उन्हें चुप होते देखकर दीक्षितजी ने कहा, "आपके मन को दु ख न हो तो वह कहानी सुना दीजिये।"

शास्त्रीजी ने सुनाना प्रारम्भ किया—"हमारा घराना सगीत के लिए प्रसिद्ध है। मैसूर का राज-दरबार सैकडो वर्षों से हमारी कला का आदर करता आ रहा है। बडे सुलतान हैदरअली के समय मे भी मुझे दरबार की विद्वन्मडली में स्थान प्राप्त था। सन् १७८२ में बडे सुलतान का स्वर्गवास हो जाने पर उनके पुत्र टीपू सुलतान मैसूर की गद्दी पर बैठे। टीपू सुलतान मुझे अपने प्राणो की तरह प्यार करते थे। युद्ध-भूमि में भी मुझे अपने साथ ले जाते थे। भगवान् ही जानता है कि वह पुण्यात्मा आराम किस समय करता था। कभी-कभी रात को मेरे कमरे में आकर

कहते, शास्त्रीजी, जरा सहाना राग तो गाकर सुनाइए।' जो-जो राग उन्हे पसन्द थे, उन्हें सुनते। सुलतान के अग्रेजो से युद्ध होने की बात आप जानते ही है। उन तीनो लडाइयो में मै उनके साथ था। सुलतान हमेशा कहा करते, 'हमारे मुल्क पर हममें से कोई भी राज करे तो परवाह नही लेकिन इन लल-मुहो को पास नही फटकने देना चाहिए।' मैंने एक दिन कहा, 'ललमुहो को पास नही फटकने देना चाहिए, यह कहनेवाले आप ही ने तो फ्रासीसी लोगो से मदद ली थी ?' इसके उत्तर में उन्होने कहा, 'काटे से ही काटा निकाला जाता है। अग्रेजो का जोर खत्म होने के बाद में फ्रासीसियो को भी धता वताऊगा।' मैसूर का यह दुर्भाग्य था कि सन् १७९९ में चौथे मैसूर-युद्ध में मैसूर की सेना हार गई और टीपू सुलतान ने रणक्षेत्र में वीरगति पाई। उस समय अग्रेजो ने अनगिनत अत्याचार किये। राजमहल की गौओ को वे मारकर खा गये, घर-घर में घुसकर लूट मचा दी। राज-महल को भूमिसात करके जिस मसजिद नें सुलतान इवादत करते थे, उसको अपवित्र कर दिया। सुलतान के सब सहायको को बेरहमी से मार दिया। श्रीरगपट्टण की गलियो में रक्त की नदिया बहने लगी। यह सब भयानक दृश्य देखकर मुझको जीवन से विरक्ति हो गई। त्रस्त नगरी को देखकर मेरा हृदय फटा जाता था। मै उसे छोडकर जाने की सोच ही रहा था कि वहा मुम्मडि कृष्णराज ओडेयर का आदेश आया कि 'नगर छोडकर मत जाना। राजदरबार में वीणाचार्य बख्शी बनकर रहो। मैसूर दरबार का नाम दूर-दूर तक फैलाओ।' मैंने बारह बरस तक महाराज की सेवा की थी, पर राजमहल का वातावरण दिन-पर-दिन बिगडता जा रहा था। महाराज को स्वार्थियो ने घेर रखा था। मैंने इन बातो की ओर महाराज का ध्यान खीचना चाहा, किन्तु उनके हित के लिए कही गई बातें मेरे विनाश का कारण बन गई। अनेक बार राजमहल में मेरे अपमान के अवसर आये। इसलिए मेरा मन राज-दरबार से खट्टा हो गया और मै सबकुछ छोड-छाडकर कधे पर झोली लेकर देशाटन के लिए चल पडा।

काशी, केदार, मथुरा, नासिक, आदि तीर्थों का दर्शन करके कोल्हापुर आया। वहा येल्लव्वा क्षेत्र की महिमा सुनकर येल्लवा देवी के दर्शन के लिए इधर आ गया। आपसे परिचय पाकर बडा आनन्द हुआ।

दीक्षितजी ने पूछा, "शास्त्रीजी, आपने अपने घरवार के वारे मे कुछ नही वतलाया।"

शास्त्रीजी कुछ देर मौन रहे। फिर बोले, "मैसूर की तीसरी लडाई के समय मेरी पत्नी की मृत्यु हो गई। मेरा इकलौता लडका था। वह सस्कृत का अच्छा पडित था। सुलतान ने उसको राज-दरवार में धर्माधिकारी का पद दिया था। चौथे मैसूर-युद्ध मे वह सुलतान के साथ लडाई के मैदान में गया, सो वहासे वापस नही आया। सुलतान की ओर आती हुई गोली के सामने उसने अपनी छाती तान दी और अपने प्राणो को होम दिया। दीक्षितजी, मेरे वीर पुत्र ने अपने देश के लिए अपने प्राणो की वलि दे दी। इसलिए मै उसके लिए आसू नही वहाता। मुझे दुःख इस वात का है कि भगवान ने ऐसे दस पुत्र मुझे नही दिये। (कुछ रुक कर) आपकी अनुमति हो तो शाम को यहासे चला जाऊ?"

दीक्षितजी ने स्नेह-भाव से कहा, "शास्त्रीजी, आप मेरे अतिथि है। जवतक मै विदा न करू, आप इस वैलहोगल[1] से नही जा सकते।"

शास्त्रीजी ने मुस्कराकर पूछा, "मुझे यहा कितने दिन रहना होगा?"

दीक्षितजी ने उत्तर दिया, "दो दिन विश्राम कीजिए। मुझे आपसे कुछ वातें करनी है। उन्हें सुनकर आप जैसा चाहें, कीजिए। और हा, आपको हमारा मारुति-मदिर भी तो देखना है।"

"अवश्य देखूगा। जिसमें आपको आनन्द मिले, वही करूगा।" शास्त्रीजी वही ठहर गये।

---

१ गांव का नाम

: २ :

सदाशिव शास्त्री को देरतक सोने की आदत नहीं थी। हालाकि उन्होने राजमहल में आराम का जीवन विताया था, फिर भी वह सवेरे चार वजे उठकर स्नान करके श्रीमद्भगवद्गीता और रामायण का पाठ किया करते थे। अगले दिन जव दीक्षितजी उठकर आए तो शास्त्री-जी नित्यकर्म से निवृत्त होकर पाठ कर रहे थे। दीक्षितजी ने विस्मय से कहा, "अरे, आप तो मुझसे पहले ही उठ गए! रात को नीद तो अच्छी तरह से आई न?"

"हा, दीक्षितजी, खूव सोया।"

"चलिए, मारुति मदिर चलें।"

"चलिए।"

दीक्षितजी शास्त्रीजी को गाव से थोडी दूर पर वने मारुति-मदिर में ले गए। मदिर के द्वार पर रायण्णा और वालण्णा ने उन दोनो का स्वागत किया। मदिर के तीन हाथ ऊचे द्वार की ओर सकेत करते हुए दीक्षितजी वोले, "ज़रा झुक कर चलिए, शास्त्रीजी, कही सिर न टकरा जाय।"

शास्त्री ने अन्दर जाकर चारो ओर देखा। मारुति-मन्दिर क्या था, वह तो एक अखाडा था। वोले, "क्या यही है, आपका मारुति-मन्दिर?"

"जी हा। नागरकट्टी इस मन्दिर का पुजारी है और रायण्णा, वालण्णा, गजवीर तथा चन्नवसप्पा भक्त हैं।

नागरकट्टी ने आगे वढकर धरती छूकर दीक्षितजी को प्रणाम किया।

"शास्त्रीजी, नागरकट्टी वडा पहलवान है। एक वार इसने पजाव के सव पहलवानो को वात-की-वात में पछाड डाला था। अव उम्र ढल जाने पर उसने अखाडे में उतरना छोड दिया है। अपने चेलो को तैयार करता है।"

तभी नागरकट्टी ने दीक्षितजी से पूछा, "वालण्णा और गजवीर की

जोडी अखाडे में भेजू, या आप अखाडे में उतरेंगे ?"

दीक्षितजी ने कहा, "नागरकट्टी, पहले अपने शिष्यो की वानगी शास्त्रीजी को दिखाओ।"

वालण्णा और गजवीर दोनो एक ही उम्र के थे। यो देखने में गजवीर का शरीर वाहर से कुछ स्थूल-सा मालूम पडता था, किन्तु उसमें असाधारण कस था। वालण्णा का शरीर किसी शिल्पी की अच्छी तरह घडी हुई मूर्ति के समान था। अनायास देखने पर यह नही जान पडता था कि उस सौम्य शरीर में भीम का-सा वल है।

वालण्णा और गजवीर अखाडे में उतरकर सिह-किशोरो की तरह लडने लगे। दाव-पेंच चलने लगे। गजवीर की वन्दर-मुष्टि ऐसी मालूम पडती थी कि उसमें से वालण्णा किसी तरह भी नही निकल सकेगा, पर वालण्णा उसमें से फिसलकर गिलहरी की तरह निकल जाता था। शास्त्रीजी वुद्धि और वल की इस अद्भुत लडाई को निर्निमेष नेत्रों से देखते रहे और आश्चर्य-चकित हो गये।

दोनो पहलवानो के शरीर से पसीना चूने लगा। जव वे दोनो इस तरह नागपाश में उलझे हुए थे तो उनको अलग करके नागरकट्टी ने पूछा, "आज्ञा हो तो अव रायण्णा और चन्नवसप्पा की जोडी छोडू।"

दीक्षितजी ने कहा, "नही।" और अपनी धोती उतारकर यज्ञोपवीत कमर में लपेटा और स्वय अखाडे में कूद पडे।

नागरकट्टी ने शरीर पर मिट्टी मलकर दीक्षितजी की चरणधूलि सिर पर धारण करके पुकारा, "जय गुरुदेव।"

दीक्षितजी ने भी जाघो पर हाथ मारकर सिहनाद किया, "जय हनुमान।"

शास्त्रीजी को अपनी आखो पर विश्वास नही हुआ। वह देख रहे थे कि उच्च ब्राह्मण-कुल-सम्भूत दीक्षितजी इस ढलती उम्र में मल्ल-युद्ध जैसी राजसी क्रीडा में इतनी रुचि कैसे दिखला रहे है। उनके लिए यह सब पहेली-जैसा था।

नागरकट्टी और दीक्षितजी मस्त हाथियो की तरह जूझ रहे थे। एक वार नागरकट्टी को नीचे पटककर दीक्षितजी उसकी पीठ पर चढ वैठे। फिर जरा देर वाद नागरकट्टी ने उसी तरह दीक्षितजी को नीचे पटक दिया और स्वय उनकी पीठ पर वैठ गया। दीक्षितजी ने उसको धूलि की तरह झाड कर ऊपर उठकर भुजाए फटकारी और ताल ठोकी।

घटे की गूज के समान दीक्षितजी के वीर घोप से लोगो की छाती काप उठी। किन्तु नागरकट्टी भी कितनी ही लडाइयो में शौर्य दिखला चुका था, वह प्रतिशोध करके दीक्षितजी के ऊपर चढ़ वैठा।

वालण्णा, गजवीर, रायण्णा और चन्नवसप्पा चारो ओर खडे होकर दोनो को वढावा दे रहे थे। शास्त्रीजी को भी जोश आ गया और वह भी उनके स्वर-में-स्वर मिलाने लगे।

दीक्षितजी आधी की तरह नागरकट्टी की जाघो के वीच घुस गए और उसको उठाकर पीठ के वल नीचे पटक दिया।

वालण्णा, गजवीर, चन्नवसप्पा और रायण्णा ने हर्पनाद किया, "जय गुरुदेव, जय गुरुदेव।"

कुश्ती समाप्त हुई। दीक्षितजी ने यज्ञोपवीत ठीक करके धोती पहन-र कहा, "चन्नवसप्पा, शाम को हवेली आ जाना। तुम्हारे हाथ की सफाई हमारे शास्त्रीजी भी तो देखें।"

"जो आज्ञा, महाराज!"

जव दीक्षितजी चलने को हुए तो नागरकट्टी और उसके शिप्यो ने झुककर उनके चरणो में प्रणाम किया।

घर लौटने पर शास्त्रीजी गूगे के समान मौन वैठे रहे। दीक्षितजी ने उनकी ओर एकटक निहारते हुए कहा, "शास्त्रीजी, क्या मेरी चाल-ढाल से आपको आश्चर्य हो रहा है?"

"जी हा।"

इसकी कहानी रात को सुनाऊँगा। अव आपको स्नान करके पूजा

करनी है न ?"

शास्त्रीजी कुछ उत्तर न देकर स्नान करने चल दिये ।

शाम को दीक्षितजी के आगन मे वडी भीड इकट्ठी थी। सगोल्ली गाव का पटेल भरभण्णा गाव के दो विरोधी दलो को समझौते के लिए बुलाकर लाया था। एक पक्षवालो के पुआल के ढेर में कुछ वदमाशों ने आग लगा दी थी। यह सोचकर कि उनके जन्मजात वैरी दूसरे पक्षवालो ने आग लगाई है, वे उनके पुआल के ेर में आग लगाने की तैयारी में थे। पटेल भरभण्णा को आशका थी कि दोनो पक्षो के कलह में सारा गाव ही भस्म हो जायगा। सो दोनो पक्षवालो को मनाकर दीक्षितजी के पास समझौते के लिए वह ले आया था।

दीक्षितजी की वात टालने का साहस किसीमें नही था। उन्होने दोनो पक्षवालो को समझाकर कहा, "तुम लोगो के लिए अपनी मर्दानगी दिखलाने का मौका आ रहा है। उसके लिए तैयार रहो। घर की कलह से सारे गाव को वरवाद करके राज्य को ही मिट्टी में मत मिलाओ।"

दोनो पक्षो के मुखियो ने दीक्षितजी के चरण छूकर शपथ खाई और स्नेह-सौहार्द से रहने का आश्वासन दिया।

सभा-विसर्जित होने के वाद दीक्षितजी ने रायण्णा से फाटक वन्द करने को कहा। रायण्णा के फाटक वन्द करने के वाद दीक्षितजी चन्नवसप्पा से वोले, "विच्चुगत्ती[1], तैयार हो न ?"

चन्नवसप्पा ने उत्तर दिया "जी हा, तैयार हू, महाराज।"

रायण्णा और वालण्णा ने भीतर से चमकती हुई कुछ तलवारें लाकर दीक्षितजी के सामने रख दी। दीक्षितजी ने चन्नवसप्पा से कहा, "पहले तुम चुन लो।"

चन्नवसप्पा ने एक तलवार चुनकर अपने सिर के वालो को उससे काट कर उसकी धार को परखा। दीक्षितजी ने भी काछनी वाधी और हाथ में

[1] 'बिच्चुगत्ती' का अर्थ है नंगी तलवार। चन्नबसप्पा का यह उपनाम था।

एक तलवार उठाकर आगन में उतर आए।

घर के भीतरी द्वार में खडी ोकर तुलजावाई (जो तुलजम्मा भी कहलाती थी) देख रही थी।

चन्नवसप्पा तलवार आडी पकडकर दीक्षितजी को प्रणाम करके तुलजम्मा के पास गया और उनको भी प्रणाम किया।

दीक्षित और चन्नवसप्पा की तलवारें खनखनाहट के साथ टकराई। कभी दीक्षित का हाथ ऊपर रहता, कभी चन्नवप्पा का। चन्नवसप्पा की देह घनुष की तरह झुक जाती थी। खडे होकर, वैठकर, दाई ओर को झुककर, वाईं ओर को मुडकर, वह अपनी कला दिखा रहा था। दीक्षितजी की समझ में नही आता था कि वह कौन-सा पैंतरा वदलेगा। जव वह वाईं एडी के वल वैठकर लड रहा था तो भरभण्णा पास वैठे गजवीर से वोला, "तुम्हारा साथी आज गुरुजी को हरा देगा।"

गुरुभक्त गजवीर को भरमण्णा की वात सहन नही हुई। वह वोला, "भरमदादा, गुरुजी को हराना कोई हँसी-खेल नहीं है। उसके लिए बिच्चुगत्ती को अभी वहुत दिनो हाथ घिसने होगे।"

"अच्छा, देखना, गजवीर। यह पेंच विच्चुगत्ती का अपना है। इसका भेद अभी गुरुजी की समझ में नही आया।"

भरभण्णा जव यह कह ही रहा था कि दीक्षितज़ी की तलवार खट की ।व ज के साथ वीस गज की दूरी पर जा गिरी।

भरभण्णा उद्वेग के साथ वोल उठा, "देख ली मेरी वात, गजवीर।"

दीक्षितजी ने चन्नवसप्पा को दोनो वाहो में भरकर आलिगन करके कहा, "शिष्यादिच्छेत्पराजयम्[1]—मुझे गुरु-दक्षिणा मिल गई।"

चन्नवसप्पा ने अपनी तलवार भक्ति-पूर्वक गुरु के चरणो में रखकर वदना की।

दीक्षितजी के शिष्य तलवारें भडार-घर में रखकर उनकी अनुमति

---

[1] 'शिष्य से पराजय की इच्छा करे।'

लेकर चले गए। दीक्षितजी भी अदर चले गये और थोडी देर में मुह धोकर, कपडे वदलकर, माथे पर तिलक लगाकर शास्त्रीजी के पास गये।

शास्त्रीजी वोले,"दीक्षितजी, आपने तो आज परशुराम-अवतार में मेरा विश्वास करा दिया। मैंने सतोगुण और रजोगुण का अद्भुत मेल देख लिया।

"शास्त्रीजी, क्षात्रधर्म की घाटी पर पहुँचे विना ब्राह्मणत्व की सिद्धि नही होती।"

शास्त्रीजी वोले, "दीक्षितजी, आप पहले मेरे कौतूहल को शात कीजिये।"

"वहुत अच्छा।" कहकर दीक्षितजी अपनी कथा कहने लगे—

"मैं कित्तूर राज्यका एक दीवान था। एक दूसरे दीवान मल्लप्पाशेट्टी से मतभेद होने के कारण मैंने अपना पद छोड दिया, रियासत के महाराज मल्लर्ज को मुझसे जो प्रेम था, उसका वर्णन शब्दो में नही किया जा सकता। हम दोनो में राजा और प्रजा का भेद न था। शास्त्रीजी, आप हमारे महाराज को एकवार स्वय देखिए। मुझसे कोई चार अगुल लम्बे है। नीलवर्ण,चमकता मुख-मडल। मै उनके वीरता भरे कामो का वखान करने लगू तो सवेरा हो जाय। महाराज नही चाहते थे कि मै राजधानी छोड कर जाऊं। वह वोले, 'दीवान का काम न करें तो कोई वात नही। योही राजधानी में वने रहिए।' मैंने कहा, 'महाराज, मेरा राजधानी में रहना वेकार है। मैं वैलहोगल मे रहकर ही सिंहासन की सेवा करता रहूगा।' महाराज ने पूछा, 'यहा तुम्हारे स्थान पर कौन आयगा?' मैंने कहा,'मल्लप्पाशेट्टी वडे बुद्धिमान है। वह ही सारे काम की देख-भाल कर लेंगे।' इसपर महाराजा वोले, 'आप किसी तरह यहा रहना स्वीकार न करें तो एक ऐसे आदमी को देकर जाइए, जिनपर आपका भरोसा हो।' मैं अपने वहनोई वेंकटराय का नाम दीवान-पद के लिए देकर इधर आ गया। शास्त्रीजी, मैं कित्तूर को भुला दू तो सुख के साथ जीवन विता सकता हू। भगवती की कृपा से मुझे किसी वात की कमी नही है। लेकिन कित्तूर की अवस्था का विचार करके मेरी शान्ति भग हो जाती है।"

शास्त्रीजी ने पूछा, "क्यो, कित्तूर पर कोई सकट आया है क्या ?"

दीक्षितजी बोले, "मुझे सक्षेप में कित्तूर के इतिहास का परिचय आपको कराना पडेगा ।"

शास्त्रीजी ने गद्‌गद्‌ होकर कहा, "वीर जनो का इतिहास पुराणो की पवित्र कथाओ के समान ही पवित्र होता है ।"

दीक्षितजी ने बताया, "कित्तूर का इतिहास सोलहवी शताब्दी से आरम्भ होता है। हिरेमल्लशेट्टी और चिक्कमल्लशेट्टी नामक दो भाई कलबुर्गी में सराफे का काम करते थे। आगे चलकर वे दोनो बीजापुर के सुलतान की सेना में भरती हो गये। हिरेमल्लशेट्टी ने अपना शौर्य दिखलाकर बादशाह से 'शमशेरजग बहादुर' की उपाधि तथा हुबली की सरदेशमुखी (जागीर) प्राप्त की। महाराज मल्लसर्ज उन्हीकी ग्यारहवी पीढी में है। महाराज ने चार विवाह किये। उनमें से तीसरी रानी नीलम्मा छोटी आयु में ही मर गई। बडी रानी रुद्रव्वा सन् १७८५ में जब टीपू सुलतान ने कित्तूर पर घेरा डाला, तब उनसे लडी, किन्तु हमारी जीत नही हुई। दो वर्ष बाद पेशवा के दो सरदारो ने उन सब भागो को अपने अधीन कर लिया, जिनपर टीपू सुलतान ने आक्रमण किया था। कित्तूर राज्य पेशवा के अधीन हो गया। उसी वर्ष टीपू सुलतान के वीर सरदार ०७ ज़ेमान ने कित्तूर राज्य को पुन' जीतकर महाराज को कैद कर । महाराज मौका पाकर कैद से भाग निकले और पेशवा की शरण में ` गए। सन् १७८७ में हुई श्रीरगपट्टण की सन्धि के अनुसार कित्तूर पेशवा के राज्य में मिला लिया गया। महाराज को आश्रय देनेवाले परशुराम भाऊ सन् १७८८ में पट्टणकुडी के युद्ध में खेत रहे और तब महाराज निराश्रित हो गए।

"कित्तूर के राज्य में धूडोजी वाघ नामक एक मराठे डाकू ने बडा उपद्रव मचा रक्खा था। उसको कुचलने के लिए महाराज ने अग्रेजो को सौ घुडसवार, सौ पैदल और सगोल्ली का किला दिया। मैं पहले ही बता चुका हू कि महाराज के चार पत्निया थी। इनमें बडी रानी रुद्रव्वा के दो

लड़के थे, शिवलिंग रुद्रसर्ज और वीररुद्रसर्ज। वीररुद्रसर्ज का २० वर्ष की अवस्था में देहान्त हो गया। अब शिवलिंग रुद्रसर्ज गद्दी के उत्तराधिकारी हैं। शेष रानियों के कोई सन्तान नही है।"

इतना सुनने पर शास्त्रीजी ने कहा, "कित्तूर के भविष्य के बारे में आपके इतनी चिन्ता करने का तो कोई कारण दिखाई नही देता।"

"कारण है, शास्त्रीजी। पूना का पेशवा-साम्राज्य छिन्न-भिन्न होता जा रहा है। इसमें तनिक भी सन्देह नही कि कुटिल स्वभाव अग्रेज उसको शीघ्र ही निगल जायेंगे। टीपू सुलतान के विरुद्ध खडे होने वाले पेशवा की शक्ति अग्रेज अच्छी तरह जानते हैं। इन लोगो ने मैसूर के शेर को मिट्टी में मिला दिया। पेशवा का अन्त करना इनके लिए कौन बडी बात है! पेशवा का पतन होते ही कित्तूर अग्रेजो के हाथ में आ जायगा।

"कालाय तस्मै नम। जब हममें एकता नही, अनुशासन नही, तो हम दूसरो के दास रहें, इसमें आश्चर्य ही क्या? यदि पेशवा टीपू के विरुद्ध अग्रेजो की सहायता न करता तो उनको दक्षिण भारत में एक इच भूमि भी नही मिलती।

"जिन टीपू सुलतान ने भारत की स्वतत्रता के लिए वीरता दिखलाकर रण-क्षेत्र में अपने प्राण दे दिए, उनका हमें तर्पण करना चाहिए।"

शास्त्रीजी ने पूछा, "कैसे?"

"अग्रेजो के रक्त से।"

शास्त्रीजी सहज भाव से बोले, "दीक्षितजी, मैंने बहुत दिनो से राजनीति में भाग लेना छोड दिया है।"

दीक्षितजी का चेहरा आरक्त हो उठा। उनकी मूछो के बाल कांटों की तरह खडे हो गए और आखो से चिनगारिया झडने लगी।

"आप राजनीति से दूर रह सकते हैं, किन्तु स्वामी-ऋण से, देश-ऋण से, धर्म-ऋण से मुक्त नही हो सकते। क्या हम अपनी पवित्र आर्यावर्त भूमि को हजारो मील दूर से समुद्र पार करके आये हुए कुछ फिरगी व्यापारियो की दासता की जजीर में कस जाने दें? हमारे सनातन धर्म

को मिट्टी में मिलाकर उसके भग्नावशेष के ऊपर ईसाई-धर्म का झडा फह-राने दें ? आप और मैं यह सब देखते हुए मौन साध लें ?"

"मैं विद्यारण्य[1] नही हू, दीक्षितजी, एक मामूली कलाकार हूं।"

"शास्त्रीजी, सरस्वती की वीणा की झकार से सब प्राणियो में ज्ञान का उदय होता है। इसी तरह आपकी वीणा की झकार सब भारतवासियो के हृदय में देश-प्रेम की भावना पैदा करे। इस देश के क्षात्र-धर्म और आत्माभिमान को जागृत करने के लिए हम सब अपनी पूरी शक्ति, ज्ञान और तप को अर्पण कर दें।"

"दीक्षितजी, इस बुढापे में मै क्या कर सकता हू ?"

"मेरी प्रार्थना स्वीकार करेंगे ?"

"कहिये।"

"कित्तूर में महाराज के पास कोई योग्य व्यक्ति नही है। दीवान मल्लप्पाशेट्टी और वेंकटराय महास्वार्थी है। बडे दीवान गुरुसिद्दप्पा सच्चे स्वामिभक्त है, किन्तु वे बहुत बूढे हो गये है। उनमें इतनी सामर्थ्य नही रही कि वे मल्लप्पाशेट्टी और वेंकटराय के षड्यन्त्रो का सामना कर सकें। आप महाराज के शुभ-चिन्तक बनकर राजधानी में रहें, इतना ही काफी है। बाकी सब काम कित्तूर के वीर लोग सम्भाल लेंगे।"

"पक्षी की तरह स्वतन्त्र विचरनेवाले व्यक्ति को आप फिर पिंजरे डाल देना चाहते है ?"

"जी हा, जिससे अग्रेज उस पिंजरे में बद करके आर्यावर्त को न ले जा सकें।"

शास्त्रीजी कुछ देर विचारमग्न रहे। दीक्षितजी ने कहा, "शास्त्री-जी, आप और मै अब थोडे ही दिन के मेहमान है। अपनी मातृभूमि को

---

[1] वेदों के प्रसिद्ध भाष्यकार महाविद्वान सायण की उपाधि। उन्होंने विजयनगर साम्राज्य की नींव डाली थी।

गुलामी की जजीरों मे जकडे जाने का दृश्य अपनी आखो से न देखें ।"

भाव-विह्वल होकर शास्त्रीजी ने कहा, "जैसा आप कहें, दीक्षित-जी । मै आपकी इच्छा के अनुसार चलने को तैयार हू ।"

शास्त्रीजी के ये शब्द सुनकर दीक्षितजी ने गद्गद् होकर उनको हृदय से लगा लिया ।

: ३ :

भोजन के वाद दीक्षितजी ने कहा, "यात्रा के लिए कल का दिन शुभ है। रायण्णा आपके साथ जाकर सव प्रवध कर आवेगा।"

"कित्तूर में मैं रहू कहा ?"

"मेरे वहनोई वेंकटराय के घर।"

"आपने तो कहा था कि उनपर और मल्लप्पाशेट्टी पर भरोसा नहीं किया जा सकता।"

"हा, इसीलिए मै चाहता हू कि आप उनके ही घर में रहें। इससे आपको मल्लप्पाशेट्टी और वेंकटराय की कुटिल चालो को जानने मे आसानी होगी। यहा से कोई-न-कोई आकर आपसे मिलता रहेगा। आप उनके द्वारा राजधानी के सव समाचार मुझे भेजते रहें। रायण्णा, वालण्णा, गजवीर, चन्नवसप्पा और नागरकट्टी ये पाचो मेरे पच-प्राण है। इनसे आपको अपनी कोई भी वात गुप्त रखने की आवश्यकता नही।"

"वहुत अच्छा।"

"राजधानी में पहुचते ही आप वेंकटराय के द्वारा वडे दीवान गुरु-द्प्पा से परिचय कर लीजिए। मै उनके पास अलग से भी समाचार भेजे हू। गुरुसिद्दप्पा महाराज और रानी से आपका परिचय करा देंगे।"

"मुझे रानी से परिचय करने की क्या आवश्यकता है ?"

"उसका एक वहुत ही महत्वपूर्ण अभिप्राय है। वडे महाराज की राज-काज में विशेष रुचि नही है। फिर वे वूढ़े भी हो गए है। उनके उत्तरा-धिकारी शिवलिंग रुद्रसर्ज में राजकाज को समझने की कुशलता नही है। मुझे भरोसा नही कि कित्तूर पर सकट आये तो छोटे देसाई उसकी रक्षा कर सकेंगे। रुद्रव्वा रानी और शिवलिंगव्वा रानी विरक्त स्वभाव की है। उन्होने शिव और साधुसतो की पूजा-आराधना में रत रहकर दुनिया को भला रक्खा है। किन्तु रानी चेन्नम्मा तेजस्वी स्वभाव की है। उनमें क्षात्र-

तेज छलका पडता है। जिस तरह चड और मुड दैत्यो के उपद्रव से चामुडेश्वरी काली ने रक्षा की थी, उसी तरह अग्रेजो के उपद्रव से कित्तूर को चेन्नम्मा ही बचायगी। कित्तूर के भविष्य की सब आशाए उन्हीपर अवलम्बित है। जो-कुछ समाचार मैं भेजू, आप उसे रानी चेन्नम्मा तक पहुचाते रहें।"

"बहुत अच्छा। आपकी आज्ञा सिर आखो पर।"

× × ×

अगले दिन त्रयोदशी गुरुवार को रात्रि के समय सदाशिव शास्त्री गाडी मे बैठकर कित्तूर को चल दिए। रायण्णा बैलो को हाक रहा था। बालण्णा भी उसके साथ था।

अगले दिन सूर्योदय से पहले ही गाडी कित्तूर पहुच गई। चारो ओर फैली हरियाली आखो को आनन्दित कर रही थी। पक्षी कलरव कर रहे थे। कुछ पक्षी पख फडफडा कर आहार की खोज में जाने की तैयारी मे थे। चारो ओर के गावो से अनाज की गाडिया कित्तूर की मडी मे आ रही थी। स्त्रिया घरो के आगे लीपकर सुन्दरता से रगवल्ली[1] बना रही थी। हृष्ट-पुष्ट हलवाहे कधे पर हल लिये बैलो को हाकते खेतो को चले जा रहे थे। धनधान्य से समृद्ध कित्तूर को उषाकाल के मद प्रकाश में देखकर सदाशिव शास्त्री को सहसा श्रीरगपट्टण[2] के वैभव की याद आगई।

---

१ दक्षिण भारत में प्रतिदिन घर के आगे आटे या अन्य किसी सफेद चूर्ण से चौक पूरने का रिवाज है। उसे 'रगवल्ली' कहते हैं। लडकियों को शुरू से ही उसमें नाना प्रकार के चित्र बनाना सिखाया जाता है।

२ मैसूर नगर से बीस मील पर कावेरी नदी की दो शाखाए हो जाने से बीच में बने एक द्वीप में नदी तट पर श्रीरगनायस्वामी का मदिर है। यहीं श्रीरगपट्टण नामक नगर को किलेबन्द करके टीपू सुलतान ने अपनी राजधानी बनाई थी। कावेरी नदी के तीन द्वीपो में श्रीरगस्वामी के तीन मदिर हैं, जिनमें प्रथम यह है और तृतीय तमिल देश में श्रीरंगम के नाम से प्रसिद्ध नगर है। द्वितीय इतना प्रसिद्ध नहीं है।

कित्तूर के किले की तरफ गाडी को मोडते हुए रायण्णा गर्व के साथ बोला, "वही है सामने कित्तूर का राजमहल।"

उसके साथ ही शास्त्रीजी के मुह से निकला, "वही सुलतान का राजमहल है।"

शास्त्रीजी को यह सोचकर वडा दु ख हुआ कि श्रीरगपट्टण के ऊपर आती हुई जो विपदा मैंने देखी थी, वही क्या कित्तूर के ऊपर भी देखनी पडेगी ?

रायण्णा ने गाडी किले के भीतर वेंकटराय की हवेली के सामने ले जाकर खडी कर दी। वालण्णा ने शास्त्रीजी की वीणा पहले नीचे उतारी, फिर शास्त्रीजी को हाथ का सहारा देकर उतारा।

रायण्णा वैलो को गाडी से खोलकर पास के एक वृक्ष से वाधकर वेंकटराय की हवेली के अन्दर गया। शास्त्रीजी और वालण्णा भी उसके पीछे गए।

वेंकटराय के द्वारपाल ने जाकर ज्योही वेंकटराय को खवर दी, वह ड्योढी पर आकर रायण्णा को देखकर वोले, "क्यों रायण्णा, तुम आये हो ?"

रायण्णा ने दीवानजी को प्रणाम करके कहा, "जी हा ! मालिक ने आपके लिए यह पत्र दिया है।"

वेंकटराय ने पत्र ले लिया और उसे पढकर वोले, "आइये, अन्दर ॥र॰।" इतना कहकर वह शास्त्रीजी को अन्दर ले गये और वोले, "आप-कित्तूर में रहने का विचार है ?"

शास्त्रीजी ने उत्तर दिया, "लता, वनिता और कला, इनकी शोभा आश्रित होने में ही है। आप जैसे महानुभावो का आश्रय मिले तो मैं कित्तूर में रहना सौभाग्य समझूगा।"

दीवानजी ने कहा, "मेरे साथ के दूसरे दीवान मल्लप्पाशेट्टी यही रहते है। आप स्नान करके तैयार रहिए। उनसे भी आपका परिचय करा ूगा। हम तीनो मिलकर विचार करेंगे और फिर जैसा ठीक होगा, करेंगे।"

तत्पश्चात् उन्होने रायण्णा से पूछा, "गाव का क्या समाचार है,

रायण्णा ? दीक्षितजी तो अच्छी तरह है न ?"

"जी हा, अच्छी तरह है ।" रायण्णा ने विनम्रता से उत्तर दिया ।

वेंकटराय की वातचीत का ढग देखकर शास्त्रीजी ऊव गए । वेंकटराय का शरीर वास की भाति सूखा हुआ था, उसमे रक्त-मास के होने मे भी सन्देह होता था । तोते की-सी उनकी नाक और मली के वीज-जैसी अन्दर धसी हुई आखे उनकी निष्कपटता की द्योतक नही थी । उनको दात वजाकर वोलने की आदत थी । शास्त्रीजी ने साफ समझ लिया कि इस मनुष्य के मुह से निकली हुई वात और उसके मन के विचार में कोई तारतम्य नही है ।

इतने में वेंकटराय की पत्नी पद्मावती वाहर आई । रायण्णा को देखकर वोली, "रायण्णा, भैया अच्छी तरह है ? भाभी ठीक है ?"

रायण्णा ने आदर-पूर्वक खडे होकर कहा, "माईजी, सव अच्छी तरह है । वडे भाई के घर कव आवेंगी ?"

"यहा से छुटकारा ही कहा होता है, रायण्णा ! भाभी से कहना कि न हो तो, दो-चार दिन के लिए वही यहा हो जावे । मैंने तय कर लिया है कि भाई और भाभी नही आवेंगे तो मै त्योहार नही मनाऊगी ।"

फिर शास्त्रीजी की ओर मुडकर वोली, "शास्त्रीजी, इस घर को अपना ही घर समझिए । किसी तरह का सकोच न कीजिए । जो मेरे भाई के अपने है, वे हमारे भी अपने ही है ।"

"जैसी आपकी आज्ञा, माताजी ।" शास्त्रीजी ने कह दिया ।

वह समझ गए कि चमेली की लता पर ऐसा-वैसा फल नही लग सकता ।

शास्त्रीजी के अन्दर चले जाने पर वालण्णा और रायण्णा चुपचाप वहा से चले गए ।

वेंकटराय ने स्नान-पूजा आदि से निवृत्त होकर चोगा पहना और सिर पर पगडी लपेटकर तैयार हो गए । शास्त्रीजी ने स्नान तो कर लिया, लेकिन पूजा का काम मध्यान्ह के लिए छोड दिया ।

"मेरे साले ने लिखा है कि आप वीणा-वादन के आचार्य है ।" वेंकटराय ने पूछा ।

"आप सबका अनुग्रह है ।"

"आपके यहा सगीत को जितना प्रोत्साहन मिलता है, उतना यहा नही । यहा के लोगो के मन मे यह भावना घर कर गई है कि सगीत वेश्याओ की सम्पत्ति है ।"

"शिव-शिव ! यह कैसी बात है ? क्या भगवती, सरस्वती, महर्षि नारद, भगवान श्रीकृष्ण आदि सगीत के उपासक नही थे ? मैंने सुना है कि कित्तूर के अधीश्वर ललित कलाओ के प्रेमी है । राज्य में गाने-बजाने वाले होने ही चाहिए ।"

"कुछ दिनो तक बीजापुर के हबीबखा नाम के एक गायक हमारे राज्य में रहे थे ।"

"अब वह नही है ?"

"नही । अब वे उत्तरप्रदेश मे, रामपुर राज्य मे, चले गए है ।"

इतने में मल्लप्पाशेट्टी आ गये । उनके आने पर वेंकटराय ने उठकर उनका स्वागत किया और शास्त्रीजी से परिचय कराया । सुनकर मल्लप्पा-शेट्टीने कहा, "जब यह दीक्षितजी का पत्र लाये है तो इनको खाली हाथ कैसे लौटाया जा सकता है, वेंकटरायजी ?"

"शास्त्रीजी की क्या सहायता करें, आप ही बताइये ।" वेंकटराय ने उत्सुकता से पूछा ।

"इनको बडे दीवानजी के पास ले चलें । वह महाराज से प्रार्थना करके महल में शास्त्रीजी की सगीत-गोष्ठी कराए । आगे शास्त्रीजी का जैसा भाग्य होगा, वैसा होगा ।"

"आपकी सलाह बिल्कुल ठीक है ।"

वेंकटराय ने उनकी बात स्वीकार कर ली ।

बडे दीवान गुरुसिद्दप्पा की आयु पचहत्तर को पार कर गई थी । फिर भी विश्राम लेना उनके लिए सभव न था । कित्तूर राज्य का सारा भार उनके कधो पर था । राज्य मे शाति-रक्षा की जिम्मेदारी के साथ-साथ मराठो के आक्रमण और अग्रेजो के कुचक्रो का सामना भी उन्हीको करना पडता था ।

राज-काज मे व्यस्त गुरुसिद्दप्पा ने वेंकटराय, मल्लप्पाशेट्टी और शास्त्रीजी का स्वागत करते हुए कहा, "दोनो दीवान एक साथ आए है, तो कोई बडा महत्व का ही काम होगा।"

वेंकटराय ने शास्त्रीजी के कित्तूर आने का प्रयोजन बताया, तो गुरु-सिद्दप्पा बोले, "श्रीरगपट्टण के सगीताचार्य का उन जैसा सम्मान करने की सामर्थ्य हमारे गरीब कित्तूर राज्य मे नही है। फिर भी शास्त्रीजी यही रहे। हम उनके लिए आवश्यक सुविधाओ का प्रबन्ध कर देगे।"

"राजमहल मे शास्त्रीजी की सगीत-गोष्ठी का प्रबन्ध कर दे तो कैसा रहेगा?" मल्लप्पाशेट्टी ने कहा।

"ठीक है। मै अवसर देखकर महाराज से प्रार्थना करूगा। आज शाम को या कल आपको खबर भिजवाऊगा।"

वेंकटराय ने उठते-उठते कहा, "अब आज्ञा दीजिए। हमे दरबार जाना है। शास्त्रीजी को आप हमारे घर भिजवा दीजियेगा।"

"बहुत अच्छा। शास्त्रीजी आप ही के यहा ठहरे है क्या?"

"जी हा।"

शास्त्रीजी ने कहा, आपके सामने बहुत काम है। आप किसीको मेरे साथ कर दें तो मैं बस्ती घूम आऊ।"

"शास्त्रीजी, दीवानजी सब प्रबन्ध कर देगे।"

इतना कहकर गुरुसिद्दप्पा से आज्ञा लेकर वेंकटराय और मल्लप्पा-शेट्टी चले गये।

उनके चले जाने पर पेशकार ने कागज-पत्रो पर दीवानजी के हस्ताक्षर कराए। इसमे कोई आधा घटा लग गया। उसके चले जाने के बाद बडे दीवानजी शास्त्रीजी को अपने घर ले गए।

दीवान गुरुसिद्दप्पा का घर खूब सजा हुआ था। कीमती कालीन बिछे थे, जिनपर मसनद लगे थे। एक ओर चादी का पानदान रखा था। जगह-जगह काच के झाड-फानूस लटक रहे थे। दीवारो पर हाथ के बनाए कई चित्र

टगे थे। दीवानजी की गद्दी के पास की दीवार पर मल्लसर्ज देसाई का रगीन चित्र था।

शास्त्रीजी ने चित्र को ध्यान से देखकर पूछा, "यही कित्तूर के महाराज मालूम पडते है।"

"जी हा, यही हमारे स्वामी, हमारे महाराज और हमारे आराध्य है।"

यह कहते हुए उनकी आखे चमक उठी। वृद्ध दीवान की असीम स्वामि-भक्ति देखकर शास्त्रीजी को अपार आनन्द हुआ।

दीवानजी और शास्त्रीजी गद्दी के पास जाकर बैठे ही थे कि रायण्णा और बालण्णा आकर थोडी दूर पर भूमि पर बै गए। दीवानजी ने गम्भीरता, साथ ही सरलता से कहा, "शास्त्रीजी, आपके आने का उद्देश्य अभी रायण्णा ने मुझे बतलाया है। कित्तूर की राज्यलक्ष्मी ही आपको यहा बुलाकर लाई है।"

शास्त्रीजी ने कहा, "आपके विषय में चिदम्बर दीक्षित की बडी ऊची भावना है। आपपर उनका बहुत ही भरोसा है।"

दीवानजी बोले, "यह मै जानता हू। मै उनकी भावना और विश्वास को कायम रखने के लिए यथाशक्ति प्रयत्न करूगा। आप मल्लप्पाशेट्टी और वेकटराय का विश्वास प्राप्त कीजिए और उनकी गति-विधि का समाचार हमको समय-समय पर देते रहिए।"

शास्त्रीजी ने पूछा, "दीक्षितजी का विचार है कि इन दीवानो से कित्तूर को खतरा है। क्या आपका भी यही विचार है?"

"जबतक सबल कारण न हो, शास्त्रीजी, तबतक दीक्षितजी कोई मत प्रकट नही करते। पहले राज-दरबार में आपकी सगीत-गोष्ठी हो जाय, उसके बाद आपको सबकुछ स्वय ही मालूम हो जायगा।"

तभी दीवानजी के प्रीतिपात्र सेवक शिवकुमार ने सबके लिए दूध और केले लाकर रख दिये। दीवानजी ने शास्त्रीजी से कहा, "लीजिए। दूध पीकर आशीर्वाद दीजिए कि कित्तूर में दूध की नदी बहे।"

शास्त्रीजी जलपान करके शिवकुमार के साथ नगर की सैर करने के लिए चल पडे।

: ४ :

कित्तूर के राजमहल मे आज वडी चहल-पहल है। वहा सगीत-गोष्ठी का आयोजन हो रहा है। राजमहल के निवासियो तथा नगर के गण्यमान्य व्यक्तियो को श्रीरगपट्टण के सगीताचार्य के विषय मे वडा कौतूहल है। जिन्हें सगीत का कुछ भी ज्ञान नही है, वे भी ऐसा प्रकट कर रहे हैं मानो वे सगीत के पूरे पारखी हो। श्रीरगपट्टण के सगीताचार्य दीवान वेकटराय के अतिथि हैं और वडे दीवान गुरुसिद्दप्पा की कृपा उनको प्राप्त है, इससे वह और भी सव लोगो को कौतूहल के पात्र वन गए।

राजमहल का सभामडप खूब सजाया गया। वडे दीवान, अन्य दोनो दीवानो और राजगुरु के लिए उच्चासनो तथा नगर के सभ्रान्त व्यक्तियो के लिए उनकी स्थिति के अनुकूल वैठने की व्यवस्था की गई।

सभा-भवन के वीचोवीच महाराज तथा युवराज के वैठने के लिए ऊचे आसन वनाये गए। महाराज के दाई ओर परदे के पीछे रनवास की महिलाओ तथा नगर की सभ्रान्त स्त्रियो के वैठने की व्यवस्था की गई।

महाराज के सामने सगीताचार्य के वैठने के लिए स्थान रक्खा गया था। सगीताचार्य के पास ही राज-दरवार के कवियो तथा अन्य विद्वानो के वैठने के स्थान थे। निमन्त्रित व्यक्ति कार्यारम्भ होने से आध घटा पहले ही आकर अपने-अपने स्थान पर वैठ गए थे।

महाराज के पधारने के पहले वडे दीवान गुरुसिद्दप्पा सभा-भवन मे आये, सारे प्रवन्ध का निरीक्षण किया और उपस्थित व्यक्तियो से उनकी कुशल-क्षेम पूछी।

इसके वाद निश्चित समय पर जय-घोष द्वारा महाराज के आगमन की सूचना दी गई। महाराज ने ज्योही सभा-भवन मे पदार्पण किया, सव लोगो ने उठकर उनका स्वागत किया। महाराज के साथ युवराज भी पधारे।

सभा के शात हो जाने पर वडे दीवानजी ने शास्त्रीजी से आरभ

करने के लिए आखो से सकेत किया। शास्त्रीजी ने वीणा उठाकर आखो से लगाकर 'शकराभरण' राग गाकर सुनाया।

महाराज ध्यान लगाकर सुन रहे थे, पर सभा मे उत्साह का तनिक भी चिन्ह दिखाई नही दिया। वेंकटराय की कही हुई बाते तत्काल शास्त्रीजी को याद आगई। उन्होंने 'सुरुटि' राग मे राग और तान बजाए, किन्तु सभासदो का मनोभाव नही बदला, नही बदला।

शास्त्रीजी ने देखा कि गुरुसिद्दप्पा का चेहरा भी चिन्ता-ग्रस्त है। वह सोचने लगे, "आज यह कैसी परीक्षा है। आज की यह सगीत-गोष्ठी किसी हालत मे भी निष्फल नही होनी चाहिए। चिदम्बर दीक्षित और गुरुसिद्दप्पा मुझपर जो आशा लगाए बैठे है, वह झूठी सिद्ध नही होनी चाहिए। मेरी आज की इस सगीत-सभा पर कित्तूर का भविष्य निर्भर है।"

यह सोचकर शास्त्रीजी ने 'हिंदोल' राग बजाना प्रारम्भ किया। वहा के कुछ लोग भारतीय सगीत से परिचित थे। यह राग सुनकर वे सिर हिलाने लगे। राजा के मुख पर भी प्रसन्नता की झलक दिखाई दी। गुरुसिद्दप्पा के चेहरे पर चिन्ता की जो रेखाए उभर आई थी, वे धीरे-धीरे दब गई।

और जब शास्त्रीजी ने 'श्रीरजनी' राग बजाना आरम्भ किया, तो सभासदो के मुखो पर मुस्कराहट खेलने लगी। विलम्ब काल में शास्त्रीजी ने राग बजाकर द्रुतकाल मे तान बजाई। सभासद मत्रमुग्ध हो गए।

शास्त्रीजी ने सोचा कि शायद महाराज को देर हो रही है। उन्होने गुरुसिद्दप्पा के मुख की ओर देखा, मानो वे जानना चाहते हो कि क्या वह जारी रक्खे। गुरुसिद्दप्पा महाराज के मुख की ओर उसी मुद्रा से निहारने लगे। पर महाराज ने रुकने का आदेश न दिया।

तब राजगुरु ने महाराज के मुख की ओर देखा। उनके सकेत का अर्थ समझकर गुरुसिद्दप्पा ने आखो-ही-आखो मे शास्त्रीजी को सूचना दे दी। उन्होने मगल-आरती गाकर वीणा को आखो से लगाकर नीचे रख दिया।

सभा-विसर्जन से पहले राजमहल के एक सेवक ने एक थाल लाकर गुरुसिद्दप्पा के हाथो मे दिया। गुरुसिद्दप्पा ने थाल महाराज के हाथ से छुआकर

रख दिया, अनन्तर सगीताचार्य के गले मे पुष्पमाला डालकर उनको सलमे-सितारे के काम से चमकता हुआ शाल ओढाया और उनके हाथो मे रुपयो की थैली सौंप दी। भाँटो ने महाराज की प्रशस्ति गाई और सभासद उठकर खडे हो गए। महाराज युवराज के साथ अन्त पुर मे चले गए।

महाराज के चले जाने पर सभा मे उपस्थित व्यक्तियो ने उत्साह से शास्त्रीजी को घेरकर उनका अभिनन्दन किया। शास्त्रीजी ने लोगो के, विशेषकर मल्लप्पागेट्टी तथा वेंकटराय के अभिनन्दन को स्वीकार करते हुए विनय-भाव से कहा, "यह सब आपका अनुग्रह है।"

महाराज को विदा करके गुरुसिद्दप्पा सगीताचार्य के पास आये और बोले, "टीपू सुल्तान तलवार हाथ मे न लेकर वीणा लेकर आये होते तो कित्तूर आसानी से उनके अधीन हो जाता।"

शास्त्रीजी उनकी इस बात से गद्गद् हो उठे। थोडी देर रुककर उन्होने पूछा, "कित्तूर मे आनेवालो को आप वापस नही भेजते, दीवानजी ?"

वह बोले, "कित्तूर की मिट्टी में बडी चिपक है, शास्त्रीजी।"

"उससे भी अधिक चिपक यहा के लोगो के हृदय मे है, दीवानजी!"

निमन्त्रित व्यक्तियो के चले जाने पर गुरुसिद्दप्पा ने धीरे-से शास्त्रीजी के कान में कहा, "कल महाराज से भेंट के लिए बुलावा आवेगा। तैयार रहियेगा।"

सगीताचार्य को राज-दरबार में जो सम्मान प्राप्त हुआ, उसे देखकर वेंकटराय की पत्नी पद्मावती को बहुत आनन्द हुआ। वह बोली, "शास्त्रीजी, आपकी गोष्ठी मे जाने का सौभाग्य मुझे प्राप्त नही हुआ।"

"अच्छा!" विस्मय से शास्त्रीजी ने कहा, फिर बोले, "जब आपकी सुनने की इच्छा होगी तभी मै वीणा बजाकर सुना दूगा। कहे तो अभी बजाऊ ?"

"नही, इस समय नही। आप थके हुए है। कल पूजा के समय जितनी देर चाहे, सुनाइयेगा।"

अगले दिन शास्त्रीजी ने पूजा शीघ्र ही प्रारम्भ करके देर तक वीणा

वजाई और पद्मावती की इच्छा पूरी की।

दोपहर के समय वेंकटराय ने घर आकर उत्साहपूर्वक कहा, "शास्त्रीजी, हमारे महाराज आपके सगीत पर मुग्ध हो गए हैं।"

शास्त्रीजी ने प्रसन्न होकर कहा, "सव मा सरस्वती की कृपा है। इस वीणा के तारो पर मेरी उगलिया चलती है, किन्तु श्रोताओ की हृत्तन्त्री के तारो को वही वजाती है।"

"तीसरे पहर चार वजे आपको महाराज के दर्शन के लिए जाना है।"

"आप भी तो चलेगे न ?"

"नही, जव महाराज किसीको दर्शन देते है तव हममे से कोई भी वहा नही रहता। क्यो, क्या अकेले जाते आपको डर मालूम होता है ?"

"नही, डर की तो कोई वात नही है। यहा के राज-दरवार के नियम-कायदे मैं नही जानता। जानकारी के अभाव मे कही मुझसे कोई अशिष्टता न हो जाय।"

आप तो श्रीरगपट्टण के राज-दरवार में रहे हैं। राज-दरवार के नियमो को अच्छी तरह से जानते होगें। आपको भला क्या वताना है।"

"यह तो आपका अनुग्रह है। माता पद्मावती के हाथ के भोजन का प्रभाव है।"

"नही शास्त्रीजी, यह सव आपकी विद्या का प्रभाव है।"

"विद्या के कचन होने पर भी उसके लिए माता के आशीर्वाद की पुट चाहिए।"

तभी पद्मावती वोली, "शास्त्रीजी, मैं तो आपकी पुत्री हू।"

"हा, माताजी, जैसे मा वच्चो को अक्षर सिखलाती है वैसे ही सरस्वती ने मुझे सगीत का प्रारम्भिक पाठ पढाया। अव वही मेरी गोद में वच्चे की तरह वैठकर सगीत के स्वरो को मेरी वीणा से प्रस्फुटित कराती है।"

वेंकटराय ने चार वजे से कुछ पहले ही अपने एक सिपाही के साथ शास्त्रीजी को राजमहल में भेज दिया। राजमहल के सेवक शास्त्रीजी को अपने साथ अन्त पुर के अन्दर ले गए।

भीतर के कक्ष मे शास्त्रीजी थोडी ही देर बैठे थे कि महाराज गुरुसिद्दप्पा के साथ आये।

महाराज ने दूर खडे हुए शास्त्रीजी को बुलाकर पास बैठाया। उनके बैठते ही गुरुसिद्दप्पा चलने को तैयार हो गए। महाराज ने कहा, "आप जाइए नही, यही रहिए।" फिर शास्त्रीजी से बोले, "शास्त्रीजी, आपकी वीणा सुनकर हमको बहुत आनन्द हुआ। उसे स्वय ही आपसे कहने के लिए हमने आपको बुलवाया है।"

"मै कृतार्थ हुआ, महाराज।" शास्त्रीजी ने विनय के साथ कहा।

"हमारी इच्छा है कि आप कित्तूर मे ही रहे। कृपया स्वीकार करे।"

"आपकी आज्ञा शिरोधार्य करना मेरा अहोभाग्य होगा।"

महाराज ने थोडी देर मौन रहने के बाद पूछा, "दीक्षितजी कैसे है?"

"अच्छी तरह है।"

"कित्तूर कब आने का विचार है?"

"इस बारे में उन्होने मुझसे कुछ नही कहा।"

"शास्त्रीजी, दीक्षितजी राज्य के सेवक होने के साथ ही मेरे अन्तरग मित्र भी रहे है।"

"महाराज, दीक्षितजी आपकी मैत्री की सदा प्रशसा करते है।"

महाराज का ध्यान एकदम पीछे चला गया। बोले, "शास्त्रीजी, दीक्षितजी के ऊच-नीच ज्ञान के बारे मे एक घटना सुनाता हू। एक दिन हम दोनो ने मनोरजन के लिए तलवार से लडना प्रारम्भ किया। दीक्षितजी के मुकाबले का तलवार के हाथ जाननेवाला हमारे राज्य मे ही नही, सारे भारत में भी शायद ही मिले। लडाई में हम दोनो बराबर छूटने वाले थे कि अकस्मात् दीक्षितजी के हाथ से तलवार फिसलकर गिर पडी। दीक्षितजी ने अपनी हार मान ली, किन्तु हमको विश्वास नही हुआ। हमने कहा, 'इस तरह की जीत को हम नही मानते, दीक्षितजी। तलवार हाथ मे लीजिए।' दीक्षितजी बोले, 'महाराज, प्रजा मे राजा की हार नही होनी चाहिए।' हमने कहा, 'इस समय हम राजा और प्रजा के भाव से नही लड रहे है, समान बल के शूरो

के रूप मे लड रहे हैं । यदि आप तलवार हाथ मे नही पकडेंगे तो हमारी मैत्री का अपमान होगा ।' पर वह नही माने । उनकी युद्ध-कला की प्रशसा किन शब्दो मे करू । दाव-पेच और आत्मरक्षा के लिए उनकी होशियारी देखते ही बनती थी ।"

"लेकिन अब दीक्षितजी मे वह कस नही रहा।" शास्त्रीजी ने कहा ।

"उनको चिन्ता जो लगी है ।"

"जी हा, उनको राज्य की ओर से बडी चिन्ता है । सदा सोचते रहते हैं कि मराठे और अग्रेज न जाने कब राज्य को निगल जाय ?"

"मराठो का उपद्रव समाप्त होने लगा है । अग्रेजो के साथ सन्धि हो जाने की सम्भावना है । हमारी बडी इच्छा है कि युवराज को गद्दी सौंपें तबतक कित्तूर राज्य पर कोई आच न आने पावे ।"

"दीक्षितजी का मानना है कि अग्रेजो पर विश्वास नही किया जा सकता ।"

"आपकी क्या राय है ?"

"टीपू सुलतान के साथ अग्रेजो ने जो अमानुषिक व्यवहार किया, उसे मैं कभी नही भूल सकता । जैसा दीक्षितजी कहते है, हमारी कुशल इसीमें है कि हम किसी भी विदेशी के पैर अपने देश में न जमने दें ।"

"आप ठीक कहते है । जिन अग्रेजो ने आधा भारतवर्ष निगल लिया, उनके सामने हमारा राज्य कहाँ तक टिका रह सकता है ?"

"बचा हुआ तो आधा हमारे हाथ मे ही है न ?"

"होने से क्या हुआ ? हममें एकता नही । टीपू सुलतान को मराठे तग न करते तो अग्रेजो को दक्षिण में जगह मिलती ?"

शास्त्रीजी ने गभीर होकर कहा, "हमे एकता पैदा करनी चाहिए, लोगो में जागृति फैलानी चाहिए। भारत के सिंहद्वार पर अग्रेजो के झडे को फहराने का किसी भी हालत मे अवसर नही आने देना चाहिए ।"

"शास्त्रीजी, आपका ज्वलत देश-प्रेम अनुकरणीय है ।"

इसका शास्त्रीजी क्या उत्तर देते । चुप रहे ।

विषय बदलते हुए महाराज ने कहा, "शास्त्रीजी, आपकी वीणा हमारी रानियों को बहुत पसन्द आई ।"

"मैं अनुगृहीत हुआ, महाराज ।"

"हमारी रानी चेन्नम्मा और पुत्रवधू वीरव्वा की आपसे वीणा सीखने की बड़ी इच्छा है ।"

"महाराज, वीणा स्त्रियों के ही बजाने का वाद्य है । उनका कोमल वादन मा सरस्वती को आनन्दित करता है ।"

"क्या मैं छोटी रानी से कह दू कि आप उनको शिष्या बनाना स्वीकार करेंगे ?"

"जैसी महाराज की इच्छा । सिखाने के लिए दो वीणाए चाहिए । एक शिष्य के लिए और एक गुरु के लिए ।"

"कहा मिलेगी ?"

"मैसूर के गिरियप्पा की वीणाएँ ससार में प्रसिद्ध है ।"

वीणाओं के खरीदने की आज्ञा देते हुए महाराज ने कहा, "दीवानजी, कल ही आदमी मैसूर भेजकर दो वीणा मँगा दीजिये (कुछ रुक कर) शास्त्रीजी के निवास और भोजन का ठीक प्रबन्ध कर दीजिए । इनकी सेवा के लिए चार भरोसे के आदमी रख दीजिये । हमारे दरबार के विद्वानो को जो प्रतिष्ठा प्राप्त होनी है, वह इनको भी मिले । द्वारपाल से कह दीजिए कि जब-कभी ये महल मे पधारें, इनको न रोके । विद्वानों के सम्मान मे कित्तूर किसीसे पीछे न रहे ।"

शास्त्रीजी समझ नही पा रहे थे कि महाराज के दिए सम्मान के लिए किन शब्दो मे कृतज्ञता प्रकट करें । उनकी वाणी अवरुद्ध हो गई ।

इसके बाद महाराज अन्त पुर चले गए । शास्त्रीजी को अपने मौन पर बड़ा दुःख हुआ । वे दीवानजी से बोले, "दीवानजी, मुझे बड़ा खेद है कि महाराज के प्रति अपनी कृतज्ञता भी प्रकट नही कर पाया ।"

दीवानजी ने सात्वना देते हुए कहा, "शास्त्रीजी, महाराज ने आपके

मन को अच्छी तरह समझ लिया है, आप दुख न मानें।"

× × ×

शास्त्रीजी के वीणा-वादन पर नटी कलावती भी सिर हिलाने लगी थी। जबसे उसने महल मे शास्त्रीजी का सगीत सुना था, तब से वह पागल-सी हो गई थी। उसने मल्लप्पाशेट्टी से हठ की कि मै भी शास्त्रीजी से सगीत सीखूगी। वह मल्लप्पाशेट्टी की रखैली थी। मल्लप्पाशेट्टी ने जब यह बात शास्त्रीजी से कही तो उनको स्वीकार करना पडा। उन्होने सोचा कि यहा मल्लप्पाशेट्टी का बडा अधिकार है। उसको अप्रसन्न करके काम नही चलेगा। उन्होने यह भी सोचा कि मल्लप्पाशेट्टी से निकट सबध रखने के लिए सगीताध्यापन द्वारा अच्छा अवसर मिलेगा।

: ५ :

राजधानी के सब समाचार चिदम्बर दीक्षित को समय पर पहुँचते रहते थे। दीक्षितजी के गुप्तचर कित्तूर के राजमहल तथा बडे अधिकारियो के घरो मे भी लगे हुए थे। बडे दीवान गुरुसिद्दप्पा भी समय-समय पर दीक्षित-जी को राजधानी के समाचार भेजते रहते थे।

उस दिन सदाशिव शास्त्री के पत्र को दीक्षितजी ने तीन चार बार पढा। फिर तुलजम्मा को बुलाकर बोले, "शास्त्रीजी का पत्र आया है।"

"पद्मावती के बारे मे कुछ लिखा है ?"

"हा।"

यह कहकर दीक्षितजी पत्र सुनाने लगे, "सौभाग्यवती रानी चेनम्मा और उनकी पुत्रवधू वीरम्मा का सगीतपाठ भली प्रकार हो रहा है। रानी-जी के बारे में आपकी जो राय थी, उसमें तनिक भी अतिशयोक्ति नही है। इसमें कोई सन्देह नही कि वह कित्तूर की राज्यलक्ष्मी हैं। राज्य के प्रत्येक काम में महाराज उनकी सलाह लेते हैं। बडी रानी सौभाग्यवती रुद्रव्वा की माता नीलम्मा चेनम्मा रानी से ईर्ष्या करती है। मल्लप्पाशेट्टी और वेंकट-राय नीलव्वा के महल में आते-जाते रहते हैं। यहा का किलेदार शिवबसप्पा भी मल्लप्पाशेट्टी के साथ बडी घनिष्टता रखता है। चेन्नम्मा रानी ने आठ महीने में ही सगीत मे जो प्रगति की है, उसमे मुझे बडा आश्चर्य होता है। वह अबतक बाईस कीर्तन सीख चुकी है। कभी-कभी वह मुझसे राज्य की हानि-लाभ के विषय में चर्चा करती रहती है। अमटूर का सैदनसाहब कित्तूर की मस्जिद के जीर्णोद्धार के लिए आज्ञा माग रहा था। उसकी प्रार्थना को मल्लप्पाशेट्टी और वेकटराय ने अस्वीकार कर दिया था। बडे दीवान गुरु सिद्दप्पा ने भी मस्जिद के जीर्णोद्धार के विषय में उत्साह नही दिखलाया। सैदनसाहब रानी चेन्नम्मा से मिला। उन्होंने अपनी जेब से दस हजार रुपये उसे देकर कहा, "जिस प्रकार हिन्दू तथा जैनमदिर भगवान के पूजा-स्थान है

उसी प्रकार भगवान की पूजा मस्जिद में भी होती है। किसी भी नाम से पुकारें एक वही भगवान उत्तर देता है।' रानी के इस उदार दृष्टिकोण से मुसलमानी प्रजा को बडा सतोष हुआ है। केवल नीलव्वा क्रोध मे भरकर चिल्ला उठी, 'इस वश के ११वे देसाई मल्लसर्ज (महाराज) ने मुसलमानो को खुशी करनेवाली को अपनी रखैली बनाकर धर्म का सत्यानाश कर दिया। रानी चेन्नम्मा मस्जिदो का जीर्णोद्धार कराकर हिन्दू धर्म की जड पर कुठाराघात कर रही है।'

"आप और माता तुलजम्मा त्योहार पर नही आए, इसलिए आपकी बहन को बडा दुख हुआ। कम-से-कम माताजी को ही आप दो-चार दिन के लिए इधर भेज दें तो आपकी बहन के मन को शाति मिलेगी।"

पत्र पूरा होने पर दीक्षितजी ने पत्नी की ओर देखकर कहा, "सुना ?"

"हा, सुना।"

"कित्तूर कब जाओगी ?"

"जब आप चलेंगे।"

"मुझपर भरोसा कैसे करोगी ?"

तुलजम्मा ने उत्तर दिया, "आपपर नही तो और किसपर भरोसा कर सकती हूँ। कित्तूर राज्य ही आपके भरोसे पर है।"

"रानी चेन्नम्मा भी तो मल्लसर्ज देसाई से कहा करती थी, 'कित्तूर राज्य ५ ही के भरोसे है।'"

× × ×

उस दिन जब महाराज ने अन्त पुर में प्रवेश किया तो उनका मुख मलिन था। उनको आता देखकर चेन्नम्मा ने वीणा नीचे रख दी।

"वीणा बजाना क्यो बन्द कर दिया, चेन्ना ? राजनीति के इस झझट में तुम्हारी वीणा ही मुझे शाति प्रदान करती है।" महाराज ने कहा। चेन्नम्मा ने वीणा उठाकर सहाना राग बजाया और उसके समाप्त होने पर फिर वीणा नीचे रख दी। राजा ने धीरे-धीरे से पचम के तार पर उगली फेरी।

"महाराज, आज आप इतने खिन्न क्यो है ?"

"क्या बताऊ। इधर कुआ है, उधर खाई।"

"क्यो, क्या मन्त्रिमडल मे कुछ वाद-विवाद हो गया ?"

महाराज ने दुखित स्वर म कहा 'पेशवा बाजीराव ने नांडू के कार्तिकस्वामी के मदिर का दर्शन करके गोडूर, कम्पली, होमपेट, बागल-कोट और गोर्ल होसूर होते हुए अब कृष्णा नदी के तट पर पडाव डाल रखा है। कित्तूर के आस-पास के जागीरदारो और मेरे आजन्म वैरी शगणिगी के पाटील अल्लप्पागौडा ने मेरे विरुद्ध शिकायत करके पेशवा के कान भर दिये है। मन्त्रिमडल की राय है कि मै तुरन्त पेशवा से मिलू और वास्तविक स्थिति उन्हे बताऊ।"

"दीवानजी की क्या राय है ?"

"उनकी राय है कि पेशवा के पूना पहुच जाने के बाद मै वहा जाकर उनसे मिलू तो अच्छा होगा।"

"आखिर तय क्या हुआ ?"

"मैने मल्लप्पाशेट्टी, वेंकटराय और शिवबसप्पा, इन सबके विरुद्ध जाना ठीक नही समझा और निश्चय किया कि तत्काल जाकर भेट करू ?"

"सारा परिवार भी आपके साथ चलने को तैयार रहे ?"

"मन्त्रिमडल की राय है कि थोडे ही साथियो को लेकर मेरा पेशवा से मिलना श्रेयस्कर होगा। मद मे डूबे हुए पेशवा को क्रोध का अवसर देना उचित नही।"

यह सुनकर चेन्नम्मा का चेहरा मुरझा गया। राजा के एकदम निकट आकर बोली, "क्या मुझे भी नही जाना चाहिए ?"

"चेन्ना, तुमको तो मालूम ही है कि सैदन की मस्जिद के मामले को लेकर कितना विरोध है। तुम और मै, दोनो राजधानी से चले जायगे तो मस्जिद का काम अधूरा रह जायगा। नीलव्वा इसी समय अपना धर्म-द्वेष प्रकट करेगी।"

"आप जल्दी लौट आवेंगे न ?"

"हा एक सप्ताह मे आ जाऊगा।"

चेन्नम्मा के मन मे वडा तूफान मचा हुआ था, पर यह सोचकर कि राजा के अशात मन को और अधिक दुखी नही करना चाहिए, उसने अपनी मौन स्वीकृति दे दी।

अगले दिन प्रात काल महाराज ने थोडे-से सलाहकारो को साथ लेकर पेशवा बाजीराव से भेट करने के लिए येडूर की ओर प्रस्थान किया। इधर राजा की सफलता के लिए रानी चेन्नम्मा के आदेश पर राज-मदिर के घटे-घडियाल एक साथ वज उठे।

: ६ :

महाराजा को गए एक सप्ताह बीत गया, पर उनकी कोई खबर न आई तो कित्तूर की प्रजा अपने महाराज के कुशल समाचार जानने के लिए आतुर हो उठी। म लय के सामने लोगो की भीड लगी रहती जो वह राजा के समाचार पूछती।

उधर रानियो के आसू नही थमते थे। रानी रुद्रव्वा ने नी अनशन प्रारम्भ कर दिया।

इस प्रकार दस दिन बीत गए। कोई खबर न आई। रानी चेन ने गुरुसिद्दप्पा को बुलाकर कहा, "दीवानजी, आप स्वय जाये और महाराजा का समाचार लाइए। मुझे डर है कि वह कही किसी षड्यन्त्र के शिकार न हो गए हो।"

"जैसी आज्ञा।"

गुरुसिद्दप्पा अगले दिन प्रातःकाल येडूर को रवाना हो गए। उनके जाने के चौथे दिन एक घुडसवार ने आकर रानी चेन्नम्मा को एक पत्र दिया। पत्र पढते-पढते रानी के पैरो के नीचे से धरती खिसकने लगी। पर उन्होने अपनेको सभाला और तुरन्त युवराज शिवलिग रुद्रसर्ज, मल्लिसर्ज तथा बडी रानी को बुलाकर वह पत्र उनके सामने रख दिया। यह दीवान-जी का पत्र था।

मल्लप्पाशेट्टी ने उसे हाथ मे लेकर सबको सुनाया। लिखा था—"जब मैं येडूर पहुचा तो पेशवा और महाराज वहा से प्रस्थान कर चुके थे। पूछने पर मालूम हुआ कि पेशवा महाराज को अपने साथ पूना ले गए। उसी समय मैं पूना को चल पडा। वहा जाकर मालूम हुआ कि महाराज को पेशवा ने मघोलकर की हवेली मे कैद कर दिया है। लोगो ने महाराज के विरुद्ध पेशवा को भडकाकर उसके मन मे यह बात बैठा दी थी कि हमारे महाराज धर्म-विरोधी है। मैं पेशवा से मिला और जब मैंने उन्हे असली

वात वताई तो पेशवा ने अपनी भूल स्वीकार की । मैंने पेशवा से प्रार्थना की कि महाराज को तुरन्त मुक्त कर दे । उन्होंने कहा कि हम लोग सधि की शर्तें तय कर ले । जो शर्तें उन्होंने हमारे सामने रखी, वे बिल्कुल अपमान-जनक थी । उनकी मुख्य शर्त यह थी कि हमारी रक्षा के लिए पेशवा कित्तूर म मराठा सेना रखेगे और उसका सारा खर्च हमे उठाना पडेगा। मैंने यह शर्त्त स्वीकार नही की । पर अन्त मे कोई चारा न देखकर यह वात मान ली कि हम प्रतिवर्ष एक लाख पचहत्तर हजार रुपये पेशवा को दे । देर होने से महाराज के स्वास्थ्य को भी खतरा पहुचने का डर था। शर्त्त मानने पर महाराज को छोड दिया गया ।

"जब हम पूना से चले तो महाराज बीमार पड गए। पेशवा की दी हुई डोली मे महाराज लेटे ए थे । जैसे-तैसे हम लोग येडूर पहुँचे । वहा जाकर महाराज ने वीरभद्रस्वामी की पूजा करके जगमदासोह नामक व्रत किया । इस समय हम दुरदुडी मे हैं । अच्छा होगा कि अन्त पुर के सब लोगो के साथ मत्रिमडल यहाँ आ जाय ।

"महाराज की हालत चिन्ताजनक है । किन्तु निराश होने की कोई वात नही। मैं चाहता ँ कि भगवान की कृपा से वह जल्दीही नीरोग हो जाय ।"

पत्र सुनकर सवने निश्चय किया कि तुरन्त चल पड़ें ।

× × ×

राजमहल के लोग जब दुरदुडी पहुँचे तबतक महाराज की दशा और भी बिगड गई थी । उन्होंने मुस्कराते हुए सवका स्वागत किया और डवडवाई आखो से कहा, "जो पैदा हुआ है, वह एक दिन मरेगा भी । इसके लिए दुख क्यो ? आप लोगो ने भी हमारी ही तरह कित्तूर के गौरव की रक्षा का बीडा उठाया है । युवराज अव वडे हो गए हैं । उनको उत्तराधिकारी वनाइए । गुरुसिद्दप्पाजी, युवराज अभी नासमझ हैं । उनको उचित सलाह देकर आदर्श राजा वनाने की जिम्मेदा ी आपपर है । युवराज, अपनी माताओ का दुख दूर करना तुम्हारा फर्ज है ।"

महाराज के ये शब्द सुन कर सबके हृदय उमड आये।

महाराज को डोली में लिटा कर सब लोग बेल्वडी पहुँचे। [illegible]
ने वीरभद्रस्वामी की पूजा करके जगमदासोह करने की इच्छा की।

महाराज तथा उनके परिवार का पडाव बेल्वडी में पडा था, [illegible]
जी भी आ गए। महाराज ने सबको बाहर भेजकर दीक्षितजी [illegible]
सिद्दप्पा को बुलाकर पास बैठाया। महाराज की दशा देखकर [illegible]
आखें भर आई।

महाराज हँसकर बोले, "क्यो, मेरे परशुरामजी [illegible]

इतना कहकर महाराज क्षणभर को चुप हो गए। फिर [illegible]
बड़ा दुख था कि आप नही मिले। अब मै निश्चिन्त होकर [illegible]
प्राप्त कर सकता हूँ।"

दीक्षितजी ने अवरुद्ध कठ से कहा, "हमको अनाथ [illegible]
जाइए, महाराज।"

"दीक्षितजी, कित्तूर, युवराज, रानिया और प्यारी प्रजा, [illegible]
और गुरुसिद्दप्पा के हाथो में सौपता हूँ। हमारे आदमियो मे स्वार्थी [illegible]
भरे हुए है। आप इस बात को देखते रहे कि कित्तूर उनके हाथो मे [illegible]
ससार के तिरस्कार का पात्र न बने।"

देवपूजा समाप्त होने पर महाराज स्वजन-मडली के साथ कित्तूर
के लिए चल पडे। कित्तूर पहुँचने पर दुर्ग की बुर्जियो से ३४ तोपो की सलामी
हुई। महाराज ने शिवलिंग रुद्रसर्ज से पूछा, "ये तोपे क्यो छूट रही है?"

"महाराज के आगमन की खुशी में प्रजा के आनन्द का ठिकाना नही
है। आपके राज्य के ३४ वर्षो की सूचक ३४ तोपे दागी गई है।"

अगले दिन महाराज ने चौकीमठ में जाकर सौ गायें जगमो[२] को
दान की।

---

१. लिंगायतों में शिवसान्निध्य स्वर्गवास या मृत्यु को कहते हैं।

२ लिंगायत संन्यासी।

उसी रात को महाराज की दशा शोचनीय हो गई। राजमहल में चारों ओर विपाद की छाया छा गई। महाराज की शैय्या के चारो ओर रानिया, युवराज, गुरुसिद्दप्पा, दीक्षितजी और सभासद खडे थे। राजमल मे से वाहर सारा कित्तूर ही उमड पडा था।

रविवार के प्रात काल महाराज की अवस्था और विगड गई। राज-गुरु जोर से शिव पचाक्षरी (नम शिवाय) का जप कर रहे थे।

सूर्योदय के समय महाराज की जीवन-लीला समाप्त हो गई।

दुर्ग की वुर्जियो से स्वर्गवासी नरेश को श्रद्धाजलि के रूप में पचास तोपें छोडी गईं।

राजा का शव अलकृत करके राजसभा-मदिर मे लाकर रखा गया। अन्तिम दर्शन के लिए कित्तूर के प्रजा-जनो की अपार भीड लग गई। रानी चेन्नम्मा ने अपने पति पर मोतियो की आरती उतारी। सात खड की अर्थी वनाई गई। उसके भीतर चादी की मूर्त्तिया रखी गईं। उसमें राजा का शव रख कर सारे नगर में घुमाया गया। अनन्तर उसे कलमठ[1] मे ले गये। वहा समाधि खोद कर उसकी दीवारो पर कस्तूरी और मार्जारकस्तूरी का लेप करके महाराज को उसमें सदा के लिए सुला दिया।

मिट्टी की काया मिट्टी मे मिल गई। किन्तु महाराज का महान् प्रताप, निर्मल अन्त करण और विद्वत्प्रेम अजर-अमर हो गया।

---

१ लिगायत लोगों में शव को दफनाने का रिवाज हैं और उनके समाधि-स्थल को 'कलमठ' कहते हैं।

: ७ :

कित्तूर-सूर्य के अस्त होते ही वहा अन्धकार घनीभूत हो गया। लोगों के चेहरो पर उदासी की घटाए दिखाई देती थी। व्यापार बन्द हो गया। किसान खेती का काम भूल गए। पुरवासी राजमहल के सामने बैठे, अनाथ बालको की तरह बिलखते थे। रानी रुद्रव्वा ने अपना सिर फोडकर प्राण देने का निश्चय कर लिया। भूमि पर पटक-पटक कर उन्होंने माथा रक्त-रजित कर लिया।

महल की छोटी खिडकी के पास खडी होकर रानी चेन्नम्मा ने जनता की ओर निहारा। उनके हृदय से दुख का सागर उमडा पडता था, किन्तु उसे दबाकर उन्होंने बडी रानी को सात्वना देते हुए कहा, "बहन, आप राजमाता है। आप ही यो अधीर हो जायगी, तो आपके हजारो बच्चे किसकी शरण में जायगे ?"

"चेन्नावहन, मुझे मत रोको। मैं स्वामी के बिना एक घडी भी नहीं जी सकती।"

चेन्नम्मा ने कहा, "अपना कर्त्तव्य याद कीजिए। कित्तूर की गद्दी सूनी नही रहनी चाहिए। तुरन्त युवराज के राज्याभिषेक की तैयारी होनी चाहिए। राजमाता को स्वय खडी होकर यह शुभकार्य कराना चाहिए।"

"नही चेन्ना, मुझसे कुछ भी नही होगा। मुझे मरने के लिए छोड दो।"

राजमहल में किसीमें भी इतना धीरज नही था कि रुद्रव्वारानी के साथ रह सके। चेन्नम्मा को बडी चिन्ता थी। वे सोचने लगी कि महाराज तो गए ही, अब क्या बडी बहन को भी खोना पडेगा ? यही चिन्ता उन्हे खाये जाती थी। ऐसी सकट की घडी मे उन्होने चिदम्बर दीक्षित को बुलवाया।

दीक्षितजी का शरीर सिह की भाति था। वह किसीके भी दुख से विचलित होना नही जानता था, न किसी भी चोट के आगे झुकना। पर

वही आज वडी रानी की दु ख-ज्वाला से सतप्त हो उठा। रानी को देखते ही दीक्षितजी की वेदना उमड पडी । लेकिन उन्होने तत्काल अपनेको मुस्थिर किया और दु ख के वेग को दवाकर वोले, "माता !"

रुद्रव्वा ने दुर्वल वच्चे के समान अपने मतप्त नेत्र उठाकर दीक्षितजी की ओर देखा ।

दीक्षितजी ने आगे कहा, "माता, हमारे महाराज के जाने, हमारे देश के कीर्त्तिचन्द्र के अस्त हो जाने के वाद अव किस आशा के सहारे हम जीये ? किस सुख के लिए इन प्राणो को रखे ? जीवन के जो दिन वचे हैं, उनमें क्या सुख हम देख सकेंगे ? क्या शाति पा सकेंगे ? किन्तु फिर भी हमें जीना ही चाहिए। आपको, मुझे और कित्तूर की सारी प्रजा को जीना ही चाहिए। कैलास में शिव के समीप महाराज की आत्मा को शाति पहुचाना हमारा कर्त्तव्य है। इस वडे काम का वोझ महाराज हमारे कवो पर डाल गए है। युवराज के राज्याभिषेक में अव देर नही होनी चाहिए। प्रमाद का अर्थ होगा कित्तूर के शत्रुओ को वुलावा देना। कित्तूरावीश स्वर्गवासी हो गए। आओ हम सव मिलकर ऐसा जयघोष करें कि शत्रुओ छाती दहल उठे। माताजी, यह समय दुख मानने का नही है। उठिए, युवराज को आशीर्वाद देकर कित्तूर के वच्चो की रक्षा कीजिए।"

शोक-विह्वल होकर वडी रानी ने कहा, "वडे भैया, मुझपर दया कीजिए।"

"नही माताजी, हमे तकदीर से लडना है। कर्त्तव्य का जुआ कवे पर रखकर मरना वीरो का काम है। दुख का शिकार वनकर तो कायर मरते है। क्या हमे इस वात का गर्व नही होना चाहिए कि मल्लसर्ज महाराज की इस वीरभूमि मे कायर नही है ?"

"भैया, मुझे भूल जाइए।"

"हमारी जिस राज्यलक्ष्मी ने टीपू सुलतान जैसे वीर का मजबूती से सामना किया था, उसे हम कैसे भूल सकते है। ऐमा ही था तो आपने अपना दूध पिला कर हमें शूर क्यो वनाया ? अमत के वदले विपपान क्यो न

कराया था ? शूर बनाने के बदले कायर क्यो नही बनाया था। [illegible] बार अपने कित्तूर पर निगाह डालते, उसपर [illegible] गिद्धों की [illegible] ओर देखिए। आशा-भरी आखो मे आपकी ओर ताकने अपने बच्चों [illegible] निहारिए। कित्तूर, आज नही तो कल, बलि-वेदी बन जायगा। [illegible] अपना सर्वोत्तम देन देनी है।"

कहते-कहते दीक्षितजी का चेहरा तेज मे दीप्त हो उठा। [illegible] उठी। रानी रुद्रव्वा ने गर्दन उठाकर दीक्षितजी के [illegible] मुख-मडल को देखा। ऐसा प्रतीत हुआ, मानो उस वृद्ध ब्राह्मण [illegible] से शौर्य की किरणे फूट रही हो। रानी रुद्रव्वा [illegible] दीक्षितजी की ओर देखकर बोली, "दीक्षितजी, आप विश्वास [illegible], [illegible] की रानी कभी कर्त्तव्य के रास्ते से नही हटेगी।"

रानी चेन्नम्मा बडी बहन के इस आश्वासन से रोमांचित [illegible]। उन्होने तत्काल उन्हे आलिगन म भर लिया।

इसके बाद राज्याभिषेक की विधि में देर नही की गई। [illegible] दीक्षित ने गुरुसिद्दप्पा को सलाह दी, "उत्सव की विधियां यदि [illegible] ही हो जाय तो ठीक है। युवराज को तुरन्त सिहासन पर बैठा देना चाहिए। रानी चेन्नम्मा ने भी उनकी इस सलाह का समर्थन किया।

कित्तूर राज्य के सब ग्रामो में राजदूतो द्वारा राज्याभिषेक का शुभ समाचार भेजा गया। नगर मे ढिढोरा पिटवा कर पुरवासियो को तोरणो द्वारा घरो को सजाने की सूचना दी गई।

लोगो को यह जानकर बडी प्रसन्नता हुई कि कित्तूर पर छाये काले बादलो के दूर होने का समय आ गया। नगर के सभी मार्ग लोगो ने दिल खोलकर सजाए, प्रत्येक घर को सफेदी से पोतकर गेरू से भाति-भाति के चित्र अंकित किये, चौराहो पर मडपो का निर्माण किया और बाजारो मे सुन्दर द्वार बनाये गए। नगर के धनिको ने महोत्सव के लिए बाहर से आये हुए अतिथियो के भोजनादि की व्यवस्था की।

राज्याभिषेक के दिन प्रातःकाल युवराज शिवलिगरुद्रसर्ज ने स्नान

किया, माताओ, राजगु , वृद्ध गुरुसिद्दप्पा और चिदम्बर दीक्षित को प्रणाम किया, सैनिको की सलामी ली और समस्त पुरवासियो के सम्मुख सिंहासन पर आसीन हुए। नगर के प्रमुख व्यक्तियो ने आकर अपने नए महाराज को भेटे दी ।

राजा के सामने भांति-भांति के प्रदर्शन हुए। कुश्ती, तलवारो और भालो की लडाई, गाना-बजाना, सबकुछ हुआ। सदाशिव शास्त्री ने वीणा बजाई। कलावती ने नृत्य किया। राजा ने नगर के विशिष्ट व्यक्तियो, युद्ध-कला-प्रवीणो, राज-दरबार के पडितो और कवियो को यथायोग्य उपहार देकर गौरवान्वित किया ।

सायकाल को नए महाराज का मान-मर्यादा-पूर्वक घोडे पर चढकर जुलूस निकला। स्त्रियो ने आरती उतारी । धनिको ने चादी के सिक्को की बखेर की। शख, तुरही, ढोल, शहनाई, दमामा, आदि बाजो के नाद से आकाश गूज उठा ।

उस रात पुरवासियो ने जागरण किया। जहा देखो, वही उल्लास दीख पडता था । कही लावनी गाई जा रही थी, कही नाटक दिखाया जा रहा था, कही नट का तमाशा हो रहा था ।

जब सारा नगर हर्ष से सुधबुध खोकर उत्सव में मग्न था और रानी चेन्नम्मा, गुरुसिद्दप्पा और चिदम्बर दीक्षित कित्तूर के भविष्य के बारे में ...ार कर रहे थे।

: ८ :

मल्लसर्ज देसाई के निधन से खाली हुए राजसिंहासन पर उत्तराधिकारी शिवलिंगरुद्रसर्ज के आसीन हो जाने पर भी जनता का हृदयसिंहासन खाली रहा । दिवगत राजा का शौर्य, कला-प्रेम, रसिकता और प्रजा-प्रेम पुत्र में नही थे ।

शिवलिंगरुद्रसर्ज भरसक इस बात का प्रयत्न करते थे कि शासन में कोई त्रुटि न होने पाये, किन्तु उनको अनुभव नही था । वे चीजो को उनके हर पहलू से नही देख पाते थे । उनके पूर्वापर सबध से अनभिज्ञ थे । अत वे मल्लप्पाशेट्टी और वेंकटराय पर बहुत भरोसा करते थे । वैसे बडे दीवान के पद पर गुरुसिद्दप्पा ही थे, किन्तु राजा के मन्त्रिमडल में मल्लप्पाशेट्टी की ही चलती थी ।

बाहर की तरह महल के भीतर का वातावरण भी धीरे-धीरे बिगडने लगा । राजमाता रुद्रम्मा तो ध्यान-पूजा में लगी रहती थी । वह ससार से एकदम विरक्त हो गई थी और लौकिक बातो में उन्हें कोई रस न था । रुद्रव्वा की माता नीलव्वा अन्त पुर की सर्वेसर्वा थी । उनकी कमर झुकी थी और वह हर काम में टाग अडाकर अपनी प्रतिष्ठा बनाए रखने का यत्न करती थीं । राजमहल की पाकशाला की अध्यक्षा महान्तव्वा पर उनका बडा विश्वास था ।

यह सब देखकर गुरुसिद्दप्पा को बडा क्षोभ हुआ । उनके लिए यह बात भी कम दु ख की नही थी कि नीलव्वा सैनिको के दैनिक भत्ते और दीन-अनाथो की सहायता में भी किफायत कर रही थी ।

गुरुसिद्दप्पा ने प्रयत्न किया कि वह दीवान-पद से अवकाश ग्रहण कर लें, किन्तु चिदम्बर दीक्षित ने पत्र लिखकर उनको ऐसा करने से रोका । रानी चेन्नम्मा ने भी उनके इस विचार पर अपनी असहमति प्रकट की और उनसे वचन ले लिया कि किसी भी स्थिति में वह अपने पद से निवृत्त नही होगे ।

× × ×

दो वर्ष वीत गए। सन् १८१८ में पेशवा और अग्रेजो में युद्ध हुआ। पेशवा ने कित्तूर से सहायता मागी।

रानी चेन्नम्मा ने शिवलिंगरुद्रसर्ज को बुलाकर कहा, "वेटा, यह अच्छा है कि इस समय हम पेशवा की सहायता करें। अग्रेज हम दोनो के ही शत्रु है। पेशवा का पतन होने पर हमारा पतन अवश्यम्भावी है।"

शिवलिंगरुद्रसर्ज ने तत्काल उत्तर दिया, "माताजी, पूना के पेशवा हमारे आजन्म वैरी है। इस समय उनकी सहायता करने से हमारी गुलामी की श्रृखला कभी ढीली न पडेगी।"

रानी चेन्नम्मा ने गभीर होकर कहा, "वेटा, वेडियो के लिए हाथ फैलाना कौन-सी वुद्धिमानी है? हम पेशवा की विजय के लिए सहायता करें तो युद्ध के वाद गौरवपूर्ण सधि करके समानता का दावा कर सकते है।"

शिवलिंगरुद्रसर्ज पीछा छुडाना चाहता था। वोला, "माताजी, मै मत्रिमडल के निश्चय के अनुसार आचरण करूगा।"

मत्रिमडल की वैठक हुई। उसमें गुरुसिद्दप्पा ने रानी चेन्नम्मा की वात का समर्थन किया। पर मल्लप्पाशेट्टी ने उनका प्रवल विरोध करते हुए कहा, "मराठो पर विश्वास नही किया जा सकता। इस समय उन्हें हमारी सहायता की आवश्यकता है, इसलिए वे हमारी शर्तें स्वीकार कर लेंगे। पर सकट दूर होने पर वे हमे पहले की तरह सतायेंगे। पेशवा साम्राज्य के [illegible]टी में मिले विना कित्तूर सिर नही उठा सकता। उनका नामोनिशा [illegible] देने के लिए अग्रेजो की सहायता करना ही हमारे लिए श्रेयस्कर है।"

वेंकटराय ने भी मल्लपाशेट्टी के स्वर-में-स्वर मिलाया।

गुरुसिद्दप्पा वोले, "इस विषय में जल्दवाजी उचित नही। राज्य के परमहितैषी सेवक चिदम्वर दीक्षित और रामलिंगप्पा की भी राय जान लीजिए।"

राजा का मन वडे दीवान की ओर झुकता देखकर मल्लप्पाशेट्टी वोले, "दीवानजी, क्या आप भूल गए कि पेशवा ने हमारे महाराज को धोखे

से पूना ले जाकर कैद मे डाल दिया था और कित्तूर के मुह ... दी थी ? महाराज जब कित्तूर से गए तो भले-चंगे थे । पूना ... उन्होंने चारपाई पकड ली । इसीसे अनुमान होता है कि पेशवा ने उन्हें भोजन में विष मिलवा दिया था । हमारे महाराज की ... सबको दुख के अपार सागर में डूबोने वाले पेशवा को ... व्यवहार-सगत है ? पेशवा साम्राज्य मिट्टी मे मिलना ही चाहिए ।

बडे महाराज के अपमान की याद आते ही ... व्यग्र हो गया । वह क्रोध में भरकर बोले, "मल्लप्पाशेट्टी ... है, वह ठीक है । पेशवा-साम्राज्य मिट्टी मे मिलना ही चाहिए ।

गुरुसिद्दप्पा ने निराशा से सिर झुका लिया । ... पीकर रह गये ।

अग्रेजो ने बेलगाव के किले पर घेरा डाल दिया । ... सेनापतित्व में अग्रेजी सेना और पेशवा की मराठा सेना में ... मल्लप्पाशेट्टी के इशारे पर शिवलिंगरुद्रसज ने अग्रेजो ... और तोडेदार बदूको से सहायता दी ।

पेशवा की लगभग सपूर्ण सेना खेत रही । अग्रेजो ने बडे ... बेलगाव के किले पर यूनियन जैक फहराया और मराठा ... उतारकर फेंक दिया ।

कित्तूर से ठीक मौके पर सहायता मिली और अग्रेजो की विजय हुई, इसके लिए अपना सतोष प्रकट करते हुए जनरल मनरो ने कित्तूर को चिट्ठी लिखकर सूचना दी कि नई सधि की शर्तें तय करने के लिए प्रतिनिधि भेजें ।

मल्लप्पाशेटटी और वेंकटराय कित्तूर के प्रतिनिधि बनकर बेलगाव गए और जनरल मनरो के साथ निम्नलिखित सधि की शर्तें तय कर आये ।

१ देसाई को अबतक बीजापुर और पेशवा से जो प्रदेश प्राप्त है, उन्हें वह अपने अधीन रखें, इसके लिए हम अपनी सहमति प्रदान करते है । पहले के समान ही हम आपको सब गौरव प्रदान करेंगे । आपने पेशवा के साथ

युद्ध में हमारा पक्ष लिया, इसलिए हम पेशवा को दिये जानेवाले आपके दो वर्ष के कर के धन में से एक वर्ष का कर माफ करते हैं। शेष धन पहले की तरह हमें देते रहना होगा। हम इस बात को मान्यता देते हैं कि आप भूमिपति हैं। पेशवा की तरह ही हम भी आपको प्रतिवर्ष तीन हजार नौ सौ पचास रुपये के मूल्य की वस्तुए उपहाररूप में देंगे।

२. आपकी सनद में लिखे अनुसार आप चार सौ तिहत्तर घुडसवार और एक हजार पैदल सिपाही रखकर अबतक पेशवा की सेवा करते आये हैं। अब से हम आपको इस सब दायित्व से मुक्त करते हैं। इस सेना के खर्च के लिए आपको खानापुर का जो ताल्लुका जागीर में दिया गया था वह वापस ले लिया जायगा तथा जो २५ हजार रुपये वार्षिक दिये जाते थे, वे भी आगे नही मिलेंगे।

सधि की शर्तें सुनकर शिवलिंगरुद्रसर्ज अत्यन्त प्रसन्न हुए और ऐसी लाभदायक शर्तें कराकर आने के लिए राज-सभा में मल्लप्पाशेट्टी और वेंकटराय का बडा सम्मान किया।

गुरुसिद्दप्पा ने जब ये शर्तें रानी चेन्नम्मा को सुनाई तो वह आगबबूला हो गई। बोली, "अग्रेजो ने हमको माडलिक राजा बना दिया है। खानापुर ताल्लुके पर इनका कौन सा हक था? हमारे दीवानो ने पूना के पेशवा की दासता के बदले अग्रेजो की दासता स्वीकार कर ली।"

गुरुसिद्दप्पा ने दुखी होकर कहा, "रानी चेन्नम्मा, नए महाराज को [illegible]री बात हितकर नही मालूम हुई। अत यह सधि हो जाने के बाद बडे [illegible]वान का पद न्यायत मल्लप्पाशेट्टी को मिलना चाहिए। मैंने इस सधि [illegible] विरोध किया था। मैं उसको कार्यान्वित करने में असमर्थ हू।"

रानी चेन्नम्मा ने भृकुटी तानकर कहा, "दीवानजी इस सधि को नही चलने देना चाहिए।"

"सो कैसे? क्या विद्रोह करें?"

"यदि अनिवार्य हो जाय तो जरूर वैसा करें।"

"रानीजी, बिना सोचे-समझे कुछ नही करना चाहिए। चिदम्बर

दीक्षित हमारे मान्य है, समझदार है। मैंने उनके पास सब समाचार कहला भेजा है। उनकी राय मिलने के बाद ही हम आगे की अपनी रीति-नीति निर्धारित करेंगे।"

"लेकिन इस बीच मल्लप्पाशेट्टी और वेंकटराय के कार्य पूरी निगरानी रखनी चाहिए। उनकी प्रत्येक गतिविधि हमे मालूम होनी चाहिए।"

"इसकी व्यवस्था मैंने कर दी है। वेंकटराय के घर में जो कुछ होता है, वह मुझे सदाशिव शास्त्री से मालूम होता रहता है। मल्लप्पाशेट्टी के घर में होनेवाले षड्यन्त्रो की सूचना उनकी रखेली कलावती से मिलती रहती है।"

"शास्त्रीजी के विषय में मुझे कुछ भी सदेह नही है, किन्तु वह तो वेश्या है। उसपर भरोसा कैसे किया जा सकता है ?"

"वेश्या होने पर भी वह कलाकार है। कित्तूर की गौरवरक्षा के विषय में वह किसीसे पीछे नही है। मनरो और मल्लप्पाशेट्टी में गुप्त पत्र-व्यवहार होने की खबर उसीने मुझे दी थी।"

"गुरुसिद्दप्पाजी, यह तो साप को दूध पिलाने जैसी बात हुई।"

"लोभ बुरी चीज है, रानीजी। वह बडे-बडे बुद्धिमानो को भी बुद्धि-भ्रष्ट कर देता है।"

"राजा क्यो इस तरह से धोखा खा रहे है।" कहते-कहते रानी चेन्नम्मा की आखें डबडबा आईं।

: ९ :

जबसे मल्लप्पाशेट्टी मनरो के पास से नई शर्तें तय करके लौटे, तबसे उनपर शिवलिंगरुद्रसर्ज का विश्वास बहुत बढ गया। वह प्रतिदिन कुछ घंटे शेट्टी के घर में बिताने लगे।

धीरे-धीरे राजा के मन मे यह विचार भी उठा कि वयोवृद्ध गुरुसिद्दप्पा को पेंशन देकर उनके स्थान पर मल्लप्पाशेट्टी को दीवान पद दें, लेकिन यह देखकर कि जनता के मन में गुरुसिद्दप्पा के लिए बडा आदर है और रानिया उनको पितृभक्ति की दृष्टि से देखती है, वह इस विचार को कार्यान्वित करते डरते थे। उधर बडे दीवान की गद्दी पर बैठने का मल्लप्पाशेट्टी में साहस नही था। वह डरता था कि गुरुसिद्दप्पा को पदच्युत करने से जनता क्रोध से पागल हो जायगी और भडक उठेगी।

इसी समय अकस्मात् राजा बीमार हो गए। उन्होने शय्या पकड ली।

राजवैद्य बालप्पा पडित चिकित्सा कर रहे थे। पर उनका आयुर्वेद विद्या का अपार ज्ञान और अनुभव निष्फल सिद्ध हुआ। रोग ने भयकर रूप धारण करना प्रारभ किया। वैद्यजी किंकर्तव्यविमूढ हो गए।

राजा के बीमार पडने के आठवें दिन उनकी शय्या के पास ही मत्रिमडल की बैठक हुई। शिवलिंगरुद्रसर्ज निराशाभरी दृष्टि डालकर बोले, "मेरा अन्त निकट आ गया दीखता है। क्या कित्तूर के राजवश का मेरे बाद अन्त हो जायगा।"

गुरुसिद्दप्पा ने सात्वना देते हुए कहा, "नही महाराज, आप शीघ्र ही स्वास्थ्य लाभ करेंगे। बालप्पा पडित आपकी रक्षा के लिए यमराज से भी लडने को तत्पर है।"

पडितजी चुप रहे।

"नही दीवानजी, ब्रह्मा की दी हुई आयु को पडितजी नही बढा सकते।

हमारा जो होगा, हो जायगा, पर यह बताइये कि आगे कित्तूर का क्या होगा?"

गुरुसिद्दप्पा ने दुख के साथ कहा, "पुत्र गोद लेने के सिवा और कोई उपाय मुझे नही दिखाई देता।"

इतने में मल्लप्पाशेट्टी बोले, "पुत्र गोद लेने के लिए धारवाड के कलक्टर मिस्टर थैकरे की अनुमति लेनी होगी?"

उनका इतना कहना था कि रानी चेन्नम्मा की त्योरी चढ गई। बोली, "हमारे घरेलू मामलो में थैकरे हस्तक्षेप करनेवाले कौन होते है?"

"अब वह ही हमारे स्वामी है। पेशवा की जगह राज्य करनेवाले अग्रेज लोग ही हमारे मालिक है।"

चेन्नम्मा ने उसी उत्तेजित स्वर मे कहा, "झूठ, बिल्कुल झूठ! कित्तूर अग्रेजो को अपना स्वामी कभी स्वीकार नही करता।"

"अग्रेजो का विरोध करने की शक्ति कित्तूर में नही है, रानीजी।"

"कैसे नही है? हम देखेंगे। अग्रेज कित्तूर की परीक्षा लेना चाहते हो तो लेकर देख लें। बेलगाव के किले के घेरे के समय आपने उनकी सहायता न की होती तो एक भी अग्रेज बच्चा इस देश में ढूढे न मिलता।"

"पर ऐसा करने में राज्य का ही हित प्रमुख था।"

"मल्लप्पाशेट्टीजी, हमें अच्छी तरह मालूम हो गया है कि कित्तूर की कल्याण-कामना करनेवाले कौन है।"

इस अविश्वास पर मल्लप्पाशेट्टी ने तनिक तेज होकर कहा, "यह अच्छा नही है कि आप राज्य के मामलो में हाथ डालें।"

चेन्नम्मा ने प्रखर स्वर मे कहा, "कैसे अच्छा नही है! आप कित्तूर को परायो के हाथ बेच रहे हो तो क्या रानी यो ही हाथ-पर-हाथ धरे बैठी रहे?"

इसपर मल्लप्पाशेट्टी का पारा चढ गया। बोले, "जबान सभालकर बोलिये, रानीजी।"

गुरुसिद्दप्पा अबतक चुप बैठे थे। मल्लप्पाशेट्टी के इस वाक्य पर उन्होंने उबल कर कहा, "आप ही जबान सभालकर बोलें, मल्लप्पाशेट्टीजी।

आपने कित्तूर के महाराज के सामने राजमाता का अपमान करने का साहस कैसे किया ? अब आगे आपने एक भी शब्द मुह से निकाला तो मेरी तलवार आपका सिर धड से अलग कर देगी।"

अपमान से भुनते हुए मल्लप्पाशेट्टी की आखो से चिनगारिया झड रही थी, बोले, "मै देखूगा कि आप पुत्र कैसे गोद लेते है।"

इतना कहकर वह बाहर चले गए। गुरुसिद्दप्पा की आखो के इशारे को समझकर रामलिगय्या उनके पीछे-पीछे गया।

इसके बाद गुरुसिद्दप्पा ने शाम होने से पहले ही मास्त मरडीगौडा के पुत्र को बुलवाया और उसी दिन गोधूलि वेला में शिवलिंगरुद्रसर्ज ने उस बालक को दत्तक-पुत्र के रूप में स्वीकार कर लिया। उसका नाम 'गुरु-लिंगमल्लसर्ज' रखा गया।

उधर घर पहुचते ही मल्लप्पाशेट्टी ने एक पत्र में पुत्र गोद लेने की बात लिखकर उसे हरकारे के द्वारा थैकरे साहब के पास भेज दिया।

पर न तो पत्र ही थैकरे साहब के हाथो में पहुचा और न पत्र ले जाने वाला हरकारा ही वापस आया।

नौवें दिन शिवलिंगरुद्रसर्ज की हालत और भी बिगड गई। दोपहर को वह बेहोश हो गए। रुद्रव्वा रानी, चेन्नम्मा रानी दोनो राजा की शैया के पास से नही हटी। राजमहिषी वीरव्वा असहाय होकर अश्रुपात कर रही थी।

सूर्यास्त के समय राजा को चेत हुआ। उन्होने दत्तक-पुत्र और वीरव्वा निकट बुलाकर उनके हाथ रानी चेन्नम्मा के हाथो में थमाकर कहा, "छोटे देसाई के सयाने होनेतक आप ही राज्य चलावें। इनकी रक्षा करने का भार आपपर ही है। मुझे अब आशीर्वाद देकर विदा करें।"

इसके बाद राजा की आखें सदा के लिए मुद गई।

: १० :

राजा की अन्त्येष्टि समाप्त होते ही थैकरे साहब के प्रतिनिधि बनकर आये हुए धारवाड के सिविल सर्जन को लेकर मल्लप्पाशेट्टी आये। गुरुसिद्दप्पा ने सिविल सर्जन को दत्तक-पुत्र का परिचय कराया। सिविल सर्जन ने पूछा, "महाराज ने इन्हें कब गोद लिया ?"

"कई दिन हो गए।"

"कलक्टर की अनुमति के बिना आपको पुत्र गोद लेने का अधिकार कहा है ?"

गुरुसिद्दप्पा ने व्यग से कहा, "कित्तूर की गद्दी पर आपके कलक्टर साहब बैठे हो तो यह प्रश्न पूछा जा सकता है।"

"आपके दत्तक-पुत्र को कलक्टरसाहब मान्यता नही देंगे।"

"कोई परवाह नहीं। कित्तूर की प्रजा ने इन्हें मान लिया है।"

"इस विषय में मल्लप्पाशेट्टी ने आपको चेतावनी दे दी थी। फिर भी आपने उनकी बात की उपेक्षा की ?"

"आपके इस प्रकार के प्रश्नो का उत्तर देने की अपेक्षा कही अधिक उत्तरदायित्वपूर्ण काम कित्तूर के प्रधान दीवान को है।"

इतना कहकर गुरुसिद्दप्पा वहा नही ठहरे, बाहर चले गए। मल्लप्पा-शेट्टी ने धीरे-से कहा, "यह सब षड्यन्त्र इसी बुड्ढे और स्वर्गीय महाराज की दूसरी रानी चेन्नम्मा का है।"

सिविल सर्जन की दी हुई रिपोर्ट को ही आधार बनाकर कलक्टर थैकरे ने कम्पनी सरकार को यो लिखकर भेजा—

"सिविल सर्जन के कित्तूर पहुचने से पहले ही देसाई शिवलिंगरुद्रसर्ज मर गए और उनकी अन्त्येष्टि भी हो चुकी थी। दीवान गुरुसिद्दप्पा ने बताया कि मास्त मरजीगौडा के पुत्र को राजा ने मृत्यु से पूर्व ही गोद ले लिया था। हमारे विश्वास पात्र मल्लप्पाशेट्टी से मालूम हुआ है कि यह गोद लेने की बात

निराधार है। राजा के जीवित रहते गोद लेने का सस्कार मपन्न नही हुआ था।"

कम्पनी सरकार से थैंकरेसाहव को आज्ञा मिली, "हम दत्तक-पुत्र को नही मानते। मास्त मरजीगौडा का पुत्र देसाई-वश का है कि नही, यह पूछकर हमको वतलाना चाहिए।"

थैंकरेसाहव ने निम्निलिखित रिपोर्ट भेजी—

"देसाई जव जीवित थे तव उन्होने दत्तक-पुत्र की इच्छा हमपर प्रकट नही की। उन्होने वीमार पडने के वाद भी यह वात नही उठाई। यह अनुमान किया जा सकता है कि दीवान गुरुसिद्दप्पा, स्वर्गीय शिवलिंगरुद्रमर्ज की माता रुद्रम्मा और उनकी सौतेली मा चेन्नम्मा ने षड्यन्त्र करक देसाई के स्वर्गवास के वाद गोद लेने की विधि की होगी। मेरा विचार है कि देसाई के हस्ताक्षर सहित पत्र भी पीछे तैयार किया गया है और उस पर देसाई के जाली हस्ताक्षर वना लिये गए है। मै रीजेंट रानी चेन्नम्मा को आज्ञा देता हू कि मल्लप्पाशेट्टी को प्रधान दीवान वनाकर सव अधिकार-सूत्र उनके हाथ सौंप दें।"

थैंकरे साहव का आदेश-पत्र हाथ में लेकर मल्लप्पाशेट्टी महल में आये और रानी चेन्नम्मा से मिलने की इच्छा प्रकट की।

रानी ने गुरुसिद्दप्पाजी को वुलवाया और भेंट करने के भवन में जा वैठी। मल्लप्पाशेट्टी ने कृत्रिम विनय दिखलाते हुए कहा, "रानीजी, खेद है कि मै आज वडा ही अप्रिय सवाद लेकर आया हू।"

"आपको जो कुछ कहना है, वह शीघ्र कह डालिए।"

"स्वर्गीय महाराज के गोद लेने की वात कम्पनी सरकार ने स्वीकार नही की।"

"हमें उनकी स्वीकृति की कोई आवश्यकता भी नही। आप कभी यह न भूलिए कि कित्तूर स्वतत्र राज्य है। कम्पनी सरकार का नाम लेकर आप हमें भय दिलाने आए है?"

"नही, धारवाड के कलक्टर साहव का पत्र आया है।"

मल्लप्पाशेट्टी का दिया हुआ पत्र गुरुसिद्दप्पा ने पढकर रानी को

सुनाया। सुनकर चेन्नम्मा क्रोध से तमतमा उठी। उनकी आखो से चिनगारिया निकलने लगी। गुरुसिद्दप्पा के हाथो से पत्र लेकर उसके टुकडे-टुकडे करके फेंक दिये और गरज कर बोली, "कित्तूर को तुम्हारे हाथो में सौंपना ? क्या तुमने समझा है कि कित्तूर का राजवश समाप्त हो गया ? कित्तूर की वीर प्रजा मर गई ? कित्तूर को भले ही मुझे अपने ही हाथ से आग लगाकर भस्मीभूत करना पडे, पर इस बात का कभी स्वप्न में भी खयाल न करना कि मैं उसे तुम्हारे या तुम्हारे स्वामी के हाथो में सौंपूगी। जबतक चेन्नम्मा की देह में एक बूद भी रक्त शेष है, कित्तूर किसीके सामने मस्तक नही झुकाएगा।"

"आपके इस रगढग से तो युद्ध अनिवार्य हो जायगा।"

"अनिवार्य हो तो हो, हम तैयार है। मृत्यु तो हमारे लिए खिलवाड है। हम आत्म-समर्पण के लिए कदापि सहमत नही हो सकते। आपके थैकरे-साहब को हमारा यही दो टूक उत्तर है।"

मल्लप्पाशेट्टी ने धारवाड में थैकरेसाहब को लिखा—

"रानी चेन्नम्मा मानवी नही, दानवी है। उसका खात्मा किये बिना अग्रेजो का प्रभुत्व चिरस्थायी नही हो सकता।"

× × ×

कित्तूर पर आई विपदा को देखकर रानी चेन्नम्मा को अपार दुःख हुआ। किन्तु अब दुःख के सामने सिर झुकाकर आसू बहाने का समय भी तो नही था। वह भली प्रकार समझती थी कि मल्लप्पाशेट्टी की सूचना मिलते ही थैकरे सेना लेकर कित्तूर पर चढाई किये बिना न रहेगा।

रानी ने ढिंढोरा पिटवा दिया कि कित्तूर की प्रजा शस्त्रो से सुसज्जित होकर थैकरे के आक्रमण का सामना करने को तत्पर रहे और थैकरे की सेना के किसी भी आदमी को जल और भोजन-सामग्री न दे। वे जिस दिन आवें, उस दिन नगर भर के लोग अपने द्वार बन्द करके अपना असतोष प्रकट करें।

रानी के दूत राज्य भर के गावो में जाकर रानी का सदेश दे आये। सबने अपनी-अपनी बदूकें और तलवारे तैयार करनी आरम्भ कर दी। नगर

के बाहर की चेलुवादी गली की गगव्वा ने लडकियो को इकट्ठा करके रानी का सदेश दिया। एक लडकी ने पूछा, "हमें भी युद्ध करना है क्या, गगव्वा ?"

"क्यो नही ? जब रानी युद्ध के लिए आगे बढ रही है तो क्या हम चुप बैठी रह सकती है ?"

"गगव्वा, हमको युद्ध का अभ्यास नही है।"

"गोरो को देखते ही जो हाथ पडे, ले लो। उसके लिए अभ्यास की क्या जरूरत है ?"

× × ×

नगर के पश्चिमी भाग में सैदनसाहब की जीर्णोद्धार कराई हुई मसजिद थी। मसजिद के समीप ही मुसलमानो की बस्ती थी। सैदन वहा एक झोपडी में रहता था।

सैदन का सोलह वर्ष का लडका बाला अपने समवयस्क लडको का दल बनाकर उनको कवायद सिखाता था। लडके का खेल देखकर सैदन ने पूछा, " कवायद सिखलाकर क्या करेगा, बाला ?"

"हम युद्ध करेंगे।"

"किससे ?"

"फिरगियो से ?"

"बाला, तुम जैसे छोटे लडके क्या लड सकते है ?"

"देखते रहो दादा, रऊफ मुझको तलवार चलाना सिखला रहा है। हम फिरगियो के ऊपर टूट पडेंगें और उनकी तोपें छीन लेंगे।"

"बाला, मौलवी साहब नाराज हैं कि तुम लोग मदरसा नही जा रहे हो।"

"दादा, मुझे मदरसा-वदरसा कुछ नही चाहिए। जब फिरगी सरकार हमारे कित्तूर को निगलने आ रही है तो क्या हम मदरसे में बैठे ऊघते रहे ?"

"बाला, तुम्हारा पागलपन देखकर रानी गुस्सा होगी।"

"नही दादा, सवेरे रऊफ हमको तलवार के हाथ सिखा रहा था।

कासिम ने दौडे-दौडे आकर कहा, 'रानीजी घोडे पर जा रही है।' हम सब उसके पीछे दौडे। रानी सैनिको की सलामी ले रही थी। जब रानी चलने को हुई तो मैने उनको मुजरा करके कहा, रानीजी, हमारी सलामी भी मजूर कीजिए।"

"तू बडा शरारती है, बाला," सैदन ने कहा। "फिर आगे क्या हुआ ?"

"रानी ने हँसकर कहा, 'अच्छा, मै तुम लोगो की सलामी जरूर लूगी।' और तब हमने उन्हें सलामी दी। कवायद और तलवार की लडाई दिखाई।"

"रानी ने तेरी पीठ नही थपथपाई ?" सैदन ने पूछा।

"नही दादा, मेरे सिर पर हाथ रखकर उन्होने पूछा, 'तू किसका लडका है ?' मैने कहा, 'मै अमटूर सैदनसाहब का लडका हू। मेरा नाम बाला है।' रानीजी ने थोडी देर सोचकर कहा, 'क्या मसजिद की मरम्मत करानेवाले सैदनसाहब का ?'।"

"मैने कहा, जी हा।"

वृद्ध सैदन की श्वेत दाढी के ऊपर कई बूदे मोतियो की तरह टपक पडी। वह बोला, "रानी मुझे भूली नही !"

बाला बोला, "रानी ने दीवानसाहब से कहा, 'इन लडको के खान का इतजाम कर दीजिए। इनको हमारे भडार में ले जाकर ढाल-तलवार दीजिए।' फिर मुझसे बोली, 'बाला, तुझे और तेरे साथियो को कित्तूर के लिए जान देने को तैयार रहना चाहिए।' मैने खुशी से उछलकर कहा, 'हम हमेशा तैयार है, रानीजी।' रानीजी ने मुस्कराते हुए कहा, 'दीवानजी इस खुशकिस्मती से बढकर और क्या चाहिए ?' "

सैदन ने अभिमानपूर्वक कहा, "शाबाश मेरे बच्चे !" और उसे गले लगा लिया।

बाला बोला, "दादा, मै तुम्हारे लिए भी एक तलवार लाऊगा।"

"क्यो ?"

"हमारे साथ तुम, इमाम काका, मौलवीसाहब सबको लडना है।"

"ठीक है बेटा, हरेक मुसलमान को कित्तूर की इज्जत को बचाने के लिए लडना ही चाहिए। कित्तूर जिन्दाबाद।"

बाला ने जोर से पुकारा, "रानीजी जिन्दाबाद!"

उसके साथियो ने भी उसके स्वर-में-स्वर मिलाया। उनके ऊचे स्वर से आकाश गूज उठा।

× × ×

बैलहोगल के मारुति-मदिर के बाहर का मैदान रण-सज्जा से सज्जित वीरो से भर गया।

किसान अपनी खेती छोडकर आ गए।

मजदूरो ने अपने औजार छोडकर हाथ मे तलवार पकड ली।

खेती का काम करनेवाली स्त्रिया कुदाली, फावडा, बेलचा, सब्बल, लाठी, आदि लेकर आई।

दीक्षितजी के आते ही लोगो ने "कित्तूर की जय।" के नारे लगाकर उनका अभिवादन किया।

नागरकट्टी, रायण्णा, चन्नबसप्पा, गजवीर, बालण्णा के दलो का निरीक्षण करके दीक्षितजी ने एक ऊचे टीले पर खडे होकर कहा, "कित्तूर राज्य के वीर युवको और युवतियो, हमारी रानी की आज्ञा तुम लोगो ने सुन ली है। कित्तूर पर विपदा के बादल मडरा रहे हैं। जिन फिरगियो ने टीपू सुलतान और पेशवा राज्य को मिट्टी में मिला दिया, वे अब कित्तूर [illegible] निगलने के लिए आ रहे हैं। फिरगियो ने देखा कि कित्तूर के राजा [illegible] है, इसलिए उसे हडपने का यही अनुकूल अवसर है। कम्पनी-सरकार यह नही जानती कि हमारे २८६ गावो में रहनेवाले ७५,००० निवासी सारी दुनिया को हिला सकते है। उसको यह जतलाना हमारा कर्त्तव्य है।

"थैकरे की फौज के यहा पहुचने से पहले ही तुम लोगो को कित्तूर पहुचकर रानीसाहब के हाथ मजबूत करने चाहिए। युद्ध में जान भी चली जाय तो परवा नही। तुम्हारी समाधियो की मिटटी के कण-कण से वीर-

महावीर उत्पन्न होकर धर्मयुद्ध को जारी रखेगे। कोई भी शत्रु को पीठ दिखाकर न लौटे।

"हमारी रानी सामान्य स्त्री नही है। वह साक्षात् दुर्गा का अवतार है। उन माता के झडे के नीचे खडे होकर कित्तूर के लिए सग्राम करना हमारे लिए सौभाग्य की बात है। मेरे वीर सिपाहियो, तुम लोगो का कर्त्तव्य है कि कोई रानीजी का बाल भी बाका न करने पाए। बोलो 'कित्तूर की जय। रानी की जय'।"

जन-समूह ने समवेत स्वर से घोष किया, "कित्तूर की जय! रानी चेन्नम्मा की जय।"

× × ×

कित्तूर के गाव-गाव में ये शब्द गूज उठे। रानी का जयघोष दावाग्नि की तरह सब जगह फैल गया। बूढे लोग भी भाला, छुरा, हसिया गडासा, दराती लेकर कित्तूर की ओर दौड पडे।

रानी चेन्नम्मा ने नगर के आठो कोनो पर सेना का पहरा बिठा दिया और किले की निगरानी करनेवाले किलेदार शिवबसप्पा को सावधान रहने के लिए कह दिया। सब सैनिको को और अस्त्र-शस्त्रो से सुसज्जित होकर आई हुई प्रजा को किले के अन्दर करके फाटक बन्द करा दिया। अमटूर मैदन का पुत्र बाला और उसके साथी भी किले के अन्दर आ गये।

: ११ :

धारवाड के कलक्टर और उनके राजनीतिक प्रतिनिधि थैकरेसाहब को यह अच्छी तरह मालूम हो गया कि कित्तूर किमी भी तरह उनके सामने घुटने नही टेकेगा । कित्तूर मे होनेवाले युद्ध की तैयारी की व्यौरेवार खबर थैकरे साहब को देते हुए मल्लप्पाशेट्टी और वेंकटराय ने कहा, "रानी के पास ४७३ घुडसवार और एक हजार पैदल सिपाहियो से अधिक सेना नही है । हाल ही में उन्होने गाववालो को सेना मे भरती किया है । वे तलवार की मूठ भी पकडना नही जानते । आप कुछ भी चिन्ता न करे । हमारी तोपो की आवाज सुनते ही वे लोग भयभीत होकर भाग निकलेंगे । कित्तूर के सैनिक भी आपकी सेना के समान कुशल नही है । आप गोलन्दाज सेना के साथ कित्तूर पर धावा बोल दे तो राजधानी आसानी से आपके हाथ आ जायगी ।"

थैकरेसाहब ने २० नवम्बर की प्रात काल कप्तान ब्लेक, कप्तान सिविल और लेफ्टिनेंट डेटन की गोलन्दाज सेना को साथ लेकर अपने सेक्रेटरी स्टीवेंसन और इलियट के साथ कित्तूर के बाहर पडाव डाल दिया।

नगर की हालत देखकर थैकरे के आश्चर्य का ठिकाना न रहा। आदम-न-आदमजात । चारो ओर सन्नाटा ! ऐमा प्रतीत होता था, मानो वह कोई उजडा हुआ नगर हो ।

थैकरे ने नाराज होकर मल्लप्पाशेट्टी और वेंकटराय से कहा, "आप लोग तो कहते थे कि वहा युद्ध की तैयारिया हो रही है । रानी ने पाच हजार सेना इकट्ठी की है । कहा है वह सेना ?"

"साहब यह तूफान से पहले की शाति है ।" मल्लप्पाशेट्टी ने कहा, "यह बात बिल्कुल ठीक है कि सेना इकट्ठी की गई है, किन्तु हमने यह नही देखा कि रानी ने उसे कहा छिपा कर रखा है ।"

"हमारे साथ मजाक करते हो ? तुम्हारे जासूसो का क्या हुआ ?"

"जो वहा जाते है, वे वापस नही आते ।"

"तुम बिल्कुल मूर्ख हो । तुम पर भरोसा करके हमने बडा धोखा खाया ।"

"हम आपको धोखा नही देते, सरकार । गुलामो पर आप गुस्सा न करे ।"

"कम-से-कम किले के अन्दर की गति-विधि का तो पता लगाकर आओ ।"

"रानी का हुक्म है, हमें किले के भीतर न घुसने दिया जाय ।"

"इस मामले में हम तुमपर कहातक भरोसा कर सकते है ?"

"हजूर, आप पूरा भरोसा कर सकते है । हमने कित्तूर को आपके हाथो में सौंप देने का बीडा उठाया है ।"

"तुम्हारे जासूस चालाक नही है । किले के भीतर तुम जा नही सकते ! हमको ठीक खबर कैसे मिल सकती है ?"

"राजमहल की रसोई की अध्यक्षा महान्तव्वा हमारे साथ है । किले का मुख्याधिकारी शिवबसप्पा भी अपना ही आदमी है । उनसे हमको खबरें मिलती रहती है ।"

"नगर के गण्यमान्य लोगो और मुखियो को हमारे पास आने को कहो । हम उनकी मार्फत रानी से सुलह की बात करेंगे ।"

"अच्छा, सरकार ।"

मल्लप्पाशेट्टी और वेंकटराय चले गए और थोडी देर बाद मुह लटकाये लौटकर आये । बोले, "हमने बहुत कोशिश की, पर कोई आता ही नही है ।"

"इन नगर के लोगो के दिमाग चढ गए है । कम्पनी-सरकार की बेइज्जती करने की इनकी जुर्रत देखो ।"

"इन सबका कारण रानी चेनम्मा और दीवान गुरुसिद्दप्पा है । इन दोनो का खातमा किये बिना कित्तूर आपके हाथ नही आ सकता । हम आपका काम सिद्ध करने को तैयार है ।"

"सिर्फ जवान से कहने से क्या फायदा ?"

"फायदा ! वही तो हम आपसे जानना चाहते है ।"

"आप क्या चाहते है ?"

कुछ देर चुप रहकर मल्लप्पाशेट्टी ने कहा, "कित्तूर राज्य के दो टुकडे करके मुझको और वेंकटराय को बाट दीजिए। रानी आपको जो कर देती है, उससे दुगना हम आपको देते रहेगे।"

थैकरे ने कप्तान ब्लैक की ओर देखा। ब्लैक मल्लप्पाशेट्टी से बोला, "आपको रानी और गुरुसिद्दप्पा को कैद करके हमारे हाथो सौंपना पडेगा।"

"अगर कैद न कर सके तो उनकी लाशें लाकर देंगे।"

कप्तान ब्लैक की सूचना के अनुसार थैकरे ने कहा, "हमे मजूर है ।"

इसके बाद थैकरे ने रानी चेन्नम्मा के नाम निम्नलिखित पत्र लिख कर भेजा—

"आप पर कपनी सरकार का १,७५,००० रुपये का ऋण है। अभी तक चुकाया नही गया। यह रकम जल्दी ही भेजनी चाहिए। दत्तक-पुत्र तथा राज्य की पुनर्व्यवस्था के मामलो पर भी आपसे चर्चा करनी है। कुछ फुरसत निकालकर आप फौरन आवे।"

रानी चेन्नम्मा के पास से कोई उत्तर नही आया।

× × ×

उसी दिन सायकाल अधेरा हो जाने पर एक स्त्री घूघट निकाले हुए मल्लप्पाशेट्टी की हवेली में आई। मल्लप्पाशेट्टी उसको अपनी अन्दर की कोठरी में ले गए और पूछा, "क्या खबर है महान्तव्वा ?"

कोई खास बात नही है। आपने मुझे कैसे याद किया ?"

"किले में इतना सख्त पहरा रहते तू कैसे आई ?"

"नीलव्वा से राहदारी का परवाना लेकर आई हू। किलेदार शिववसप्पा स्वय मुझे छोड गया है।"

"रानी क्या कहती है ?"

"युद्ध की तैयारी कर रही है।"

"हमने रानी और गुरुसिद्दप्पा को पकडकर कम्पनी सरकार के हाथ में न सौंपा तो हमारा जीना दूभर हो जायगा। थैकरेसाहब हमारे ऊपर दात पीस रहे है।"

"और सबको झुकाया जा सकता है, पर रानी चेन्नम्मा को झुकाना भगवान के लिए भी सभव नही है।"

"महान्तव्वा, भगवान भी जो काम नही कर सकते, वह तू करके दिखा सकती है।"

यह कहकर मल्लप्पाशेट्टी ने एक छोटी थैली खोलकर उसमें से सोने की मुहरें महान्तव्वा की गोद में डाल दी।

महान्तव्वा उस सुवर्णराशि को एकटक देखती रही।

"इतना सोना कभी तेरे हाथ में आया है, महान्तव्वा ?"

"नही, मालिक।"

"मैने चार सौ मुहरें तेरे लिए सुरक्षित करके अलग रख दी है। हमारा काम सिद्ध होते ही उन्हें तुम्हारे हाथ सौंप दूगा।"

"मुझे क्या करना है सो बतलाइये।"

"दिल मजबूत करके करोगी ?"

"हा, सरकार।"

"कम्पनी सरकार से कहकर तुझे जागीर दिला दूगा।"

"मालिक, मुझे तो आप ही का भरोसा है। स गरीब को चाहे दूध में रखिए, चाहे पानी में।"

"ध्यान से सुनो। रानी चेन्नम्मा को खाना कौन परोसता है ?"

"मै ही परोसती हू, किन्तु कुछ दिनो से वह भोजन ही नही कर रही है।"

"कल खीर बनाकर रानी को खिलाओ। तुम्हारी बनाई हुई खीर का नाम सुनते ही किसके मुह में पानी न आ जायगा।"

महान्तव्वा मौन साध गई।

मल्लप्पाशेट्टी ने उसके हाथ में एक छोटी-सी पुडिया देकर कहा "महान्तव्वा, खीर मे यह चूरन डालने से स्वाद नही बिगडेगा और हमारा काम भी बन जायगा।"

पुडिया पकडते हुए महान्तव्वा का हाथ थरथर कापने लगा।

"क्यो, अभी से डर रही हो ?"

"नही, सरकार।"

"तुम सफल नही हुई तो जानती हो, क्या होगा ?"

महान्तव्वा काप उठी। उसके मुह से बोल ही नही निकला।

मल्लप्पाशेट्टी ने कहा, "तुम्हारी ही नही, हम सबकी जान की खैर नही है। सफल हो जाओगी तो कित्तूर का राज्य हमारा है। देशनूर की जागीर तुम्हें मिलेगी।"

"काम पूरा हो जाने पर मुझे भूल मत जाना, सरकार।"

मल्लप्पाशेट्टी ने उसे आश्वासन देते हुए कहा, "भगवान की कसम, मै नही भूलगा।"

महान्तव्वा अपना मुह पूरी तरह घूघट से ढककर चली गई।

मल्लाप्पाशेट्टी अपने नए षड्यन्त्र के लिए थैकरेसाहब से शाबाशी लेने घर से चल दिए।

इसी समय एक और स्त्री इन दोनो की बातचीत आड में खडी होकर सुन रही थी। वह भी अपना मुह घूघट से ढककर हवेली के पिछले द्वार से निकल गई।

: १२ :

सदाशिव शास्त्री वीणा को ठीक कर रहे थे। उसी समय उनको अपने सामने कोई छाया हिलती दिखाई दी। वह चौंक पडे। पूछा, "कौन ?"

कोई उत्तर नही मिला।

उन्होने सोचा, "हो सकता है, यह मेरा भ्रम हो।" और वह फिर वीणा को ठीक करने लगे।

छाया फिर चलती दिखाई दी।

शास्त्रीजी ने जोर से पूछा, "कौन है ?" और उठकर बाहर आए।

"धीरे-से बोलिए, गुरुजी।"

"कौन ? कलावती ?"

"हा।"

"भीतर आओ।"

"दिया मद्धिम कर दीजिए।"

शास्त्रीजी ने दीये की रोशनी कम कर दी और बाहर का द्वार बद कर दिया। फिर बोले, "इतनी रात गए कैसे आई ? राजधानी मे बहुत-से जासूस इधर-उधर घूम रहे है।"

"गजब हो गया, गुरुजी। रानी की जान लेने का षड्यन्त्र चल रहा है।"

"जान लेने का ? किसकी ओर से ?"

कलावती ने मल्लप्पाशेट्टी और महान्तव्वा में जो बातचीत हुई थी, वह बताते हुए कहा, "आप अभी राजमहल में जाकर रानी को सावधान कर आइए।"

"मै अभी महल से आ रहा हू। पर चिन्ता मत करो। मै फिर जाता हू।"

"जल्दी जाइए, गुरुजी। रानी के प्राण आपके हाथ में है।"

"और तुम्हारे प्राण ?"

"मेरी चिन्ता न कीजिए। मैं तो कुलभ्रष्टा हू। मर भी जाऊ तो मेरे लिए कौन रोनेवाला बैठा है ? पहले रानी को बचाइये।"

शास्त्रीजी कलावती की ओर देखकर बोले, "कौन कहता है तुम्हे कुलभ्रष्टा कलावती ! कित्तूर की राज्यलक्ष्मी की रक्षा करने के लिए आई हुई कुलदेवी हो।"

इतना कहकर वह तेजी से बाहर चले गए।

कलावती घूघट डालकर अपने घर लौट आई। यह देखकर कि मल्लप्पाशेट्टी अभी घर नही लौटे, उसे बडी शाति मिली।

× × ×

अगले दिन दोपहर को राजमहल की रसोई मे महान्तव्वा बडी दौड-धूप कर रही थी। वह दुडव्वा और गौरव्वा का काम भी बडी खुशी से स्वय ही कर रही थी।

उसने चादी के चार पटडे बिछाकर उनके सामने चार छोटे पटरो पर सोने की थालिया रक्खी। हर पटरे के पास चादी के लोटे में केसर डाला हुआ पानी रख दिया। फिर अपने आचल से थालिया पोछती हुई बोली, "बडे महाराज की मृत्यु के बाद रानीजी ने पहली बार मीठा भोजन करना स्वीकार किया है।"

दुडव्वा ने आश्चर्यचकित होकर पूछा, "महान्तव्वा, तुमने उन्हें कैसे राजी कर लिया ?"

वह बोली, "मैंने आसू गिराते हुए रानीजी से कहा, 'मेरे हाथ की ।र खाये आपको बहुत दिन हो गए। आप कल या परसो लडाई पर चली जायगी। फिर खीर खिलाना मेरे भाग्य मे होगा या नही !' मेरे इतना कहने पर रानी पिघल गई और बोली, "अरी, यह कौन-सी बडी बात है, महान्तव्वा। क्यो सोच करती है ? कल खीर बना। मैं, रुद्रव्वा, वीरव्वा, शिवलिंगव्वा सब खायगी।"

गौरव्वा ने अभिमान-पूर्वक कहा, "महान्तव्वा, तू तो बडी जादूगरनी है। कैसे-कैसो को अपने जाल में फसा लेती है !"

रानी चेन्नम्मा बडी बहन, छोटी बहन और पुत्रवधू को साथ लेकर भोजन के लिए बैठ गई।

रुद्रव्वा रानी ने कहा, "महान्तव्वा, मेरे लिए तो भात ही काफी है। बाकी सब लोगो को खीर परोसो।'

महान्तव्वा ने रुद्रव्वा के लिए भात परोसा और शेष लोगो के लिए चादी के कटोरो में खीर दी।

चेन्नमा रानी ने हाथ में खीर का कटोरा उठाकर कहा, "महान्तव्वा, अपनी बनाई हुई खीर तू नही चखेगी क्या ?"

"आप खाइये। मै बाद में खाऊगी।"

"नही, हमारे साथ आकर बैठ।"

"नही, कही ऐसा हो सकता है ? मै तो आपकी दासी हू।"

"मै तुझे हुक्म देती हू। क्या तू मेरा हुक्म नही मानेगी ?"

महान्तव्वा को थरथर कापती हुई देखकर रुद्रव्वा रानी ने सहानुभूति-पूर्वक कहा, "रहने दो, चेन्नम्मा। उसका लजाना ठीक ही है।"

चेन्नम्मा ने गभीर होकर कहा, "बडी बहन, चेन्नम्मा के साथ बैठकर भोजन करने मे शरमानेवाली इस महान्तव्वा को छोटी रानी को विष मिला भोजन देते ग्लानि नही हुई ?"

"विष मिला भोजन !"

इतना सुनते ही सबने थालिया दूर सरका दी।

महान्तव्वा बिना विचलित हुए बोली, "छोटी रानी मजाक कर रही है।"

रानी चेन्नम्मा ने खडे होकर ताली बजाई। फौरन पहरे के दो सिपाही भीतर आ गए। रानी ने उनको आज्ञा दी, "महान्तव्वा को दीवानजी के पास ले जाओ। उनसे कह देना कि इसकी बनाई हुई खीर इसीको पिलाई जाय। इससे यह भी पूछा जाय कि ऐसा नीच काम इसने किसके कहने से किया ?"

इतना कहकर वह रुद्रव्वा और शिवलिंगव्वा के साथ बाहर चली गई।

इस घटना से चेनम्मा के आत्मविश्वास को बडा धक्का लगा। बदी

सिंहनी की भाति अपने कमरे मे टहलती हुई बोली, "मै नही जानती थी कि यहा भी द्रोही मौजूद है और हमारे महल मे विप देनेवाले भी हो सकते है ?" वह इतनी आत्मस्थ हो गई कि उन्हे पता भी न चला कि गुरुसिद्दप्पा आये है और म्लान मुख से पास ही खडे है।

गुरुसिद्दप्पा ने कहा, "रानीजी !"

चेन्नम्मा जैसे सोते से जागी, "क्या है, दीवानजी ?"

"महान्तव्वा को हमने खीर पिला दी।"

"क्या हुआ ?"

"तडप-तडप कर हाथ-पैर पटकने लगी। मुह से झाग निकलने लगे। धीरे-धीरे मुह नीला पडने लगा। पागल की तरह भयानक चीत्कार करते हुए उसके प्राण निकल गए।"

"कुछ पता चला कि इस कुचक्र के पीछे कौन है ?"

"जी हा, मालूम हो गया।"

"कौन है ?"

"मल्लप्पाशेट्टी ने चालीस सोने की मुहरे देकर इस नीच कार्य के लिए महान्तव्वा को तैयार किया था।"

"मल्लप्पाशेट्टी का हमने क्या विगाडा था, दीवानजी ?"

"मल्लप्पाशेट्टी और वेङ्कटराय ने थैकरे के साथ मिलकर एक करार किया है !"

"हमारे दीवानो ने थैकरे के साथ करार किया है ?"

"जी हा, और करार भी ऐसा-वैसा नही—यह कि आपका और मेरा सिर मल्लप्पाशेट्टी और वेंकटराय थैकरे को दे देंगे। उसके बदले मे थैकरे कित्तूर राज्य आधा-आधा दोनो मे बाट देगे। परमपिता की कृपा से हम भारी सकट से बच गए। खीर में विप मिलाने की बात आपको कैसे मालूम हुई ?"

"कल रात सदाशिव शास्त्री यहा से गए कि कुछ समय बाद फिर लौट आये। उन्होने मुझे बताया कि मल्लप्पाशेट्टी ने महान्तव्वा को आज्ञा दी है कि भोजन में विप मिलाकर हमे दे दे। वे चेतावनी दे गए थे कि महान्तव्वा

को बनाई हुई कोई भी चीज हम न खाय।"

"शास्त्रीजी को यह सब कैसे मालूम हुआ ?"

"कलावती ने महान्तव्वा और मल्लप्पाशेट्टी की बातचीत [illegible] सुन ली थी। उसने तुरन्त शास्त्रीजी को सूचना देकर भेज दिया।"

"कलावती ने! मल्लप्पाशेट्टी की "

"जी हां, उसीने।"

"लेकिन दीवानजी, अगर मल्लप्पाशेट्टी को मालूम [illegible] कलावती ने मेरी जान बचाई तो अनर्थ हो जायगा। [illegible] भी ध्यान देना चाहिए।"

"थैकरे आपके दर्शन की प्रतीक्षा कर रहे हैं।"

"कर रहे होंगे, लेकिन इसमे शक नहीं कि थैकरे [illegible] कल किले पर घेरा डालकर युद्ध आरम्भ कर देंगे।"

"युद्ध का नतीजा क्या होगा, कुछ नहीं कहा जा सकता।"

"क्यो नहीं कहा जा सकता! हम राज्य के लालच में नहीं, [illegible] के लिए युद्ध कर रहे हैं। हम कित्तूर की मान-रक्षा के लिए [illegible] लिए हमारी विजय निश्चित है।"

"हां रानी, जय अवश्य होगी।"

उसी रात को रानी चेन्नम्मा ने किले के भीतर सब सैनिकों [illegible] बुलाई। सैन्य-व्यूह की रचना के बारे में सबको हिदायतें दीं। फि[illegible] अंगरक्षक गयण्णा और बालण्णा को पास बुलाकर कहा, "मेरा दृढ़ वि[illegible] है कि हमारी पराजय कभी नहीं होगी। फिर भी हमें हरेक बात के लि[illegible] तैयार रहना चाहिए। यदि हार हो तो तुम रुद्रम्मा रानी, [illegible] रानी और छोटे देसाई को गुप्तद्वार से ले जाकर बैलहोंगल में चिदम्[illegible] दीक्षित की देखरेख में रख देना।"

"आपकी रक्षा कौन करेगा ?"

"मेरी रक्षा! भवानी करेगी।"

गुरुसिद्दप्पा ने दृढ़ता से कहा, "यह कभी नहीं हो सकता। आपको

रक्षा के लिए ठीक व्यवस्था होनी ही चाहिए। यदि आपको कुछ हो गया तो कित्तूर की कमर ही टूट जायगी।"

मुस्कराती हुई चेन्नम्मा वोली, "मेरी रक्षा के लिए कोई रहना ही चाहिए ?"

"जी हा, यह परमावश्यक है।"

रानी चेन्नम्मा ने सैदन के वेटे वाला को पास बुलाया। वोली, "मै अपनी अगरक्षा का भार वाला को सौपती हू।"

"पर वाला तो अभी लडका है। इसके सिवा वह "

"वाला, सुन रहे हो, दीवानजी क्या कह रहे है ?"

वाला ने रानी चेन्नम्मा के सामने खडे होकर तलवार निकाली और सिर झुकाकर दृढता के साथ बोला, "रानीजी, छुटपन मे ही मेरी मा मर गई। मा का प्यार कैसा होता है, मै नही जानता। जिस दिन आपने हमारी कवायद देखकर हमारी सलामी ली थी, उस दिन की अपने दिल की वात मैं कह नही सकता। मैंने खुदा के सामने कसम खाकर कहा था, 'यही मेरी मा है। यही हमारे कित्तूर की माता है। मै उनके लिए अपनी जान दे दूगा।' मै सवके सामने कसम खाकर कहता हू कि मै कभी नमक-हरामी नही करूगा।"

रानी ने कहा, "मै तुम्हें ही अपना अगरक्षक बनाती हू। उठो वाला।"

फिर अपनी सेना और एकत्र प्रजा को लक्ष्य करके वोली, "वीर सर-दारो, शूर सैनिको, कल कित्तूर के भविष्य का निर्णय होगा। भवत थैकरे युद्ध आरम्भ कर देगा। वह युद्ध न भी आरम्भ करे तो भी हमे ही उसकी ।। पर आक्रमण करके उसे कित्तूर से वाहर खदेडना पडेगा। युद्ध अनिवार्य है। कित्तूर के स्वातत्र्य-रक्षा के इस सग्राम मे सभव है कि मेरी मृत्यु हो जाय। यह भी हो सकता है कि आप लोगो की जान पर भी आ वने। कोई भी मरे, लेकिन कित्तूर के स्वत अस्तित्व पर आच नही आनी चाहिए।

"हमारा यह सगाम केवल कित्तूर के लिए नहीं है। वह हमारी मातृ-भूमि, पुण्यभूमि भारत के लिए है। भारत की अक्षय कीर्ति के लिए है। कित्तूर

परतन्त्र हुआ तो भारत भी परतन्त्र हो जायगा। हमारा धर्म, साहित्य, कला, आत्म-गौरव सबकुछ मिट्टी मे मिल जायगा। 'कित्तूर अमर हो! भारत अमर हो!' हमारा यह जयघोष बच्चे-बच्चे की जबान पर होना चाहिए।"

फिर छोटे देसाई को गोद मे उठाकर सबको दिखलाते हुए बोली, "यही तुम्हारे महाराज है।"

जनता ने बडे उत्साह से नारा लगाया—"कित्तूर के देसाई की जय हो! रानी चेन्नम्मा की जय हो!"

चारो दिशाए उनके जयघोष से गूज उठी।

: १३ :

जब मल्लप्पाशेट्टी घर लौटे तो उनके मुख पर मुस्कराहट खेल रही थी। ऐसा मालूम होता था, मानो वह किसी अपूर्व आनद का अनुभव कर रहे हैं।

उन्होने बडे आराम से अपनी गद्दी पर बैठकर मेज पर अपनी पगडी और तलवार सहित कमरबन्द रखकर पुकारा, "कलावती!"

कलावती प्रसन्न होकर उनका स्वागत करने के लिए शृगार कर रही थी। शेट्टी ने फिर पुकारा, "अरे, क्या कर रही हो, कलावती?"

"अभी आई।"

थोडी देर मे वह सामने आकर खडी हो गई। उसके रूप को देखकर शेट्टी उछल पडे। बोले, "कला !"

"मालिक!"

"तू बडी सुन्दरी है।"

"आप महावीर है! बडे साहसी!"

"इतना शृगार क्यो किया है?"

"मेरे मालिक कल कित्तूर के राजा होने वाले है।"

"और तू कित्तूर की रानी होगी।"

"कित्तूर की रानी होने पर भी आपकी चरण-दासी।"

"अरे नही, मै तो तेरी जजीर मे बध गया हू।"

"सच? मालिक, आज की क्या खबर है? मै पूछती हू कि अगर रानी चेन्नम्मा थैकरे की शर्तें मान ले तो?"

"नही, रानी ने हठ पकड रक्खी है। किसी मूर्ख ने रानी के मन मे यह पागलपन भर दिया है कि वह अग्रेजो के साथ लडकर जीत सकती है।"

"ऐसी बात है तो लडाई जरूर होगी।"

"हा, थैकरे ने कल कित्तूर का किला तोडने का निश्चय कर लिया है।"

"साहब की जीत होगी क्या ?"

"इसमें संदेह क्या है ?"

"मेरे रानी बनने का स्वप्न "

"वह जरूर पूरा होगा। किन्तु "

"किन्तु क्या ?"

"हमारे घर में जासूस घुसे हुए है।"

"जासूस !"

"हा, हमारी गुप्त-से-गुप्त योजना का भी सूराख रानी को लग जाता है।"

"अच्छा ? क्या ऐसा अनुमान है या सच है ?"

"वेंकटराय और मैं जब थैकरे के कैंप से लौट रहे थे तो रास्ते मे ुडव्वा मिली थी। उसने बताया कि महान्तव्वा को विष मिली खीर खिलाकर मार डाला।"

"महान्तव्वा को विष मिली खीर खिलाई ? किसने ? क्यो ? मालिक, तुम्हारी बात का कुछ भी मतलब मेरी समझ में नही आता।"

मल्लप्पाशेट्टी ने अपनी लाल आखें फाडकर कलावती की ओर इस तरह देखा, मानो उसे निगल जायगे और बोले, "मतलब समझ मे नही आता, कलावती ?"

उनकी आकृति देखकर कलावती को पसीना आ गया, मुह पीला पड गया। डर के मारे कापने लगी।

"घूरे पर पडी हुई को ऊपर उठाकर कित्तूर की रानी बनाने की सोचनेवाला मूर्ख मैं ! मेरा नमक खाकर मुझसे ही दगा करती है ?"

कलावती नभली। तनकर बोली, "कित्तूर का नमक खाकर कित्तूर और कित्तूर की रानी के साथ दगा करनेवाले कौन है ?"

"कलावती, तू मेरी दासी है।"

"हा, मालिक, मैं कित्तूर की प्रजा हू। रानी चेन्नम्मा के अनगिनत बच्चो में से एक हू।"

"तेरी रानी के सिर की गेंद बनाकर मैं उसे थैकरे के चरणों में अर्पण करूंगा।"

कलावती का खून खौल उठा। बोली, "चाण्डाल, तेरी जीभ सड़ कर गिर जाय!"

"अपनी जीभ के सड़कर गिरने से पहले ही मैं तेरी पापी देह को कुचल डालूंगा।"

"तुझ जैसे नराधम की छुई इस देह का कुचल जाना ही अच्छा है।"

यह कहकर कलावती ने मेज पर रखी हुई शेट्टी की तलवार हाथ में उठा ली। शेट्टी ने उसके हाथ से तलवार छीन ली। कलावती ने शेट्टी के हाथ से तलवार लेने की कोशिश की, पर सफल न हो सकी। उसके हाथ में तलवार की म्यान आगई। उसने उसीसे मल्लप्पाशेट्टी पर प्रहार किया।

इस प्रहार से शेट्टी पागल हो उठे। उन्होंने तलवार की नोक कलावती की छाती में भोंक दी। उसके हृदय से रक्त की धार फूट निकली। वह धरती पर गिर पड़ी।

शेट्टी ने भूमि पर गिरी हुई कलावती को बायें पैर से ठुकराकर कहा, "मर, पापिन, द्रोही।"

यह कहते हुए उन्होंने तलवार से उसके सारे शरीर को गोद डाला।

कलावती बराबर 'कित्तूर की जय! रानी चेन्नम्मा की जय!' पुकारती रही। उसका मुंह बंद करने के लिए मल्लप्पाशेट्टी ने लात मारकर व्यंग की हंसी हंसते हुए कहा, "ले, और जय बोल।"

कलावती के मुख पर फिर भी मुस्कराहट फूट पड़ी—परम शांति-युक्त दिव्य मुस्कराहट!

× × ×

रानी चेन्नम्मा पूजा कर रही थी। उसकी आंखों से आंसुओं की झड़ी लगी थी, मानो भगवान का आंखों के जल से प्रक्षालन कर रही हो। उसका हृदय चूर-चूर हो रहा था। वह कह रही थी, "हे प्रभु, कित्तूर की रक्षा करो, कित्तूर की मर्यादा की रक्षा करो।"

तभी रानी की सखी नागव्वा ने धीरे-से आकर कहा, "रानीजी !"

रानी चेन्नम्मा ने आसू पोछकर कहा, "क्या है नागव्वा ?"

"दिन निकलने वाला है। दीवानजी ने कहा है कि आपसे मिलने का समय पूछकर आओ।"

"सवेरा हो गया क्या ?"

"जीहा।"

रानी उठी, स्नान करके पुरु की तरह लाग वाली साडी पहनी, सिर पर मुकुट रखकर पैरो में कामदार जूते पहने और मल्लसर्ज देसाई की तलवार कमर में वाध ली।

रानी के वीरवेश और उनके मुखपर खेलते हुए क्षात्र-तेज को देखकर नागव्वा चकित होकर मन-ही-मन वोली, 'यह चडी है, चामुडी है, काली है, दुर्गा है। निश्चय ही यह मानवी नही है। राक्षसो के दल का नाश करने वाली चामुडी है।'

चेन्नम्मा ने रानी रुद्रम्मा के अन्त पुर में जाकर उनको नमस्कार करके कहा, "वडी वहन, मै युद्ध के लिए प्रस्थान कर रही हू। मझे आशीर्वाद दो।"

छोटा देसाई भी उठकर आगया। उसने चेन्नम्मा का आचल पकड़-कर कहा, "मै भी चलूगा, अम्मा।"

चेन्नम्मा ने उसको उठाकर प्यार करते हुए कहा, "कुमार, तुम्हारे लडने का समय आगे आयगा। अव वहन के पास सुख से रहो।"

वीरव्वा और शिवलिगव्वा आगई और रानी चेन्नम्मा को आलिगन करके रोने लगी। चेन्नम्मा ने उनको सात्वना देते हुए कहा, "रोओ मत। मै विजय प्राप्त करके लौटूगी। तुम लोगो को कभी भी फिरगियो के हाथ नही पडने दूगी।"

चेन्नम्मा के महल के पिछले द्वार पर उसका घोडा तैयार खडा था। उस पर चढकर वह वीरागना किले के सिह-द्वार के पास आई।

कित्तूर की सारी सेना तैयार खडी थी। सवसे आगे पैदल सेना, फिर गोलन्दाज पल्टन, उनके पीछे भालाधारी सैनिक, फिर घुडसवार। रानी

घुडसवारो के आगे आकर खडी हो गई। उसके दाई ओर घोडे पर सवार गुरुसिद्दप्पा थे। बाई ओर वीर बाला गगनचुम्बी कित्तूर का झडा पकडे खडा था। उसके पीछे रऊफ, कासिम, इमाम और दूसरे साथी खडे थे।

किले के बाहर थैकरे खडा था। उसके साथ कप्तान ब्लेक, कप्तान सिविल, कप्तान डेटन और ५०० सैनिक थे।

रानी ने एक बार अपनी सेना पर दृष्टि डालकर कहा, "कित्तूर के वीरो, शत्रु सेना पर आधी की तरह टूट पडो और उन्हे धरती पर सुला दो। जीते रहोगे तो स्वतत्रता मिलेगी, मर गये तो स्वर्ग मिलेगा।"

रानी का इतना कहना था कि चारो ओर से स्वर उठा, "जीते रहे तो स्वतत्रता, मर गए तो स्वर्ग ! रानी चेन्नम्मा की जय ! कित्तूर जिन्दाबाद !"

उधर थैकरे ने अपने लोगो को किले के फाटक की ओर बढने की आज्ञा दी। रानी चेन्नम्मा ने सेना के दो भाग करके बीच मे कुछ जगह छुडवा दी।

बाहर से थैकरे ने पुकारा, "रानी !"

चेन्नम्मा फाटक के पास जाकर खडी हो गई।

थैकरे ने कहा, "रानी, मेरी बात सुनिए। अजेय ब्रिटिश साम्राज्य के वि द्ध उसको क्रोध दिलाने की हिम्मत करने के लिए मै आपकी प्रशसा करता हू। क्या आपने यह कहावत सुनी है कि ब्रिटिश साम्राज्य मे सूर्य कभी अस्त ी होता ? किले मे बाहर आकर देखिए—क्या आपकी सी डेढ़ ़के हमारी तोपो का सामना कर सकती है ? ब्रिटिश ढग से शिक्षित हमारे बहादुरो के सामने क्या आपके अशिक्षित गवार सैनिक ठहर सकते है ? हम खून-खराबी से हिचकिचाते है। आप आत्म-समर्पण कर दे तो हम सम्मान-पूर्ण सधि करने के लिए तैयार है।"

अदर से आवाज आई, "और यदि हम आत्म-समर्पण करना स्वीकार न करें तो ?"

"तो हम तोपो से किले को चूर-चूर करके भीतर घुस जायगे। आपकी सेना को काटकर किले को अपने हाथ में कर लेगे और आपको तथा आपके

परिवारवालो को कैद कर लेगे।"

अदर से कडकती आवाज आई, "थैकरे साहब, बढ-चढकर बातें बहुत हो चुकी। व्यापार की तराजू हाथ मे पकडकर आये हुए आप जब ऐसी शेखी बघारते है, तो कित्तूर के वीर लोगो की तो बात ही निराली है। जरा, इसपर विचार कीजिए। इस जन-सहार के लिए हमने निमत्रण नही दिया—अग्रेजो मे हमें कोई द्वेष नही। हमारी आपपर अकारण क्रोध करने की इच्छा नही। अब भी आप अपनी भूल सुधार सकते है। युद्ध का विचार छोडकर हमारे मित्र बन जाइये। हम खुशी से आपका स्वागत करेंगे। आपके साथ मित्रता करेंगे। इस विचार को अपने मन से निकाल दीजिए कि कित्तूर आपके अधीन हो जायगा। आपकी मेहरबानी के भूखे कुछ देशद्रोही मूर्खों ने कित्तूर के बारे में आपके मन में गलत धारणा बैठा दी है। यह वीर-भूमि है, कर्मभूमि है। यहा मृत्यु से न डरनेवाले वीर लोग रहते है। देश के लिए तन, मन, धन अर्पण करने को तैयार हुतात्माए रहती है। इन लोगो को पराजित करके आप इनपर शासन नही कर सकते। अगर आपको अपनी जान प्यारी हो तो यहा से उल्टे पाद लौट जाइए। कहिए, आप किसे चुनेंगे, युद्ध को या मित्रता को ?"

"महारानी, कुछ जोशीले और अविवेकी आदमियो की बातो में आकर आप क्यो बरबाद होती है। भलाई इसीमें है कि आप आत्म-समर्पण कर दीजिए। आपकी प्रतिष्ठा को जरा भी आच न आयगी। हमारे अधीन सामन्त हो जाइये। कित्तूर का राजमुकुट हम स्वय आपके सिर पर रखकर वापस चले जायगे।"

"आपके राजमुकुट को हजार बार धिक्कार ! क्या आप सोचते है कि मैं कित्तूर के स्वाभिमान के बदले आपकी दासता स्वीकार कर लूगी ? स्वाभिमान रखनेवाला कोई भी भारतीय आपकी शर्तों को स्वीकार नही सकता। कित्तूर की महारानी से ऐसी अपमान-जनक बातें कहते आपको शर्म आनी चाहिए।"

"महारानी, यह सोचकर कि आप स्त्री है, हम कुछ कहते नहीं। पर

जितना ही विनय से हम पेश आने की कोशिश करते है, उतना ही आप घमड के मारे आसमान पर चढती जाती है। अच्छी तरह याद रखिए कि आपकी उद्धतता ही आपको और आपके कित्तूर को ले बैठेगी।"

"थैकरे साहब, बहस से क्या लाभ ? साफ बताइए कि आप क्या चाहते है, युद्ध या शान्ति ?"

"कुछ नही, सिर्फ आत्म-समर्पण।"

"यह कदापि नही हो सकता।"

"मै आपको बीस मिनट की मोहलत देता हू। इस बीच आपने अधीनता स्वीकार न की तो मै कित्तूर की ईट-से-ईट बजा दूगा।"

चेन्नम्मा ने अपनी सेना के बीच मे घुसकर कहा, "बहादुरो, तैयार हो जाओ। बालण्णा, किले का फाटक खोल दो। घुसो, आगे घुसो। हर हर महादेव।"

"हर हर महादेव !"

किले का फाटक खुलना था कि कित्तूर की वीर वाहिनी अग्रेजी फौज पर आधी की तरह टूट पडी।

कित्तूर के सैनिक अग्रेजो की पैदल सेना से जूझ गए। उनके प्रचण्ड वेग को अग्रेजी सेना न सह सकी और उसके बीच मे दरार पड गई।

घोडे पर सवार थैकरे ने बन्दूक पकड कर किले के भीतर घुसने का यत्न किया। बाला ने देखा कि थैकरे रानी पर निशाना साध रहा है। वह [illegible]र से चिल्लाया, "दूर हटिए, माताजी। थैकरे आपपर बदूक का निशाना [illegible] रहा है।"

और उसने अपने हाथ के झडे को रऊफ के हाथ मे देकर रानी के घोडे की जीन पकडकर अपनी तरफ को खीची।

थैकरे की गोली खाली गई।

बालण्णा ने थैकरे को लक्ष्य करके बन्दूक दागी। निशाना अचूक बैठा। थैकरे धडाम से घोडे पर से नीचे गिर पडा।

कित्तूर के वीरो ने जयघोष किया, "हर हर महादेव ! रानी

चेन्नम्मा की जय हो।"

अग्रेजी सेना असहाय हो गई। सेनापति के अभाव मे सेना में भगदड मच गई। रानी चेन्नम्मा की तलवार ने अग्रेज सैनिको को काट-काटकर धरती को शवो से पाट दिया।

अग्रेज सैनिक रणस्थल को छोडकर भाग गए। कित्तूर के वीर सैनिकों में आनन्द की लहर दौड गई।

थैकरे के शिविर के मत्री स्टीवेसन्, इलियट तथा मल्लप्पाशेट्टी और वेंकटराय वदी वना लिये गये।

उस दिन महानवमी थी। ऐसे शुभ दिन विजय प्राप्त हुई। कित्तूर के निवासियो के आनन्द का पारावार न रहा।

रानी चेन्नम्मा और दीवान गुरुसिद्दप्पा ने घोडो से उतरकर अपने घायल व्यक्तियों का उपचार करना आरम्भ किया। मृत वीरों को देखकर रानी की आखो से अश्रुधारा वह चली। उपचार करते-करते रानी वहापर आई, जहा नैदन, रऊफ, इमाम और कासिम खडे रो रहे थे। वाला का शरीर निश्चेष्ट पडा था। रानी उस वीर वालक को देखकर विह्वल हो उठी। उसने कहा, "दीवानजी!"

"रानीजी!"

"वाला और अन्य वीरो का अन्तिम सस्कार सैनिक मर्यादा के साथ होना चाहिए।"

दीवानजी की आज्ञा के अनुसार सैनिको ने भाले जोडकर उनके ऊपर वाला को लिटाकर उठाया।

कित्तूर की सारी सेना आगे चली। उसके पीछे वाला का शव था। रानी चेन्नम्मा और दीवान गुरुसिद्दप्पा उसके पीछे नगे सिर चल रहे थे। जुलूस के मसजिद के पास पहुचने पर मौलवीसाहव ने सस्कार की तैयारी की। एक सामूग्री सन्दूक में वाला के शव को लिटाकर उसके ऊपर लाल कपडा उढाया गया और फूल डाले गए। कुरान शरीफ के पाठ के साथ शव कब्र में उतारा गया।

तैयारी की थी। इनको मृत्युदड मिलना चाहिए।"

शिववसप्पा बोले, "महारानी, नाडगौडा विना आधार के अपराध का आरोप करते हैं।"

नाडगौडा क्रुद्ध होकर बोले, "निराधार आरोप!"

"जी हा!"

"मैं पूछता हूँ, किसने थैकरे को लिखा था कि सेना के साथ आकर कित्तूर पर अधिकार कर ले।"

"इन ीवानो के शत्रुओ ने।"

"थैकरे के कित्तूर पहुँचते ही इन दीवानो ने जाकर उनका स्वागत क्यो किया?"

"अग्रेजो और हमारे बीच सधि कराकर रक्तपात न होने देने के लिए। अग्रेजो की गोलन्दाज सेना का शिकार बनकर कित्तूर बरबाद न हो, सके लिए प्रयत्न करना भी क्या अपराध है?"

"अच्छा, हम मान भी ले कि उन्होने समझौते का प्रयत्न किया, पर यह बताइए कि वे अगेजो की छावनी में जाकर क्यो रहे?"

"क्योकि महारानी ने आज्ञा जारी कर दी थी कि वे किले के भीतर पैर न रखने पावे।"

"यदि कित्तूर के किले के भीतर उनका प्रवेश निपिद्ध था, तो उन्ह घर ुपचाप बैठना चाहिए था। शत्रु की छावनी मे जाकर आश्रय लेने की क्या यकता थी?"

"थैकरेसाहब को खुश करके उनके साथ आत्मसम्मानयुक्त सधि का यत्न भी तो करना था।

"आप इनकी चाल का दूसरा ही अर्थ कर रहे हैं।"

"मैं शिव की सौगध खाकर कहता हूँ कि मल्लप्पाशेट्टी और वेंकटराय बेकसूर हैं।"

गुरुसिद्दप्पा गुस्से से कापने लगे। वे झट से उठकर बोले, "शिवबसप्पाजी, क्या आपको मालूम है कि इन दोनो ने रानीजी को विप देने का कुचक्र

रखा था ?"

इसपर सभा में बिजली-सी दौड गई। सब लोग चकित हो गए। शिव-वसप्पा ने बिना घबराए पूछा, "इसका आधार क्या है, दीवानजी ?"

"पाकशाला की मुख्याधिकारिणी महान्तव्वा ने खुद स्वीकार किया है।"

"महान्तव्वा को बुलाइये। उसके मुह से ही हम सच्ची बात जान सकते है।"

"रानी के लिए पकाई हुई विष मिली खीर खाकर वह मर गई।"

"महान्तव्वा रानी को विष देने वाली है, यह बात आपको कैसे मालूम हुई ?"

"मल्लप्पाशेट्टी की रखेली कलावती से।"

"कलावती को बुलवाइए।"

सदाशिव शास्त्री ने खडे होकर कहा, "शिववसप्पाजी, कलावती स्वर्ग चली गई।"

उन्होंने बतलाया कि किस तरह कलावती उनके पास आकर सब षड-यन्त्र का हाल बता गई थी और उन्होंने जाकर रानी चेन्नम्मा को सावधान किया था।

शिववसप्पा शास्त्री के बयान से सतुष्ट नही हुआ। बोला, "शास्त्रीजी सच बोल रहे है, क्या इसके लिए रानी गवाही दे सकती है ?"

सभा शिववसप्पा की इस उद्धतता पर बडी नाराज हुई कि वह रानी को ही गवाही देने के लिए चुनौती दे रहे ह।

मौलवीसाहब ने क्रुद्ध होकर पूछा, "आप रानी की बेइज्जती कर रहे है। रानी के सामने ही शास्त्रीजी ने जब सच्ची-सच्ची घटना बतलाई तो रानी से गवाही दिलाने की क्या जरूरत है ?"

इसपर चेन्नम्मा ने खडे होकर कहा, "आवश्यकता है, मौलवीसाहब। सदाशिव शास्त्री ने जो कुछ कहा, वह अक्षरश सत्य है। मैंने ही आज्ञा दी थी कि विष मिली खीर महान्तव्वा को खिलाई जाय। उसने अपना अपराध

तैयारी की थी। इनको मृत्युदड मिलना चाहिए।"

शिववसप्पा वोले, "महारानी, नाडगोडा विना आधार के अपराव का आरोप करते हैं।"

नाडगोडा क्रुद्ध होकर वोले, "निराधार आरोप!"

"जी हा!"

"मैं पूछता हूँ, किसने थैकरे को लिखा था कि सेना के साथ आकर कित्तूर पर अधिकार कर ले।"

"इन ीवानो के शत्रुओ ने।"

"थैकरे के कित्तूर पहुँचते ही इन दीवानो ने जाकर उनका स्वागत क्यो किया?"

"अग्रेजो और हमारे वीच सधि कराकर रक्तपात न होने देने के लिए। अग्रेजो की गोलन्दाज सेना का शिकार वनकर कित्तूर वरवाद न हो, सके लिए प्रयत्न करना भी क्या अपराध है?"

"अच्छा, हम मान भी लें कि उन्होने समझौते का प्रयत्न किया, पर यह वताइए कि वे अग्रेजो की छावनी में जाकर क्यो रहे?"

"क्योकि महारानी ने आज्ञा जारी कर दी थी कि वे किले के भीतर पैर न रखने पावें।"

"यदि कित्तूर के किले के भीतर उनका प्रवेश निपिद्ध था, तो उन्हे घर नचाप वैठना चाहिए था। शत्रु की छावनी में जाकर आश्रय लेने की क्या वश्यक्ता थी?"

"थैकरेसाहव को खुश करके उनके साथ आत्मसम्मानयुक्त सधि का प्रयत्न भी तो करना था।

"आप इनकी चाल का दूसरा ही अर्थ कर रहे हैं।"

"मैं शिव की सौगध खाकर कहता हूँ कि मल्लप्पाशेट्टी और वेंकटराय वेकसूर हैं।"

गुरुसिद्दप्पा गुस्से से कापने लगे। वे झट से उठकर वोले, "शिववसप्पाजी, क्या आपको मालूम है कि इन दोनो ने रानीजी को विप देने का कुचक्र

रखा था ?"

इसपर सभा में बिजली-सी दौड गई। सब लोग चकित हो गए। शिव-बसप्पा ने बिना घबराए पूछा, "इसका आधार क्या है, दीवानजी ?"

"पाकशाला की मुख्याधिकारिणी महान्तव्वा ने खुद स्वीकार किया है।"

"महान्तव्वा को बुलाइये। उसके मुह से ही हम सच्ची बात जान सकते है।"

"रानी के लिए पकाई हुई विष मिली खीर खाकर वह मर गई।"

"महान्तव्वा रानी को विष देने वाली है, यह बात आपको कैसे मालूम हुई ?"

"मल्लप्पाशेट्टी की रखेली कलावती से।"

"कलावती को बुलवाइए।"

सदाशिव शास्त्री ने खडे होकर कहा, "शिवबसप्पाजी, कलावती स्वर्ग चली गई।"

उन्होंने बतलाया कि किस तरह कलावती उनके पास आकर सब षड-यन्त्र का हाल बता गई थी और उन्होंने जाकर रानी चेन्नम्मा को सावधान किया था।

शिवबसप्पा शास्त्री के बयान से सतुष्ट नही हुआ। बोला, "शास्त्रीजी सच बोल रहे है, क्या इसके लिए रानी गवाही दे सकती है ?"

सभा शिवबसप्पा की इस उद्धतता पर बडी नाराज हुई कि वह रानी को ही गवाही देने के लिए चुनौती दे रहे ह।

मौलवीसाहेब ने क्रुद्ध होकर पूछा, "आप रानी की बेइज्जती कर रहे है। रानी के सामने ही शास्त्रीजी ने जब सच्ची-सच्ची घटना बतलाई तो रानी से गवाही दिलाने की क्या जरूरत है ?"

इसपर चेन्नम्मा ने खडे होकर कहा, "आवश्यकता है, मौलवीसाहब। सदाशिव शास्त्री ने जो कुछ कहा, वह अक्षरश सत्य है। मैने ही आज्ञा दी थी कि विष मिली खीर महान्तव्वा को खिलाई जाय। उसने अपना अपराध

स्वीकार किया और वतलाया कि मल्लप्पाशेट्टी की प्रेरणा से उसने इस काम में हाथ डाला था। चूंकि कलावती ने हमको इस षड्यन्त्र से सावधान कर दिया था, इसलिए मल्लप्पाशेट्टी ने उसको अपनी तलवार से मार डाला।"

तव नाडगौडा ने अपनी सम्मति प्रकट की, "रानीजी, अव और ज्यादा वहस की विल्कुल आवश्यकता नही। मै कित्तूर की समस्त जनता की ओर से प्रार्थना करता हूँ कि अपराधियो को मृत्युदड दिया जाय।"

चेन्नम्मा कुछ देर सोचकर वोली, "हम लोग स्वय इनसव कामो में भाग ले रहे थे, इसलिए हमारे लिए सत्य का जानना कठिन है। थैकरे के आगमन मे उन दोनो का क्या हाथ है, यह स्पष्ट जाने विना उनको दड देना अनुचित है। शिववसप्पाजी का कहना है कि दोनो दीवान विल्कुल निरपराध है। मुझे वडी खुशी होगी, यदि यह सिद्ध हो जाय कि वे निरपराव है। मेरी इच्छा है कि कित्तर का कोई भी नागरिक देशद्रोही न समझा जाय, मेरी सम्मति मे दीक्षितजी को वुलाकर उनसे अच्छी तरह से छानवीन कराके इस मामले का निर्णय करना उचित है।"

यद्यपि नाडगौडा की धारणा थी कि यह मामला स्वत सिद्ध है, इस विषय में और विचार को आवश्यकता नही है, फिर भी उन्होने रानी की वात का विरोध नही किया।

शिववसप्पा ने सोचा कि वेंकटराय चिदम्वर दीक्षित का वहनोई है। दीक्षितजी उसे वचाने के लिये प्रयत्न किये विना न रहेंगे। वेंकटराय वचाना हो तो मल्लप्पाशेट्टी को भी वचाना पडेगा।

रानी ने पूछा, "मेरी वात आप सब लोगो को स्वीकार है?

"स्वीकार है।"

"शिववसप्पाजी क्या कहते है?"

शिववसप्पा ने कहा, "मुझे भी स्वीकार है।"

दीक्षितजी के लिए शीघ्र ही वुलावा भेजा गया। वेंकटराय की पत्नी पद्मावतम्मा ने भी दूत भेजकर वडे भाई से प्रार्थना की कि वह तुरन्त चले

जाए ।

अगले दिन प्रात कित्तूर के राजमहल मे पुन सभा हुई। दोनो पक्षो की बातें सुनकर दीक्षितजी ने अत्यन्त दुखित होकर कहा, "रानी, आप कित्तूर की समस्त प्रजा की आराध्य देवी है। सब जानते है कि आप धर्म विरुद्ध कोई भी बात नही करेंगी। आप जो कुछ भी निर्णय करेंगी, उसे मानना हमारा कर्त्तव्य है।"

"दीक्षितजी, मेरा फैसला इकतरफा हो सकता है। इस विषय में आपको ही मेरा मार्ग-दर्शन करना चाहिए।"

"रानीजी, पद्मावती मेरी बहन है। मेरा कर्त्तव्य है कि मै उसके सुहाग की रक्षा करू। इसके सिवा इस मामले में अभियुक्त मल्लप्पाशेट्टी और वेंकटराय मेरी बराबरी के है। उनके हित की रक्षा करना भी मेरा कर्त्तव्य है।"

दीक्षितजी के ये शब्द सुनकर शिवबसप्पा का चेहरा खिल उठा।

नाडगौडा तथा अन्य दरबारियो ने भौंहें टेढी करके दीक्षितजी को क्रोध से देखा। दीक्षितजी बोले, "इन दीवानो के ऊपर अन्य कोई आरोप होता तो मै आपके पैर पकडकर क्षमा मागता, किन्तु उनपर लगे हुए भयकर अपराधो की अवहेलना नही की जा सकती। कित्तूर के साथ दगा करनेवाले कदापि क्षमा के पात्र नही है। मल्लप्पाशेट्टी और वेंकटराय ने अंग्रेजो को जो पत्र लिखकर भेजे थे, उनमे से कुछ मैने देखे है। इसमें कोई सदेह नही कि वे कित्तूर को अंग्रेजो के हाथ में सौंप देने को तैयार थे।"

शिवबसप्पा ने क्रोध मे भरकर पूछा, "झूठ, बिल्कुल झूठ। इसका प्रमाण क्या है?"

दीक्षितजी गभीरता से बोले, "आपको प्रमाण चाहिए? प्रमाण यह है, देखिए।"

और कागजो का एक पुलिन्दा शिवबसप्पा की तरफ फेंककर ऊचे स्वर में उन्होने कहा, "रानीजी, मै प्रार्थना करता हू कि दोनो को प्राणदड दिया जाय।"

शिववसप्पा सभा में नही ठहरा और रानी को प्रणाम करके बाहर चला गया।

नाडगौडा ने सुझाव दिया, "रानीजी, दोनो देशद्रोही हाथी के पैरो से बधवाकर कुचलवा दिये जाय।"

सबने उसका समर्थन किया। चेन्नम्मा रानी ने दु खपूर्वक कहा, "दीवान जी, आपने जनता की सम्मति सुनी। दोनो अपराधियो को हाथी के पैरो से बधवाकर कुचलवा दीजिए।"

आज्ञा देकर रानी दरबार से चली गई।

दीक्षितजी छोटी बहन पद्मावती को मुह दिखाए बिना कित्तूर से अपने गाव लौट गये।

उसी दिन शाम को मल्लप्पाशेट्टी और वेंकटराय के अपराध की सारे नगर में ढिंढोरा पीटकर घोषणा की गई और उनको हाथी के पैरो मे बधवा-कर नगर भर में घुमाया गया। लोगो ने देशद्रोहियो के ऊपर मिट्टी फेंकी, गालिया दी और थूका। क्रोध मे भरी स्त्रियो ने उनपर गोबर की वर्षा की। नगर के बडे लोगो ने यह कहकर मुह फेर लिया कि ऐसे दुष्टो को देखने से पाप लगता है। दोनो अपराधी नगर में घूमते हुए हाथी के पैरो के नीचे कुचल कर मर गए।

: १५ :

कित्तूर का विजयोत्सव बैलहोंगल में समारोहपूर्वक मनाया गया। लोगो ने गायो को खूब नहला-धुलाकर, सजाकर, उनकी गरदन में फूलमाला डालकर जुलूस निकाला। शाम को मारुति-मन्दिर के पहलवानो ने दीक्षित जी के नेतृत्व में व्यायाम के प्रदर्शन किये और तलवार की लडाई दिखाई।

नागरकट्टी ने उदास बैठे दीक्षितजी के पास आकर प्रार्थना की कि आप कुछ कहिए।

दीक्षितजी ने खडे होकर कहा, "इसमे सदेह नही कि आज हम जो उत्सव मना रहे है, वह बडा महत्वपूर्ण है। हमारी पवित्र मातृभूमि गुलामी की शृखला मे बधने ही वाली थी कि रानी चेन्नम्मा ने अपने असीम बल और साहस से उसकी रक्षा की। कित्तूर के ऊपर भगवान की कृपादृष्टि होने का इससे बढकर दूसरा सबूत नही हो सकता। पर हमको अपनी विजय और उससे होनेवाले महान आनन्द के कारण अपने कर्त्तव्य को नही भूल जाना चाहिए। कित्तूर का युद्ध अभी समाप्त नही हुआ है। अभी तो आरम्भ ही हुआ है। सत्तालोलुप अग्रेज भारत में अपनी साम्राज्यशाही कायम करने का प्रबल प्रयत्न कर रहे है। आप लोग यह न समझें कि वे अपनी पराजय स्वीकार करके शात होकर बैठ जायगे। वे चुपचाप नही बैठेंगे। उचित अवसर की प्रतीक्षा में रहेंगे और मौका मिलते ही कित्तूर के ऊपर टूट पडेंगे। इस बार वे रानी चेनम्मा को पकडने के लिए पूरी शक्ति लगा देंगे। आप जानते हैं कि अग्रेज भारत पर वीरो की भाति आक्रमण करके नही आए। वे तलवार-बन्दूक लेकर भारत में नही आये, बाट-तराजू लेकर आए है। उनके शस्त्र उनके साधन, क्षात्र-धर्म और पौरुष नही है। उनका असली रूप इसीसे प्रकट हो गया है कि उन्होने कित्तूर के दो दीवानो को अपने पक्ष में करके उनके द्वारा रानी चेन्नम्मा की जान लेने की कुचेष्टा की।

"कित्तूर के शूरवीरो, आप लोगो को स्वातन्त्र्य-युद्ध के दूसरे दौर के लिए

तैयार रहना चाहिए। अग्रेजो की चालो का पता लगाने के लिए सावधान रहना चाहिए। हम अग्रेजो के उपद्रव से मुक्त हो जाय तो फिर सम्पूर्ण भारत को उनकी दासता से मुक्त कराने का प्रयत्न करना है।

जनसमूह ने बडे उत्साह से जयघोष किया, "रानी चेन्नम्मा की जय हो! कित्तूर की स्वतन्त्रता की जय हो!"

× × ×

रानी चेन्नम्मा, गुरुसिद्दप्पा और दीक्षितजी ने जैसा अनुमान किया था, वैसा ही हुआ। अग्रेजो ने हार नही मानी।

दक्षिण भारत के कमिश्नर चैपलिन ने कित्तूर मे हुई अग्रेजो की दुर्गति की बात सुनकर क्रोध से भरकर शपथ ली, "कितूर को भस्म करके मै थैकरेसाहब की आत्मा को शाति पहुँचाऊँगा।"

इसके बाद चैपलिन ने कप्तान जेम्सन की तृतीय बम्बई रेजीमेट और कप्तान स्पिलर की घुडसवार सेना के साथ ३० नवम्बर को कित्तूर में आकर पडाव डाल दिया।

मल्लप्पाशेट्टी के विश्वासपात्र शिवबसप्पा ने रात को गुप्त रूप से जाकर चैपलिन को कितूर की युद्ध की तैयारी तथा अन्य सब समाचार ब्योरेवार देकर कहा, "साहब, आप सीधे आक्रमण करके युद्ध द्वारा कितूर लेने का विचार छोड दीजिए। आपके सैनिक वेतन के लिए और लूट की आशा से लडते है, किन्तु यहा के सैनिक कित्तूर के लिए और रानी चेन्नम्मा के लिए लडते है। इनको प्राणो का मोह बिल्कुल नही है। यहाकी स्त्रिया और बच्चे तक युद्ध के लिए तैयार है। आप और किसी उपाय से विजय प्राप्त कर सकते है, युद्ध द्वारा नही।"

"किलेदारजी, कित्तूर जैसे छोटे राज्य मे इतना बल कहा से आ गया?"

"रानी चेन्नम्मा के कारण। उसे मानवी न समझिए, वह पिशाची का अवतार है। निरपराधिनी महान्तव्वा को विष खिलाकर मारने में उसे तनिक भी सकोच नही हुआ। राज्य के लिए रानी की ममता शब्दो मे नही

बताई जा सकती। यद्यपि मास्त मरडियगौडा का लडका नाम के लिए देसाई है, तथापि सारा शासन-सूत्र रानी चेन्नम्मा के हाथ मे है। बडी रानी रुद्रम्मा और स्वर्गीय शिवलिंगरुद्रसर्ज की पत्नी वीरव्वा को अलग रखकर वही सब कुछ बनी बैठी है।"

"महल मे कही असतोष का धुआ उठता है ?"

"जी हा, उठता है और काफी उठता है। आप सूखी लकडी के चार टुकडे डाल दे तो आग जोर से भडक उठेगी।"

"रानी के सहायक कौन-कौन है ?"

"दीवान गुरुसिद्दप्पा, रामलिंगप्पा, अमटूर सैदनसाहब, बालप्पा और कोनूर मल्लप्पा।"

"मुसलमान भी रानी की मदद करते है ?"

"जी हा, रानी ने होशियारी से सबको अपनी मुट्ठी में कर लिया है। पिछले युद्ध मे सैदनसाहब के पुत्र बाला ने रानी की प्राण-रक्षा के लिए अपने प्राण दे दिए। रानी को बैलहोंगल से भी बहुत सहायता मिली है।"

"किससे ?"

"वहा एक कूटनीतिज्ञ ब्राह्मण चिदम्बर दीक्षित है। कोई समय था, जब वह कित्तूर का दीवान था। मल्लप्पाशेट्टी ने उनको धीरे-धीरे दीवान के पद से हटाकर घर भेज दिया। मल्लप्पाशेट्टी के विद्वेष के कारण उसने दुष्टो की एक मडली इकट्ठी कर रखी है और उनकी मदद से उल्टे-सीधे काम करता रहता है। उसके साथी नागरकट्टी, सगोल्ली, रायण्णा, बालण्णा, गजवीर और चनननप्पा खून, लूटमार आदि में बेजोड है।"

"आप किस तरफ रहेंगे, किलेदारजी ?"

"आपके अलावा और मैं किसकी तरफ हो सकता हूँ। आप चिन्ता क्यो करते है ? सारा कित्तूर का किला मेरे हाथो मे है। आपका यूनियन जैक मैं अपने हाथो से कित्तूर के किले पर फहराऊँगा।"

"इसके बदले मे आप क्या आशा रखते है ?"

"कित्तूर का राज्य।"

"यदि आप धोखा दे तो ?"

"आप मुझको गोली से उडा दीजिए।"

"मजूर, इस समय हम क्या करे ?"

"सन्धि की वात चलाकर रानी की युद्ध की तैयारी वन्द करानी चाहिए। इस वीच आप अपना वल वढाकर चारो ओर से कित्तूर के किले पर घेरा डाल दीजिए। किले का नक्शा मैं आपको दे द्गा।"

"क्या आप सधि का प्रस्ताव लेकर रानी के पास जायगे ?"

"नही, मै न जाऊँ, तो अच्छा। रानी को जरा भी सदेह हो गया तो मैं जीता नही वचूगा। इससे आगे चलकर जो सहायता मुझसे आपको मिल सकेगी, वह भी न मिलेगी।"

शिववसप्पा के चले जाने पर चैपलिन ने कप्तान जेमसन और कप्तान स्पिलर से सलाह करके निम्नलिखित घोषणा की

"हम कित्तूर से युद्ध करने नही आए है, वल्कि कितूर की रानी के साथ सन्धि करके कित्तूर राज्य उनके लिए ही छोड देने को आए है। हम उन सवको क्षमा करने को तैयार है, जिन्होने आजतक अग्रेजो के खिलाफ हथियार उठाए थे। मै प्रार्थना करता हूँ कि रानी कैद किये हुए स्टीवेन्सन, इलियट और अन्य अग्रेज सैनिको को तुरन्त छोडकर हमारे साथ सधि-कर लें।"

सवने यह घोषणा सुनी।

गुरुसिद्दप्पा का विचार था कि चैपलिन की इस घोषणा मे धोखा है।

रामलिगप्पा वोला, "दीवानजी, धोखे का डर नही। थैकरे की मृत्यु से अग्रेजो के हौसले पस्त हो गए है। चैपलिन को भय है कि जो दुर्गति थैकरे की हुई, वही कही उसकी भी न हो। इसीलिए वह सधि करना चाहता है। इस समय हमें सधि करना ही उचित मालूम होता है।"

शिववसप्पा ने भी उसकी हा-में-हा मिलाते हुए कहा, "दीवानजी, अनावश्यक रक्तपात को रोकना ही अच्छा है। चैपलिन स्टीवेंसन और इलियट के प्राण वचाने के लिए आतुर है। इस सुअवसर से हमे पूरा-पूरा फायदा

उठाना चाहिए। उनको मुक्त करके उन्हीको मध्यस्थ बनाकर चैंपलिन साहब के पास संधि की बातचीत के लिए भेजना अच्छा है।"

कोणूर मलप्पा का विरोध निरर्थक हो गया।

रामलिंगप्पा और शिवबसप्पा की बातों ने गुरुसिद्दप्पा को प्रभावित किया। उन्होंने रानी चेन्नम्मा की स्वीकृति लेकर स्टीवेंसन और इलियट को बंधन मुक्त कर दिया।

कमिश्नर चैंपलिन के सहानुभति प्रकट करने पर स्टीवेंसन ने कहा, "कित्तूर के अधिकारियों ने हमें अतिथियों की तरह रक्खा। मुझे मालूम नही था कि इन देसी लोगों में भी इतनी धर्मबुद्धि होती है।"

स्टीवेन्सन और इलियट का छुटकारा होते ही चैंपलिन की नीयत बदल गई। उसने अपनी निकाली हुई घोषणा को एक तरफ रखकर २ दिसम्बर को कप्तान जेम्सन और कप्तान स्टिलर को कित्तूर पर चढाई करने की आज्ञा दे दी।

रानी चेन्नम्मा और कित्तूर के लोगों की समझ में नहीं आया कि क्या करें। वे क्रोध मे भरकर कहने लगे, "कितना धोखा दिया है इन लोगों ने।"

चैंपलिन ने कित्तूर को ध्वंस करने का निश्चय करके हुबली, धारवाड और शोलापुर से नई-नई पलटनें मंगवाई।

लेफ्टीनेंट कर्नल वाकर चौथी लाइट कैवैलरी और आठवी लाइट कैवैलरी ब्रिगेड लेकर आया।

लेफ्टिनेंट कर्नल डीकन के नेतृत्व में अंग्रेज सेना ने कित्तूर के किले को घेर लिया। मेजर पामर ने किले पर बारूद की वर्षा आरम्भ कर दी। लेफ्टिनेंट कर्नल मैकलियड ने पास ही एक पहाडी पर चढकर कित्तूर पर धावा बोलने की तैयारी की।

कित्तूर की सेना ने सब तरफ से युद्ध किया। पर उसका बारूद का भंडार कम होने लगा तो उसने किले के ऊपरी भाग पर चढकर अंग्रेजो के ऊपर तोप और बन्दूकों से बारूद की वर्षा की। मनरो गोली खाकर भूमि पर लुढक गया।

पहले दिन के युद्ध मे कित्तूर का पलडा भारी रहा ।

दूसरे दिन ३ दिसम्बर को १८ पौंड और ६ पौड के गोले फेंकने वाली तोपो के साथ एक सहायक दस्ता कित्तूर पहुचा ।

४ तारीख को प्रात काल नौ वजे मेजर मैकलियड और मेजर ट्रूमैन की टुकडियो ने किले की दीवार पर तोपो की धुआधार वर्षा करके दीवार में एक छेद कर दिया ।

शत्रु-सेना को किले के फाटक की ओर वढते हुए देखकर रानी की सेना ने अपनी तोपो का मुह उस ओर फेर कर गोलावारी करनी शुरु की । किन्तु उसकी तोपो की वारूद ने काम नही दिया ।

अग्रेजी सेना किले का फाटक तोडकर भीतर घुस आई । किले की टूटी हुई दीवार की ओर से मैकलियड और ट्रूमैन की सेना अदर आ गई ।

रानी किले के पिछले फाटक की रक्षा कर रही थी । गुरुसिद्दप्पा दौडकर उसके पास जाकर वोले, "वडा धोखा हुआ, रानीजी । कुछ कमीनो ने हमारी वारूद मे गोवर मिला दिया है । उसने काम नही दिया ।"

मल्लप्पा अपने सैनिको के साथ धीरज धरकर शत्रु-सेना के ऊपर टूट पडा । अग्रेज सेना मल्लप्पा के तूफानी वेग को न सह सकी । तव ट्रूमैन मल्लप्पा को घेरने के लिए दौडा और उसने अपनी वन्दूक से मल्लप्पा को उडा दिया ।

मल्लप्पा की मृत्यु हो जाने पर कित्तूर की सेना के वचने का कोई आसार न रहा । मौत से न डरनेवाले कित्तूर के सैनिक शत्रु-सेना पर उन्मत्त होकर टूट पडे और उसको मारकर स्वय भी मौत के मुह में जाने लगे ।

गुरुसिद्दप्पा रानी के पास जाकर वोले, "रानीजी, अव कित्तूर नही वच सकता । आप रनिवास की स्त्रियो और वालक देसाई के साथ तुरन्त यहा से वच निकलें ।"

पर दीवानजी की वात रानी ने नही मानी । वह वोली, "मेरी प्रजा वहादुरी से युद्ध करके मरती रहे और मै कायरो की तरह भाग जाऊ! कित्तूर की रानी कित्तूर के वीरो के रक्त से पवित्र हुई इस भूमि को अपने

रक्त से सींचने को तैयार हैं।"

"रानीजी, आप मेरी सलाह मानिए। इस युद्ध मे किसी तरह भी हमारी विजय नही हो सकती। अंग्रेजो की सेना के सामने, उनकी चालो के सामने, हमारी सेना टिकी नही रह सकती। आपके अपने प्राणो की बलि देने का कोई अर्थ नही। आप जीवित रहेंगी तो आज नही तो कल, हम नई सेना खडी करके कित्तूर को फिर जीत सकेंगे। रानीजी, कित्तूर के भविष्य के लिए यह आवश्यक है कि आप गुप्तद्वार से वाहर चली जाय।

"अपने ऊपर पूर्ण भरोसा रखनेवाली प्रजा को मृत्यु के मुह मे डाल कर मैं अपने प्राण नही बचा सकती।"

"जल्दी कीजिए, रानीजी, अब देर करने का समय नही है। मैं सफेद झडा दिखलाकर युद्ध बन्द किये देता हू।"

× × ×

दीवान गुरुसिद्दप्पा के बहुत कहने पर रानी चेन्नम्मा को अपनी आत्मा की आवाज के विरुद्ध रुद्रम्मा, वीरम्मा, नीलव्वा, शिवलिंगव्वा और बालक देसाई के साथ गुप्त मार्ग से होकर भाग जाना पडा।

रानी और परिवार के सब लोग गुप्तमार्ग से जा ही रहे थे कि अंग्रेजो की एक टुकडी ने उनको आ घेरा और रानी तथा राज-परिवार के बाकी सब लोगो को कैद करके बैलहोंगल के किले मे ले गए। अंग्रेज सिपाहियो ने चिदम्बर दीक्षित को मकान में ही कैद कर लिया।

नागरकट्टी, रायण्णा, बालण्णा, गजवीर और चन्नबसप्पा चुपचाप कही जा छिपे। उनको ढूढ निकालने की अंग्रेजो ने जी तोड कोशिश की पर सब व्यर्थ हुआ।

गुरुसिद्दप्पा, सैदन, शिवकुमार तथा रामलिंगप्पा पकड लिये गए और अगले दिन चैपलिन ने उन सबको नगर के चौक मे फासी पर लटका दिया।

अंग्रेज सैनिको ने कित्तूर मे लूट-मार मचा दी।

सोलह लाख रुपया नकद, चार लाख रुपये के हीरे-मोती और आभूषण,

नेक हाथी, तीन हजार घोडे, दो हजार ऊट, छत्तीस लोहे और कासे की
ोपे, छप्पन सौ बन्दूके, पच्चीस जहरीली तलवारें, भाले और बहुत-सा
ोला-बारूद अग्रेजो के हाथ लगा।

कित्तूर के अधीनस्थ तीन सौ अट्ठावन ग्रामो और बहत्तर किलो पर
ार अग्रेजो का प्रभुत्व स्थापित हो गया। कित्तूर के किले पर चमकते हुए
ाज्य के झडे की जगह अग्रेजो का यूनियन जैक फहरा दिया गया।

१८ दिसम्बर को कित्तूर पूर्णरूप से अग्रेजो के हाथो मे आ गया।

: १६ :

मनरो साहब को दफनाने के बाद अग्रेजो के शिविर मे विजयोत्सव आरभ हुआ।

चैंपलिन और अन्य फौजी अफसरो ने कित्तूर की लूट मे भाग लेकर कीमती जेवरो को अपने लिए रख लिया।

रणचडी के ताडव नृत्य की रगस्थली बना हुआ कित्तूर धू-धू करके जल रहा था। अग्रेजो की तोपो और किरचो के लक्ष्य बने हुए कित्तूर के शूरो के शव किले के चारो ओर मड रहे थे। ऐसा कोई घर न था, जिसपर मृत्यु-देवी की कृपा न हुई हो।

रुद्र की इस लीलास्थली में यदि कोई प्रसन्न-चित्त था तो वह था अकेला शिवबसप्पा। दूल्हे की तरह सजकर आये हुए शिवबसप्पा का कप्तान जेम्सन ने स्वागत किया। चैंपलिन ने शिष्टाचार से पूछा, "कहिए क्या हाल है ?"

"आपकी कृपा से सब ठीक है।"

चैंपलिन ने उससे और अधिक बातचीत न की। अपने साथियो से गपशप करने लगा।

उसके इस रूखे व्यवहार से शिवबसप्पा को चोट लगी। अपमान का घूट पीकर उसने कहा, "साहब का काम पूरा हो गया न !"

"हा, पूरा हो गया।"

"अब आगे क्या विचार है।"

"कित्तूर का सब प्रबंध करके हम कल या परसो चले जायगे।"

"ठीक है, पर मैं आपको आपके वचन की याद दिलाने आया हू।"

"वचन ! हमने किसको वचन दिया था ?"

"मालूम होता है, आप भूल गये है। आपने कहा था कि कित्तूर को जीतकर वह राज्य मुझे सौंप देंगे।"

"ओ हो ? यह बात ? (कर्नल स्पिलर को सबोधित करके) शिवबसप्पा

ने हमारा जो उपकार किया है, उसके लिए कुछ करना चाहिए न ?"

"मै नही जानता कि शिववसप्पा ने क्या उपकार किया है।"

"उनसे ही पूछिए।"

"शिववनप्पा ने कहा, "मैने साहव को किले के विषय मे जानकारी दी। आपको यह मुझसे ही मालूम हुआ कि किले के कौन-कौन से भाग कमजोर है। मैने ही किले के बारूद के भडार मे गोवर मिलवा दिया और इस तरह आप की जीत कराई।"

कप्तान ट्रूमैन ने पूछा, "शिववसप्पाजी, आप कित्तर के किलेदार है न ?"

"जी हा।"

"शत्रुपक्ष की सहायता करनेवाले अग्रेज किलेदार का जो सम्मान हम करते है, वही सम्मान शिववसप्पा का भी करना चाहिए। इस विषय में में भेदभाव नही करना चाहिए।"

ट्रूमैन की बात का अर्थ स्पष्टरूप से शिववसप्पा की समझ मे नही आया। उसने कहा, "आपने कहा था कि कित्तूर जीत लेने पर राज्य मुझे सौंप देंगे। मै उसे लेने आया हू।"

"ठीक है, ठीक है,। राज्य हम आपको सौंप देगे।"

यह कहकर चैपलिन ने स्टीवेसन की ओर देखा। उसके देखते ही स्टीवेसन और इलियट दोनो ने शिववसप्पा को पकडकर उसके हाथो मे हथकडी पहना दी।

शिववसप्पा भय से कापने लगा और बोला, "साहव।"

चैपलिन ने व्यग से पूछा, "क्यो नये महाराज के जुलूस के लिए तैयारी हो गई ?"

कप्तान ट्रूमैन और वाकर ने शिववसप्पा को जबरदस्ती खीचकर पीछे की ओर मुह करके गधे पर विठाया और सारे नगर मे घुमाकर चौक मे ले आए।

वहा अग्रेज सैनिको के सामने शिववसप्पा को खडा करके उसकी आखो

पर पट्टी बांधकर कहा, "शिवबसप्पा, तू राज्यद्रोही है, देशद्रोही है। कित्तूर राज्य के लालच से तूने सब भेद शत्रुओ को बतला दिया। कित्तूर के सर्व-नाश का कारण तू ही है। इन महा अपराध के लिए तुझे गोली से उडा दिया जायगा।"

शिवबसप्पा की आखो से आसुओ की धारा बह चली। पश्चात्ताप करते हुए रोते-रोते वह बोला, "अग्रेजो का विश्वास करके मैंने धोखा खाया। विश्वासघातक बनकर कित्तूर को शत्रुओ के हाथो सौप दिया। माता चेन्नम्मा, मुझे क्षमा करो। कित्तूर, वीरभूमि कित्तूर, मेरा अपराध क्षमा कर।"

ये शब्द उसके मुह से निकल ही रहे थे कि अग्रेज सैनिको की बदूको ने उसकी जीवन-लीला समाप्त कर दी।

चैपलिन दो दिन कित्तूर में ठहरा। राज्य-व्यवस्था अपने प्रतिनिधि ट्रूमैन को सौंपकर, ४०० गाडियो मे कित्तूर की सपत्ति लादकर वह धारवाड को चल दिया।

: १७ :

वेंलहोगल के किले मे कैद रानी चेन्नम्मा और उनके परिवार पर सख्त पहरा विठलाया गया। किलेदार हैरिस की आज्ञा के विना कोई भीतर प्रवेश नही कर सकता था और अन्दर के लोग वाहर नही आ सकते थे।

गिरफ्तार होने के दो ही दिन के अन्दर रुद्रव्वा रानी शोक के मारे मर गई।

रुद्रव्वारानी की वृद्ध माता नीलव्वा, पुत्रवधू वीरव्वा, सौत शिवलिंगव्वा, तथा वालक देसाई की देख-भाल का वोझ चेन्नम्मा रानी पर आ पडा। चेन्नम्मा कारागार की छोटी खिडकी के कित्तूर की ओर देखकर वार-वार नि श्वास छोडती थी—

"कित्तूर, मेरी मातृभूमि कित्तूर! भाग्यहीन कित्तूर! अन्त मे दासता ही तेरे भाग्य मे वदी थी। तेरी वीरपुत्र-पुत्रियो का रक्त तर्पण निष्फल हुआ। मेरी ओर क्यो इस तरह हीन-भाव से निहार रही है? तेरी रानी आज वंदिनी है। कारागार के लोहे के सीकचो मे वह वन्द पडी है! पर मुझमें इतना साहस है कि यदि मै एक वार यहा से वाहर जा सकू तो अपनी मातृ-भूमि को वन्धनमुक्त कर सकती हू। पर वाहर जाऊ कैसे?

"कित्तूर के सपूतो ने वीरगति पाई। गुरुसिद्दप्पा भी हसते-हसते सदा के लिए सो गये। चिदम्वर दीक्षित कारागार मे दिन काट रहे है। कित्तूर अव क्या होगा?

"रायण्णा, नागरकट्टी, वालण्णा, गजवीर, चिन्नवसप्पा ये सव भी [illegible]ति को प्राप्त हो गए होगे तो?"

रानी चेन्नम्मा का आहार छुट गया और नीद कोसो [illegible]र हो गई।

वीरव्वा और शिवलिंगव्वा वार-वार आग्रह करती थी, लेकिन रानी चेन्नम्मा ने अन्न ग्रहण नही किया।

रानी चेन्नम्मा के अन्न-त्याग की वात सुनकर कप्तान हैरिस डर गया।

जेल मे रानी मर गई तो उसकी मुसीबत हो जायगी, इस बात से भयभीत होकर उसने स्वय रानी के स्थान पर आकर कहा, "रानीजी, आप भोजन कीजिए।"

"यह तुम्हारी सरकार की आज्ञा है क्या ?"

"नही, मेरी प्रार्थना है।"

"कप्तानसाहब, मैने अन्न-जल त्याग कर प्राण देने का सकल्प कर लिया है। कित्तूर का पतन होने के बाद कित्तूर की रानी को जीवित नही रहना चाहिए।"

"आप प्राण दे देंगी तो चैपलिनसाहब मुझपर दोष लगाकर मुझे दड देंगे। मुझ निरपराधी को आप व्यर्थ झझट में फसायेंगी। आपको जो-जो सुविधाए चाहिए, मै उन सबका प्रबध करने को तैयार हू। कृपा करके उपवास छोड दीजिए।"

हैरिस की बात सुनकर रानी बोली, "कप्तानसाहब, आप लोगो की बात पर वहातक विश्वास किया जा सकता है, यह मैं भली-भाति जानती हू। आप ही लोगो ने सधि के लिए हमको बुलाकर धोखा दिया और कित्तूर पर घेरा डाल दिया।"

"रानीसाहब, वह राजनैतिक दाव-पेंच है। उसके लिए मुझे क्यो दोष देती है ? व्यक्तिगतरूप से मुझसे आपकी कोई मान-हानि नही होगी। इसके लिए मै शपथ खाता हू। नौकरी से अवकाश ग्रहण करके इग्लैड जाकर मै आपका जीवन-चरित लिखकर दुनिया के कोने-कोने में फैला दूगा। आपकी जीवन-कथा फ्रान्स के बधन को समाप्त करनेवाली जान आफ आर्क की जीवन-कथा मे भी अद्भुत है।"

"वह कौन थी ?" रानी ने पूछा।

"वह! वह फ्रास की एक ग्रामीण बालिका थी। फ्रास को गुलामी में में रखनेवाले इग्लैंट के विरुद्ध लडकर उसने फ्रास को स्वाधीन किया था।"

"अग्रेजो ने उनका क्या किया ?"

"जादूगरनी कहकर उसे जलाकर खाक कर दिया।"

"मुझे भी जलाओगे क्या ?"

"नही, रानी साहिबा !"

"कैद मे मुझे कितने दिन रहना पडेगा ?"

इस बारे मे मुझे कमिश्नरसाहब से कोई आदेश नही मिला।"

"मुद्दततक कैद मे पडे रहने से प्राण देकर शाति पा लेना अच्छा नहीं होगा क्या ?"

" द्रव्वा रानी की मौत के लिए मुझे सफाई देनी पडी।"

"कप्तानसाहब, छुटपन से ही मेरा यह नियम रहा है कि मै गुरुजी से पूजा कराके और उनका चरणोदक लिये विना भोजन नही करती हू। किले के भीतर आप किसीको आने नही देते तो मै पूजा कैसे करू ?"

"मै आपके गुरु के आने-जाने की अनुमति देने को तैयार हू। कौन है आपके गुरु ?"

"अपने घर मे नजरवन्द चिदम्बर दीक्षित।"

"अच्छा चिदम्बर दीक्षित आपके गुरु है ?" कप्तान हैरिस ने कापते स्वर मे कहा।

"जी हा।"

"वह तो क्राति करने के आरोप मे कैद कर लिये गये है। किसी दूसरे को मै भेज सकता हू। उनके वारे मे मुझे अधिकार नही है।"

"तो जाने दीजिए, मुझे भी भोजन की दरकार नही है।"

"रानीसाहब, आप मुझे वडे झझट मे फसा रही है।"

"हम अपने गुरु से ही पूजा कराते है, दूसरो से कभी नही कराते।"

"ठीक है। हमारे यहा भी यही रिवाज है। किन्तु मै क्या करू ?"

" ीक्षितजी आपके सिपाहियो के पहरे मे आकर यहा पूजा कराकर वापस जा सकते है। क्या आपको डर है कि वे भाग जायेगे ?"

"नही, कडा पहरा तो रखा जासकता है,किन्तु व्यवस्था विगड जायगी। चैपलिनसाहव को मालूम हो जायगा ो मुझे दड मिलेगा।"

"ठीक है, मै समझती थी कि धर्म मे अग्रेजो को श्रद्धा भले ही न हो,

पर उनका दृष्टिकोण मानवीय है। मैंने यह कल्पना भी न की थी कि वे कित्तूर को कुचक्र से जीतने के अलावा एक स्त्री को भी भूखा मारकर बदला लेंगे।"

कप्तान हैरिस ने रानी की बात सुनकर गरदन झुका ली। कमिश्नर के व्यवहार के प्रति उसके मन में घृणा पैदा हुई। मन-ही-मन विचार कर वह बोला, "रानीसाहब, इंग्लैंड के महाकवि बाइरन ने अपनी एक कविता में कहा है कि 'स्वतन्त्रता नीच कारागार में प्रकाशित होनेवाली एक दिव्य ज्योति है।'

"आप यह न समझिए कि अंग्रेज लोग स्वतन्त्रता की अमर ज्योति को बुझने न देने के लिए आपकी की हुई अनुपम सेवा, शक्ति और शौर्य का मान नही करेंगे, उसे गौरव न ंगे। हमारे महाकवि बाइरन ने भी ग्रीस की स्वतन्त्रता के लिए युद्ध किया था।"

"कप्तानसाहब, क्या आप कित्तूर की स्वाधीनता के लिए और इसी प्रकार भारत की स्वतन्त्रता के लिए लड़ेंगे?"

"रानीसाहब, मैं साम्राज्यशाही का दास हूं। कल मेरे देशवासी ही भारत की स्वतन्त्रता के लिए लड़ेंगे—स्वतन्त्र भारत को बन्धु समझकर, गले लगाकर, उसे सम्मानित करेंगे।"

"कप्तानसाहब, आप चिरायु हों।" गद्‌गद् होकर रानी ने कहा,

"रानीसाहब मैं आज्ञा दिए देता हूं कि आपके गुरु आकर पूजा करा दें। आप यह वचन दें कि पूजा होने पर आप भोजन कर लेंगी।"

"अवश्य करूंगी।"

किले के पहरेदार दीक्षितजी को बुला लाये। रानी चेन्नम्मा और दीक्षितजी पूजा के लिए बैठे।

जोर-जोर से मन्त्रों का पाठ करते हुए बीच में दीक्षितजी ने पूछा,

"रानीजी, किले में मेरे आने की अनुमति आपने कैसे प्राप्त की?"

"किलेदार कप्तान हैरिस बहुत भला है। मेरे उपवास से उसका चित्त

खिन्न हो गया। मैंने उससे कहा कि मैं अपने गुरु दीक्षितजी से पूजा कराये विना भोजन ग्रहण नही करती। दीक्षितजी, जव कित्तूर दूसरो के हाथ में चला गया, तो मेरा जीवन वृथा है।"

रानीजी, आपको हिम्मत नही हारनी चाहिए। रायण्णा मेना एकत्र कर रहा है। "

"रायण्णा अग्रेजो के हाथो में नही पडा ?"

"रायण्णा, वालण्णा, विच्चुगुती, गजवीर, नागरकट्टी कोई भी अग्रेजों के कब्जे में नही है। उन्होने सगोल्ली के जगल में पडाव डाल रक्खा है। अग्रेजो के खजाने को जाता हुआ रुपया वे लोग लूट लेते है।

"सच ?"

"जी हा, रायण्णा की सेना शीघ्र ही वैलहोगल के किले को घेरकर आपको वन्धन मुक्त करेगी और आपके नेतृत्व—कित्तूर में प्रवेश करके हमारी पवित्र भूमि को पुन मुक्त करायेगी।"

चैन्नम्मा की आखें डवडवा आई।

"दीक्षितजी, मैं धन्य हुई।"

उस दिन से दैनिक पूजा के वहाने कारागार मे जाकर रोज ीक्षितजी चेन्नम्मा को रायण्णा की गति-विधियो से अवगत करा जाया करते थे।

एक दिन चेन्नम्मा ने अपने शरीर पर से सव आभूपण उतारकर दीक्षित-जी को देकर कहा, "इन्हे रायण्णा को दे दीजिए। उसका प्रयत्न सफल हो।"

रानी चेन्नम्मा का आशीर्वाद और सहायता मिलने पर सेनापति राय-ण्णा का उत्साह कई गुना वढ गया।

रायण्णा की सेना में सिर्फ सौ वीर थे। इन्हो शूरो के हृदय मे देशाभिमान का वीज वोकर रायण्णा ने उनको महायोद्धा वना दिया था। इन वीरो ने अपनी देह से निकले हुए रक्त को काली माता पर चढा कर शपथ ली थी, "हम कित्तूर के लिए अपने प्राण अर्पण करने को सदा तैयार रहेंगे।"

रायण्णा के शूरो के कार्यों से अग्रेज सरकार थर्रा गई। रायण्णा अपने दल को साथ लेकर सरकारी दफ्तरो को लूटकर उनमें आग लगा देता था।

पहरेदारो को डराकर खजानो को जाते हुए धन को लूट लेता था।

अग्रेजो ने रायण्णा और उसके साथियो को पकडने के लिए बडी जागीर इनाम मे देने की घोषणा की।

सम्पगाव का मामलेदार कृष्णराय रायण्णा की लूटमार से बहुत तग आ गया था। उसने उससे बदला लेने के लिए कमर कसकर सम्पगाव की मसजिद के पास पचास हजार रुपये छिपाकर रख दिए और ऐसा प्रबन्ध किया कि यह खबर रायण्णा के कानो तक पहुच जाय। पास ही गुप्त पहरा बिठा दिया ?

कृष्णराय के जासूसो ने आकर समाचार दिया कि रायण्णा हदिबडगनाथ के पहाड में छिपा हुआ है। वह सेना लेकर उस पहाड की ओर गया। रायण्णा के योद्धाओ ने कृष्णराय की सेना को घेरकर मार-काट आरम्भ कर दी। कृष्णराय किसी तरह अपनी जान बचाकर भाग निकला।

रायण्णा ने सम्पगाव की मसजिद में घुसकर ५० हजार के खजाने हथिया कर सम्पगाव के किले पर कित्तूर का झडा फहरा दिया।

कित्तूर का झडा देखकर लोगों की जान-में-जान आगई। ऐसा प्रतीत हो रहा था, मानो उनके मृत शरीर पर अमृत छिडक दिया गया।

× × ×

बैलहोगल में सब जगह यह समाचार फैल गया कि दीक्षितजी बीमार पडे है। हैरिस ने भी सुना। यदि वह पूजा को न आये तो रानी फिर उपवास करेगी। इस समस्या को कैसे सुलझाया जाय, इस चिंता में डूबा हुआ हैरिस दीक्षितजी के पास गया।

दीक्षितजी बिस्तर पर लेटे थे। उनका मुह लाल था और उसपर मृत्यु की छाया पड रही थी। कप्तान को देखते ही उन्होने कहा, "कप्तानसाहब, मैं अब बचूगा नही। मुझे इस बात का बडा दुख है कि अपना अन्तिम समय जेल में बिताना पडा।"

"दीक्षितजी, मै सरकार की आज्ञा का उल्लघन करने में असमर्थ हू। अब सवाल यह है कि रानी साहब की पूजा का प्रबन्ध कैसे किया जाय ? आपके अच्छा होने तक वह भोजन नही करेंगी।"

"चिता मत कीजिए। मै यह काम अपने एक शिष्य के सिपुर्द कर दूगा।"

"आपके शिष्य से पूजा कराना रानीसाहब स्वीकार कर लेगी क्या ?'

"मेरा शिष्य ही मेरा उत्तराधिकारी है। हमारे यहा यह प्रथा है कि गुरु को प्राप्त होने वाली मान-मर्यादा शिष्य को भी प्राप्त होती है।"

हॅरिस के ऊपर से मानो भारी बोझ उतर गया।

ीक्षितजी का शिष्य पूजा कराने जाने लगा। एक दिन रानी के हाथ से पूजा कराता हुआ वह बोला, "माता, कल से मै पूजा कराने नही आ सकता।"

"क्यो, क्या दीक्षितजी की हालत चिताजनक है ?"

शिष्य हसकर बोला, "दीक्षितजी को कुछ भी नही हुआ, माताजी।"

तुम कौन हो ?"

"आपका सेवक रायण्णा।"

"रायण्णा !"

"माता, कित्तूर की मुक्ति का समय निकट आ गया है। सम्पगाव पर हमने कित्तूर का झडा फहरा दिया है। ड्डकीलिबोम्मण्णा और येडूर येल्लण्णा हमारी ओर आ गए है। मैं एक बडी सेना तैयार कर रहा हू। एक साथ अग्रेजो की सब छावनियो पर धावा बोलकर उनकी सेना का चारो तरफ से सामना किया जायगा।"

"तुम्हारे पास काफी सेना है, रायण्णा ?"

"काफी तो नही है, रानीजी। मै कल ही सुरपुर जाकर वहा के राजा की सहायता लेकर आऊगा। इस विजयादशमी के भीतर-ही-भीतर कित्तूर को आपके हाथो मे सौप दूगा।"

आनन्दातिरेक से चेन्नम्मा के मुह से आगे शब्द नही निकला। यह सोच कर कि किसी कठिन समय पर काम आयेगे, उन्होने कुछ आभूषण अपने पास रख छोडे थे। उन आभूषणो मे सोने की करधनी, बाजूबन्द, मोतियो का हार और हीरे की जजीरे, आदि थी। उन्हे उतारकर रायण्णा को देते हुए रानी ने कहा, "भवानी तुम्हारा मगल करे। जाओ, बेटा। मै एक बार अपनी आखो से कित्तूर को स्वतत्र देख लू। बस, इतना ही मुझे चाहिए। फिर मै शान्ति से

आखिरी सास ले सकूगी।"

× × ×

बैलहोगल मे यह खबर फैल गई कि दीक्षितजी का अन्तिम समय निकट आ गया है। इसलिए काशी से गगाजल लाने उनका पट्ट शिष्य जा रहा है। पर कप्तान हैरिस ने दीक्षितजी और उनके शिष्य पर पूरा भरोसा नही किया। उसे यह भी सदेह था कि दीक्षितजी की बीमारी शायद दिखावटी है।

जासूसो की लाई हुई खबर ने हैरिस के सदेह की पुष्टि की।

उन्होने बताया कि बैलहोगल से दीक्षितजी का जो शिष्य गया था, वह सगोल्ली मे भेस बदल कर घोडे पर चढकर चला गया।

तीन दिन के अन्दर रायण्णा के आदमियो ने नन्दगढ, सोमेश्वरगढ, प्रतापगढ और खानापुर के किलो को अपने अधीन करके कित्तूर का झडा उनपर फहरा दिया।

कप्तान हैरिस ने दीक्षितजी के ऊपर और भी कडा पहरा बैठाकर बैलहोगल के समाचारो की सूचना कमिश्नर चैपलिन को भेजी।

कमिश्नर की भेजी हुई आज्ञा को देखकर कप्तान हैरिस का सैनिक हृदय भी काप उठा और बैलहोगल के लोग अग्रेजो की असीम क्रूरता देखकर गुस्से मे पागल हो गए। चैपलिन की आज्ञा यह थी—

"दीक्षितजी और उनकी पत्नी को रानी चेन्नम्मा और उसके परिवार के सामने फासी पर लटका दो। सिर्फ चेन्नम्मा को बैलहोगल के किले मे रक्खो। बाकी लोगो को कुसुगल भेज दो।

आज्ञा का पालन किया गया।

दीक्षितजी ने प्राणदड निश्चल भक्ति के साथ स्वीकार किया। रोती तुल्जाबाई को अपने पास बुलाकर वह बोले, "सुख-दुख में तुमने मेरा हाथ नही छोडा। अब मेरे अन्तिम समय तुमको विचलित होना नही सोहता।"

"हम निरपराध है।" तुल्जाबाई ने अवरुद्ध कण्ठ से कहा।

"हा, कित्तूर की दृष्टि मे, परन्तु अग्रेजो की दृष्टि में हम भयकर विद्रोही हैं। दुखी मत होओ। कित्तूर के स्वतत्र होने तक हमारी आत्मा शात

नही होगी। हमें वार-वार जन्म लेकर कित्तूर के लिए लडना है और स्वतत्रता प्राप्त करनी है ।"

अगले दिन प्रात काल किले के भीतर के मैदान में दीक्षितजी और तुलजावाई के लिए फासी की टिकटिया तैयार की गईं। रानी चेन्नम्मा, रानी शिवलिंगव्वा और नीलव्वा को वुलाकर किले के जगलो के पास खडा कर दिया गया।

सैनिक दीक्षितजी की आखो पर पट्टी वाधने आए तो उन्होने मुस्कराते हुए कहा, "इसकी क्या जरूरत है ?"

दीक्षितजी ने रानी चेन्नम्मा की ओर देखकर कहा, "रानीजी, आप दुखी न हो। मै आज मरकर कल फिर जन्म लूगा। कित्तूर के स्वतत्र होने पर ही मुझे अन्तिम शाति प्राप्त होगी।"

इतना कहकर उन्होने जोर से नारा लगाया "कित्तूर की जय हो!"

रानी चेन्नम्मा उस दृश्य को नही देख सकी। उन्होने अपना मुह ढक लिया।

पलभर में दीक्षितजी और तुलजावाई के शव जमीन पर लोट गये।

हैरिस गभीर मुद्रा मे खडा रहा और उसने अपना टोप उतारकर सलामी देते हुए कहा, "अलविदा।"

उसकी आखो मे आसू थे।

उसी दिन शाम को हैरिस ने वीरव्वा, वालक देसाई, शिवलिंगव्वा और व्वा। को कुसुगल ले जाने के लिए डोलिया तैयार कराईं। रानी चेन्नम्मा [illegible]रव्वा और छोटे देसाई को गले लगाकर कहा, "वीरो पर जो वीतती है, स वे सकर सहते है। हम लोग अव स्वतत्र कित्तूर मे ही मिलेगे।"

वालक देसाई चेन्नम्मा के गले से लिपट गया। वोला, "मैं नही जाऊगा।"

उसे गोद मे उठाकर रानी वोली, "तू कित्तूर का स्वामी है। वीरव्वा, शिवलिंगव्वा और नीलव्वा माता की रक्षा की जिम्मेदारी तुझ पर है। वेटा, जाओ।"

"मुझे जाना ही पडेगा, मा ?"

"हा, वेटा।"

"मा तुम कव जाओगी ?"

"जल्दी ही। तुझे कित्तूर ले जाकर, सिंहासन पर विठाकर तेरा तिलक करूगी।"

वीरव्वा, शिवलिंगव्वा और वालक देसाई डोलियो में वैठकर चल दिए। रानी चेन्नमा अकेली रह गई। वह खडी कारागार के वातायन से दूर दिगत को देखती रही।

रायण्णा ने थैकरे साहब के कित्तूर मे प्रवेश के दिन से लेकर पाच वर्षों मे सन् १८२४ से १८२९ तक हुई घटनाए सुरपुर के राजा को सुनाकर प्रार्थना की, "मै आज आपके पास पाच सौ शिकारी धनुर्धरो तथा सेना और धन की सहायता मागने आया हू। कित्तूर की स्वतत्रता का प्रश्न हम कित्तूर की प्रजा के लिए जितना महत्वपूर्ण है, उतना ही आपके लिए भी है। कित्तूर अग्रेजो के अधीन रहा तो सारा दक्षिण भारत अग्रेजो की दासता के बधन मे जकड जायगा। स सकट-काल मे आप हमारी सहायता करके भारत की कीर्ति को बचाइए।"

"नायकजी, क्या आपके प्रयत्न मे सफलता मिलने की सभावना है?"

"सम्पगाव, खानापुर, नन्दगढ, सोमेश्वरगढ और प्रतापगढ हमारे हाथो मे आ गए है। आपकी सहायता मिलते ही हम हलियाल के किले को जीतकर धारवाड पर घेरा डाल देगे।"

सुरपुर के राजासाहब ने तत्क्षण कहा, "नायकजी, आप ठीक कहते है। यह युद्ध जैसे आपका है, वैसे ही हमारा भी है। आपकी सहायता करना हमारा कर्त्तव्य है।"

अपने अद्वितीय शूर धनुर्धर, धन तथा तलवार-बदूक देकर वह बोले, "शिवगुत्ती के राजासाहब मे मिलकर उनकी सहायता भी प्राप्त कर ... । मै भी आपकी तरफ से उनसे प्रार्थना करूगा।"

रायण्णा अपने यत्न में आशातीत सफलता प्राप्त करके बहुत प्रसन्न हुआ और शिवगुत्ती के राजासाहब से मिलने चल दिया।

शिवगुत्ती में भी रायण्णा का वैसा ही हार्दिक स्वागत हुआ। रायण्णा की बातें सुनकर शिवगुत्ती के राजासाहब बोले, "नायकजी, मै अपनी सारी सेना और सपत्ति आपके हाथो मे सौपने को तैयार हू, किन्तु मै एक परेशानी में पडा हुआ हू। ककर भरमनायक जगली सरदार पास के पहाड

मे घुसा हुआ है। वह समय समय पर यहा आकर हमारे राज्य पर टूट पडता है और लूटमार करके चला जाता है। हमारी रक्षक सेना यहा से हटते ही भरम फौरन शिवगुत्ती पर टूट पडेगा और उसपर कब्जा कर लेगा।"

"यह कवार भरम रहता कहा है ?"

"वह और उसके परिवार के लोग यहा से कोई चार मील पर कुमारगिरि पर रहते है।

रायण्णा अपने साथियो में से केवल जयवीर को अपने साथ लेकर घोडे को सरपट दौडाता हुआ कुमारगिरि पहुचा।

रायण्णा और जयवीर पहाड के नीचे एक नीम से अपने घोडो को बांधकर पहाड पर चढने लगे। बीच के पहाड पर उन्हें भरम का एक अनुयायी मिला। उसने उन्हें रोककर पूछा, "तुम कौन हो ? यहा क्या काम है ?"

"हम भरम से मिलने आए है। नायकजी से कहो कि कित्तूर से कोई आये है।"

"मेरे साथ आओ। मै तुम्हें सरदार के पास ले चलूगा।"

वह आदमी उन्हें नायक के पास ले गया।

भरमनायक शराव की बोतलो से घिरा बैठा था। वह नशे मे था और बीच-बीच में कच्चे मास के टुकडे चबाता जाता था। अपनी राक्षसी आखो से रायण्णा और जयवीर को देखकर गरजकर बोला, "तुम कौन हो ?"

"मेरा नाम रायण्णा है, इसका जयवीर। हम कित्तूर मे रहते है। अग्रेजो ने कित्तूर को अपने अधीन कर लिया है। हम उनकी गुलामी से कित्तूर को छुडाने का प्रयत्न कर रहे है। हम यह प्रार्थना करने आए है कि आप और आप के साथी हमारी मदद करें।"

"रायण्णा! जयवीर!—मेरी मदद चाहिए ? मैं कभी किसीकी मदद नही करता। जाओ, यहा से भाग जाओ।"

"भरमनायकजी, इस समय हमारा देश अग्नि-परीक्षा मे से गुजर रहा है। अब हम सबको एक होकर अग्रेजो को बाहर भगाना चाहिए, नही तो

सारा देश अग्रेजो के पैरो के नीचे कुचल जायगा।"

"भरमनायक कर्कश स्वर से चिल्लाया, "इनको वाहर निकाल ो।"

रायण्णा उद्विग्न होकर बोला, "सरदार, मैंने सुना था कि आप वडे वीर हो और आपके समान वीर भारत मे पैदा नही हुआ। पर देखता कि आप वीर नही हो, निरपराधियो को लूटकर पेट भरनेवाले डाकू हो।"

भरमनायक क्रोध से आग-ववूला हो गया। अचानक उठकर बोला, "भरमनायक को डाकू कहने वाला कोई जीता नही वचा, रायण्णा।"

"रायण्णा ने जो कुछ मागा, उसे नही कहनेवाला भी कभी जीता नही वचा, भरमनायक।"

"तू झगडा करने आया है ?"

"नही नायकजी, मै झगडा करने नही आया, पर तुम नही मानते हो तो मैं तुम्हारे साथ लडने को तैयार हू। पर एक शर्त है—तुम जीतो तो मुझे मार डालना। मैं जीता तो तुम और तुम्हारे साथी मेरे अधीन होकर मेरे कहे पर चलें।"

"मजूर।"

रायण्णा की तरफ से जयवीर और भरमनायक की तरफ से जातरनायक जय-पराजय के निर्णायक पच नियुक्त हुए।

रायण्णा की तलवार भरमनायक की तलवार से टकराई। एक घटे तक दोनों मे भीषण द्वन्द्व हुआ।

पर रायण्णा नही हारा, भरमनायक भी नही हारा। भरमनायक दैत्याकार शरीर के सामने रायण्णा वामन के समान मालूम पडता था।

युद्ध चलता रहा। अचानक भरमनायक ने अपनी तलवार से रायण्णा की छाती पर प्रहार किया। रायण्णा ने उस चोट से वचने का यत्न किया तो उसके वाये हाथ मे जोर का घाव हो गया और उसमे रक्त वहने लगा।

जयवीर को लगा कि रायण्णा की जीत होने की सभावना नही है। उसने रायण्णा को उत्साहित करते हुए धीरे-से कहा, "रायण्णा, तू मर गया तो रानी चेन्नम्मा जेल में ही सडती रहेंगी। कित्तूर अग्रेजो

की गुलामी में जकड़ा रहेगा ।"

इतना सुनना था कि रायण्णा ने जोर से हुकार की, "रानी चेन्नम्मा की जय ! जय भवानी ! जय भवानी !" और जयघोष करते हुए भरमनायक के ऊपर वह ऐसा टूटा कि उसको तलवार उठाने का भी मौका न दिया । प्रहार-पर-प्रहार किये । भरमनायक के होश सभालने से पहले ही रायण्णा की तलवार उसकी गरदन के आरपार हो गई ।

भरमनायक की देह जड से कटे पेड की तरह धड़ाम से भूमि पर गिर पड़ी ।

खोने को समय नही था । रायण्णा और भरमनायक की पलटन को साथ लेकर शिवगुत्ति और सुरपुर आया और वहा के राजाओ के धनुर्धरो तथा सिपाहियो को भी साथ लेकर सीधा हलियाल पहुचा ।

इतनी बडी सेना के साथ उसे आया देखकर नागरकट्टी, चेन्नबसप्पा, गजवीर और बालण्णा बहुत प्रसन्न हुए ।

नागरकट्टी धीरे-से आकर रायण्णा की पीठ पर हाथ रखकर बोला, "रायण्णा, तुमको एक बुरा समाचार सुनाना है । तुम अधीर न हो, इसलिए पहले से ही यह खबर दे रहा हू ।"

"रानीजी तो अच्छी तरह है ?"

"भवानी के अनुग्रह से रानीजी ठीक है । पर दीक्षितजी . गुरुजी "

"उनको क्या हुआ ?"

नागरकट्टी ने दीक्षितजी पर लगाया हुआ आरोप और उनको दिये गए मृत्युदड का हाल सुना दिया । सुनकर रायण्णा गभीरता से बोला, "वीरव्वा और छोटे देसाई को कुसुगल भेज दिया ?"

"जी हा ?"

रायण्णा कुछ सोचकर बोला, "तो अब हमें पहले कुसुगल पर घेरा डाल कर वीरव्वा माता को छुडाना चाहिए ।"

"रायण्णा, हलियाल पर घेरा डालने के लिए हमारी सारी सेना की आवश्यकता है ।"

"गुरुजी हमको छोडकर चले गए। पापियो ने तुलजाबाई को भी गोली से उडा दिया।"

इतना कहकर रायण्णा बच्चो की तरह बिलखने लगा। बच्चो की तरह सुबकते हुए बोला, "एक दिन हम सब गुरुजी के आगन मे कुश्ती लड रहे थे। माता तुलजाबाई भी खडी देख रही थी। गुरुजी मेरी एक पकड म आकर गिर पडे। माताजी की तरफ मुडकर बोले, 'देखा?' तुलजाबाई बोली, 'अपने बच्चो का खेल देखकर मुझे बडा आनन्द हो रहा है।' किसी दिन उनके घर की ओर चक्कर न लगाता तो माता आसू गिराती। मेरी गोद मे नारियल-चिउडा भरकर कहती, 'खूब खाओ और बलवान् बनो। हमारे शूरो को देखते ही शत्रुओ की छाती दहल जानी चाहिए।' हमारी वह माता अब कहा है? हमारे गुरुजी, पिता, देवता समान दीक्षितजी अब कहा है।"

"रायण्णा, अब यो दुखी होने का समय नही है। रानीजी तुम्हारी विजय पर भरोसा रखकर कारागार मे समय बिता रही है।"

रायण्णा ने उत्तेजित होकर कहा, "नागरकट्टी, मै गुरुजी को गोली से मारने वाले कप्तान हैरिस और चैपलिन को पकडकर उनकी छाती चीर कर गुरुजी और गुरुपत्नी का बदला लूगा।"

"कप्तान हैरिस बेचारा सरकार का नौकर है। उसका कुछ भी अप-राध नही है, रायण्णा! गुरुजी के गोली खाकर भूमि पर गिर पडने पर [illegible]रिस ने तो अपना टोप उतार लिया था, आसू गिराए थे और पूरे सम्मान [illegible] साथ गुरुजी का अतिम सस्कार कराया था।"

यह सुनकर रायण्णा कुछ देर चुप रहा। फिर बोला, "नागरकट्टी, अग्रेजो मे भी सब बुरे नही है।"

नागरकट्टी ने उत्तर दिया, "नही, भले सब जगह मिलते है।"

रायण्णा और उसके साथियों ने हलियाल के किले को जा घेरा। अंग्रेजो और रायण्णा के दलो मे जो भयंकर युद्ध हुआ, उसमे अंग्रेजो पर गाज गिरी। हलियाल के चारो ओर पाच मील तक रायण्णा के लोग फैले हुए थे। उन्होने अंग्रेजो को बाहर से किसी प्रकार की सहायता नही पहुचने दी।

चैपलिन ने यह सोचकर कि हलियाल हाथ मे आते ही रायण्णा कुसुगल पर धावा बोलेगा और वीरव्वा तथा छोटे देसाई को छुडा लेगा, उनको धारवाड भेज दिया।

रायण्णा ने यह निश्चय कर लिया था कि हलियाल के युद्ध मे अंग्रेजो का नामोनिशान मिटा देगा।

किले के अन्दर की अंग्रेजी सेना बाहर आने मे डरती थी। खाने की चीजे, पीने का पानी और कुछ भी, बाहर से किले के भीतर नही जा सकता था। नतीजा यह हुआ कि किले के भीतर के अंग्रेज सिपाही आपस मे लडने लगे। थोडे-थोडे पानी और एक-एक प्याला दूध के लिए आपस में मार-पीट होने लगी। सैनिको का नैतिक बल कम होता देखकर अंग्रेज सैनिक अफसर डर गए।

हलियाल के किले का पतन निकट ही जान पडता था। हलियाल के हाथ आते ही कित्तूर की स्वतंत्रता निश्चित थी।

किन्तु कित्तूर मे विभीषणो की अब भी कमी न थी। मल्लप्पाशेट्टी, वेंकटराय, शिवबसप्पा और महान्तव्वा के समाप्त हो जाने पर भी उनकी विषैली जडो से समय-समय पर अंकुर निकलते रहते थे।

सम्पगाव के मामलेदार कृष्णाराय के अनुयायी वेंकण्णागौडा, लिंगनगौडा और लक्कप्पा, ये तीनो रायण्णा की सेना में सम्मिलित होकर अवसर की ताक में थे।

हलियाल के घेरे के चौथे दिन जब रायण्णा कुछ दूरी पर एक

तालाब मे स्नान कर रहा था, इन तीनो ने उसको धोखे से पकड लिया और उसके मुह मे कपडा ठूस कर हाथ-पैर बाधकर उसे धारवाड भेज दिया। फिर उन्होने चेन्नवसप्पा से कहा, "रायण्णा येत्तिगुड्डा गया है। उसने कहा है कि तुम मुगुद जाकर उसकी राह देखो। इसी तरह गजवीर हुब्बल्ली जाकर वहा उसकी बाट जोहे। सेना हमारे पीछे-पीछे येत्तिगुड्डा जाय।"

इस प्रकार उन्होने सेना के तीन भाग कर दिए।

येत्तिगुड्डा, मुगुद और हुब्बल्ली मे अग्रेजी सेना अनुकूल स्थानो पर व्यूह बाधकर रायण्णा की सेना का सामना करने को तैयार खडी थी।

तीनो स्थानो मे अधेरे मे अग्रेजी सेना रायण्णा की सेनापर अचानक टूट पडी। चन्नवसप्पा, गजवीर और वालण्णा को अब पता चला कि उनके साथ धोखा हुआ, पर अब हो क्या सकता था।

कित्तूर की सेना पराजित हो गई। कित्तूर के वीरों के रक्त से पृथ्वी भीग गई थी।

अग्रेजो ने गजवीर, नागरकट्टी, चेन्नवसप्पा और वालण्णा को गिरफ्तार करके धारवाड भेज दिया।

अगले दिन धारवाड के बीच के चौक में पाच फासी की टिकटिया रक्खी गई। शाम को पाच बजे कित्तूर-वीरो को टिकटियो के पास लाकर बाध दिया।

महावीर रायण्णा निडर खडा था। उसके मुखपर परेशानी का चिह्न भी दिखाई नही देता था। उसने चारो ओर सिर घुमाकर देखा। उसके सामने अग्रेज सिपाहियो के पहरे मे वीरव्वा और छोटे देसाई खडे थे।

रायण्णा ने फासी के खभे को धक्का देकर उसे गिराने का प्रयत्न किया। अग्रेज सिपाहियो ने उसकी गरदन मे फासी का रस्सी डाल दी।

रायण्णा दोनो हाथ उठाकर वीरव्वा और छोटे देसाई को नमस्कार करके बोला, "चेन्नम्मा माता, मै तुम्हारे दर्शन किये बिना ही जा रहा हू। मुझे क्षमा करना। द्रोहियो ने धोखा दिया, नही तो इस समय कित्तूर की जजीरें टूट गई होती। गुरुदेव, तुलजाबाई, दीवान गुरुसिद्दप्पा, मित्र नागर-

पट्टी, चेन्नबनप्पा, गजवीर, बालण्णा, सबको प्रणाम !"

कुछ रुककर उसने पूरी शक्ति से कहा, "कित्तूर की जय हो ! रानी चेन्नम्मा की जय हो !"

इसके बाद कित्तूर के पाचो वीर फासी पर लटका दिए गए।

वीरव्वा ने इस भयकर दृश्य को देखकर अपनी कमर से कटार निकाली और छोटे देसाई की कमर मे भोककर अपनी छाती मे भी भोक ली। बोली "गुलामी के बन्धन मे जकडे कित्तूर मे जीना ठीक नही है।"

: २० :

कप्तान हैरिस ने रानी चेन्नम्मा से कारागार में जाकर सब हाल कह सुनाया। सुनकर रानी अविचलित रही। हैरिस को सिर झुकाये, आखों मे आसू भरे खडा देखकर उन्होने पूछा, "क्यो कप्तानसाहब, अब और क्या कहना है ? जो कहना हो, कह दीजिए। मेरा दिल तो पत्थर का हो गया है। सबकुछ सुन सकता है।"

"रानी साहब, मैंने नौकरी से त्याग-पत्र दे दिया है। मैंने चैपलिन साहब को लिख दिया है कि तुरन्त दूसरे आदमी को भेजकर मुझे छुट्टी दे दे।"

"क्यो ?"

"हमारे लोगो ने कित्तूर के सब वीरो को धोखे से गिरफ्तार ..."

"आगे कहो। रुक क्यो गए ?"

"फांसी दे दी।"

"फासी दे दी ? रायण्णा ..."

"हा, रायण्णा और उसके साथियो को धारवाड मे फासी दे दी। वीर रानी उस दृश्य को नही देख सकी। उन्होने छोटे देसाई के छुरी भोककर स्वय आत्महत्या करली।"

रानी चेन्नम्मा, जो अबतक अविचल बनी हुई थी, भूमि पर गिर पडी। उनकी चेतना लुप्त हो गई।

हैरिस ने फौरन जिले के डाक्टर को बुलवाया। डाक्टर ने रानी को देखकर कहा, "इनके जीने की आशा नही है।"

रानी चेनम्मा ने थोडी देर बाद आखे खोली। बोली, "सब चले गए। मैं अकेली जी रही हू। रायण्णा—रायण्णा ! ... मेरा दीपक ! वह भी बुझ गया। सब चले गए। हा, सब चले गए ! ... कित्तूर को प्राणो से अधिक प्यार करनेवाले सब गुलामी को लात मारकर चले गए। चेनम्मा अब किस सौभाग्य के लिए जी रही है ? ... कित्तूर के लिए ! भारतमा

के लिए! आज चेन्नम्मा अपने जीवन का भरतवाक्य[1] पढ रही है उसमें कल की घ्रुपद शुरू होगी। एक रायण्णा के स्थान मे सैकडो रायण्णा पैदा होगे। एक चेन्नम्मा की जगह सैकडो चेन्नम्मा पैदा होगी। कित्तूर व त काल तक गुलामी मे जकडा नही रह सकता। यह लडाई निरन्तर चलती रहेगी। जबतक भारत आजाद नही होगा, दुनिया को शाति नही मिलेगी। कित्तूर की—भारत की—जजीरो को तोडने के लिए चेन्नम्मा आज यह देह छोडकर फिर जन्म लेगी। कित्तूर की जय हो! कित्तूर के वीर अमर हो!"

कहते-कहते चेन्नम्मा की सास मद पड गई। उसकी आखे बद हो गई। कित्तूर की स्वतत्रता-देवी बैलहोगल के कारागार मे सदा के लिए सो गई।

उस दिन शनिवार था।

सोमवार को उनके शरीर को कलमठ मे समाधिस्थ कर दिया।

कप्तान हैरिस ने रानी चेन्नम्मा के ५१ वर्ष के जीवन के सम्मानार्थ ५१ तोपे छुडवाई।

उसके अगले दिन हैरिस ने धारवाड जाकर कमिश्नर को अपना त्याग-पत्र दे दिया और इग्लैड चला गया।

---

१ नाटक के अन्तिम श्लोक को 'भरतवाक्य' कहते है।

: २१ :

कित्तूर की राज्यलक्ष्मी की मत्यु-शैया पर की गई भविष्यनागी झूठ नही निकली।

सन् १८५७ मे रानी चेन्नम्मा ने झासी में वीर रानी लक्ष्मीबाई के रूप में देशको स्वतत्र करने के लिए युद्ध किया, लेकिन गुलामी की बेडिया नही कट सकी।

फिर आया उन्नीसवी शताब्दी की दूसरी दशाब्दी में गाधी-युग। गाधीजी ने राष्ट्रके हृदय मे अभूतपूर्व प्रेम भर दिया। सोता देश जाग उठा। अनेक उथल-पुथल हुए। अत मे सन् १९४२ मे एक स्वर से सार्वभौम ब्रिटिश सरकार को 'भारत छोडो' कहकर देश ने ललकारा। एक सौ अ ारह वर्ष पहले कित्तूर जैसे छोटे राज्यमें उत्पन्न हुई चिनगारी १९४२ मे सारे भारत में व्याप्त हो गई। उसने बल ज्वाला का रूप धारण कर लिया और सन १९४७ के अगस्त की १५वी तारीख के शुभ दिन भारत ने अग्रेजो की दासता से मुक्ति प्राप्त की।

लालकिले पर भारत का तिरगा झडा फहराने लगा और उसपर स्वर्ग मे से मानो चेन्नम्मा, दीक्षितजी, गुरुसिद्दप्पा और रायण्णा ने पुष्पवर्षा की।

*